हमारा मनोरंजक साहित्य

शिवालिक की घाटियों में (सचित्र)	श्री निधि	५)
सचित्र गृह-विनोद	अरुण, एम० ए०	८)
सचित्र व्यंग-विनोद	,, ,,	६॥)
गप्पों का खजाना (सचित्र)	,, ,,	१)
रेडियो नाटक (सचित्र)	हरिश्चन्द्र खन्ना	६)
पृथ्वी-परिक्रमा (सचित्र)	सेठ गोविन्ददास	१२)
रजवाड़ा (सचित्र)	देवेश दास	५)
चम्पारन में महात्मा गान्धी (सचित्र)	राजेन्द्रप्रसाद	५)
भारत का चित्रमय इतिहास	महावीर अधिकारी	६)
अजी सुनो (सचित्र हास्य कविताएँ)	गोपालप्रसाद व्यास	५)
मैंने कहा (सचित्र हास्य निबन्ध)	,, ,,	३)
केसर के फूल	मोहनकृष्ण दर, भूमिका ज. ला. नेहरू	२)
नरक का न्याय	मोहनसिंह सेंगर	२)
जीवन के मोड़	महावीर अधिकारी	३)
अमृत और विष	अरुण, एम० ए०	२।)
मृत्यु में जीवन	,, ,,	१)
स्वप्न-भंग	होमवती	२)
उन्माद	कमला देवी चौधरी	२॥)
यात्रा	,, ,,	३)
ऐन्टन चेखव	अनु० अरुण	१॥)
मैक्सिम गोर्की	,, ,,	३)
कला का पुरस्कार	पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'	३)
आदर्श भाषण-कला	यज्ञदत्त शर्मा	७॥)
आदर्श पत्र-लेखन	,, ,,	७॥)

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६

भोर की किरणें

(प्रागैतिहासिक उपन्यास)

लेखक
अरुण, एम. ए

पहली कड़ी

प्राचीन भारतीय इतिहास में एम. ए. करते समय ही मन में विचार था कि भारत के इतिहास-खण्डों को उपन्यासों के रूप में बांधूँगा। श्री राखालदास बनर्जी और श्री क० मा० मुन्शी के ऐतिहासिक उपन्यास पढ़कर यह विचार और दृढ़ हो गया। मैंने सिन्धु घाटी की सभ्यता पर सामग्री एकत्र करनी आरम्भ कर दी, दो तीन अध्याय लिख डाले तथा एक एकांकी भी प्रकाशित कराया।

उन्हीं दिनों जीव विज्ञान की एक पुस्तक पढ़कर बच्चों के लिये मनुष्य के विकास को सुगमता से सुझाने के लिये जोश चढ़ा और 'मनुष्य कैसे पैदा हुआ' प्रकाशित हुई। तभी विचार यह हुआ कि ऐतिहासिक उपन्यासों की पहली कड़ी भारत में मनुष्य के पूर्वजों की होनी चाहिये।

उपन्यास लिखना आरम्भ हुआ। इसमें मुझे टार्जन के विख्यात लेखक एडगर राइस बरोज़ की पुस्तक Eternal Lover से बहुत सहायता मिली। उनका मैं हृदय से आभारी हूँ।

उपन्यास की रही प्रति पूरी करके अनेक साहित्यिक बन्धुओं को दिखाई। कई से प्रोत्साहन मिला। लेकिन एक ने पाण्डुलिपि ही गायब कर दी। खैर, दुबारा साफ करके लिखना था ही। समय एक मास के स्थान पर एक वर्ष लग गया।

कुछ इतिहास के विषय में भी—

मानव की सर्वप्रथम उत्पत्ति भारत में हुई, या अफ्रीका में, या दोनों जगह एक साथ— इसमें मतभेद है, पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि प्राचीनतम मानव के अवशेष भारत में पाये जाते हैं।

मानव ने परिस्थितियों के अनुसार अपना जीवन बनाया। पर्वत में रहने वालों ने गुहाओं को निवासस्थान बनाया, समतल भूमि वाले पशुओं को पालने लगे तथा अर्धविकसित झोंपड़ी बनाने लगे और झील के तट वाले पशु-शत्रुओं के भय से झील के मध्य लकड़ी के मकान बसाने लगे। इन तीनों प्रकार का रहन सहन अब भी कुछ स्थानों में पाया जाता है।

इस उपन्यास में प्रागैतिहासिक सभ्यता के इन तीनों अंगों के रहन सहन पर पूर्ण प्रकाश पड़ा है।

—अरुण

भोर की किरणें

उस समय के युग का अभिशाप था, जिसकी आहट पाकर मीलों दूर तक जंगल खाली हो जाता था। गैण्डे के भाई की खाल तो काकू की गुहा में आज तक लटक रही है। आज ऊ, कटार-दन्ती चीते, की शामत आई है क्योंकि मातुल ने कहा है कि वह काकू के साथ रहना तभी स्वीकार करेगी जब वह ऊ को मार कर अपने को पूरी जाति का सर्वश्रेष्ठ वीर प्रमाणित करेगा और उसका सिर लाकर मातुल के पैरों में रखेगा। इस पिछली गई अंधियारी में ही तो जब वे सागर के किनारे परस्पर हाथ बाँधे घूम रहे थे, मातुल ने कहा था कि वह उसकी गुहा में तब तक नहीं आ सकती जब तक उसकी कमर में ऊ की खाल न लटकती हो। मातुल ने कहा था, 'मातुल अपने युवक प्रेमी को बहुत प्यार करती है। लेकिन यदि इस लम्बे जीवन में प्रेम उसके साथ चलेगा तो साथ में मान और शान भी होनी चाहिये। मातुल जानती है कि नानू का बेटा काकू जाति का सबसे बड़ा शिकारी है।' उसने अपने हाथ से उस युवक दैत्य के बालों की लटों को उसके माथे से पीछे हटाई। फिर कहना जारी रखा, 'मैं काकू पर बहुत गर्व करती हूँ। लेकिन अपने गालों पर दाढ़ी उगने से पहले वह अकेले ऊ को मार डालेगा तो सारे संसार में उसका सिक्का बैठ जायगा।'

युवक को अब तक मातुल की मीठी आवाज़ सुनाई दे रही थी। अपने माथे पर उसका सहलाना अब तक सजीव लगता था। इन विचारों ने ही उसे तड़के जंगल में भेज दिया था, जब कि रात के शिकार के जानवर भी अभी तक नहीं सोये थे। वह अपनी धुन में मस्त जंगल के ऊबड़ खाबड़ रास्ते पर बढ़ता चला जा रहा था। प्राचीन काल का विशाल जंगल था। बड़े ऊँचे ऊँचे पेड़ थे। नीचे हर तरह की झाड़ियाँ उगी हुई थीं। राह का नामनिशान नहीं था। अपने तेज़ मस्तिष्क तथा इन्द्रियों के आधार पर ही काकू उस अमित्र जंगल में बढ़ रहा था। वह आगे बढ़ता गया और गैण्डे की गन्ध तीव्रतर होती गई। कुछ क्षण बाद उसके सामने भारी भरकम गैण्डे की भीषण आकृति स्पष्ट हो गई।

गैण्डा एक छोटे मैदान में खड़ा था। मैदान में सीने तक की घास लहरा रही थी। यह निश्चय था कि यदि उसका मुख काकू की ओर न होता तो उसे काकू की उपस्थिति का भान न होता क्योंकि अपने बड़े शरीर की तुलना में उसकी सुनने तथा सूंघने की शक्ति बहुत कम थी। वैसे भी काकू हवा के विरुद्ध जा रहा था इसलिये सूंघने का कुछ सवाल ही नहीं उठता था। और आदमी जैसी हल्की चाल वाले की पगध्वनि सुनना उसके लिये बिलकुल असम्भव था।

गैण्डे की आदत बिलकुल अपने वर्तमान समय के प्रतिरूप की तरह भयंकर थी। जैसे ही उसकी छोटी रक्तमयी आंखों ने काकू को देखा वह फुंकार छोड़ कर उसके पीछे भागा। इतना विशाल तथा भारी शरीर होने पर भी उसकी चाल बहुत तेज थी और यदि काकू के स्थान पर कोई अन्य होता तो वह समाप्त हो गया होता।

काकू बहुत फुर्तीला था। वह मुड़ा और पास के पेड़ की ओर भाग लिया। वह बिल्ली के समान तेजी से पेड़ पर चढ़ गया। टूटी शाखाओं की गाँठें उसके लिये सीढ़ियों का काम दे रही थीं। वह इतनी तेजी से चढ़ा कि पता नहीं लगता था कब उसकी उंगलियों ने उन गाँठों को छुआ।

काकू के गले में उसका पत्थर की नोक लगा भाला चमड़े की पट्टी से लटक रहा था। कमर में पत्थर का हथौड़ा और पत्थर का चाकू लटक रहा था। फिर भी उनके कारण चढ़ने में उसे कोई कठिनाई नहीं हुई। पचास फीट चढ़ने पर भी उसने साँस नहीं लिया क्योंकि वह जानता था कि गैण्डा अब क्या करेगा। वह फुर्ती से एक डाल पर चला गया जिससे पास खड़े दूसरे पेड़ की डाल मिलती थी। वह दूसरे पेड़ पर कूद गया। तभी गैण्डा सिर नीचा किये लपकता हुआ आया और उसने पेड़ में अपनी पूरी शक्ति से टक्कर दी। भयानक आवाज से धरती काँप गई। लकड़ियों की छेपटियाँ इधर उधर बिखराता हुआ पेड़ टूट कर दूसरे पेड़ों में उलझता तथा अपने नीचे छोटे पेड़ों और झाड़ियों को दबाता जमीन पर आ पड़ा।

काकू ने दूसरे पेड़ की डाल पर बैठ कर गैण्डे को मुँह चिढ़ाया और पेड़ों ही पेड़ों पर से आगे बढ़ लिया। कुछ दूर निकल जाने पर वह फिर ज़मीन पर उतर आया और भीषण कटार-दन्ती चीते की मांद की ओर बढ़ा।

पेड़ों पर से जिनके नीचे होकर वह आदिम मनुष्य जा रहा था उलझी भौंहों के नीचे से छोटी आँखें उसे देख रही थीं। दाँत बाहर निकाले हुए पेड़ पर चढ़े एप उसे गुर्रा कर डरा रहे थे। काकू ने उन बड़े जंगली जानवरों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जो चारों ओर से उसे घेरे हुए थे। वह जानता था कि एप-मनुष्यों का काम ही बन्दर-भभकी दिखाना है, और यदि कोई इन्हें छेड़े नहीं तो वे कुछ नहीं कहते। वह यह भी जानता था कि यदि किसी ने इनके गुर्राने से डर कर भाले से इन्हें भगाने का प्रयत्न किया तो कम से कम दस उस पर टूट पड़ेंगे और फिर तेज़ से तेज़ मनुष्य की भी मृत्यु निश्चित है।

चाहे एप भयावने और शत्रु लगते हों पर वास्तव में गुफा-निवासी उन्हें अपना मित्र समझता था क्योंकि बनावट और देह की समानता के कारण इन दोनों प्राणियों में एक प्रकार का नाता कायम हो चुका था। बीते युग में जब पृथ्वी युवा थी और उसका वक्ष लाखों प्रकार के भीषण मांसभक्षी रैपटाइलों से भरा पड़ा था, समान खतरे ने इन दोनों को पास पास ला दिया था। प्राण के भय ने दोनों को पेड़ों की घनी पत्तियों में शरण लेने को मजबूर कर दिया था। तभी से दोनों में एक प्रकार की सन्धि चली आती थी। ये ही दोनों थे जिन्होंने बोली की खोज की थी चाहे वह कितनी ही थोड़ी क्यों न हो। दोनों एक दूसरे की बोली समझते थे। इस समय एप नीचे जा रहे मनुष्य को धमका रहे थे। लेकिन यदि कोई खतरा होता तो वे ही उसे चेतावनी भी दे देते। इस प्रकार वे मनुष्य का उधार उतारते थे जो पृथ्वी से उनके शत्रुओं का संहार करने में लगा हुआ था।

समय समय पर घने बालों से ढके एप बन्दरों से ऊ के बारे में पूछता हुआ काकू आगे चलता गया। हर बार का उत्तर उसे यह विश्वास दिला देता कि

अब वह मनुष्य-भक्षी से दूर नहीं है और सूरज के अपनी अंधेरी गुफा में घुसने से पहले ही उसे पा लेगा।

ऐसा ही हुआ। वह घनी वनस्पति से निकल चुका था और पुराने ज़माने की ज्वालामुखी के निकट आ गया था जब उसकी सजग घ्राणशक्ति में हवा के साथ ऊ की तेज़ गंध आई। इस जगह आस पास कोई छिपने का स्थान नहीं था। छोटी छोटी घास खड़ी थी। इधर उधर एक लम्बा फर्न पेड़ अपनी चोटी १०० फीट उठाये खड़ा था। लेकिन काकू को छिपने की इच्छा भी नहीं थी। झाड़ी जो उसे ऊ की नज़रों से छिपा देती, उसे भी ऊ को नहीं देखने देती। यह वह जानता था कि कटार-दन्ती चीता उससे भाग नहीं जायगा, यह ऊ की आदत नहीं है। फिर भी वह हाथी-घास में यकायक ऊ के सामने नहीं पड़ना चाहता था।

वह वड़ी पहाड़ी के धीरे धीरे पास होता जा रहा था। वैसे ही ऊ की गन्ध भी तेज़ होती जा रही थी। सामने ही पहाड़ी में कई गुफाओं के मुंह दिखाई दे रहे थे। इनमें से किसी एक में ऊ आराम कर रहा होगा।

पचास कदम आगे चलने पर घास बिल्कुल ही समाप्त हो गई थी। कहीं कहीं पहाड और लुढ़के पत्थरों के बीच में जमा हुई मिट्टी में घास की पत्तियां लहरा रही थी। इस साफ ज़मीन पर आते ही काकू ने चैन की सांस ली। छोटी घास भी वडी घनी थी और आपस में उलझी हुई थी। उसमें ऊ का सामना करना खतरे का काम था।

काकू ने दूर से ही गुफाओं को ध्यान से देखना शुरू किया। चौथी गुफा के सामने हड्डियों का एक बड़ा ढेर लग रहा था जो काकू को भास कराने को काफी था कि उसका जानी दुश्मन इस गुफा के अन्दर है। तभी गुफा के अन्दर से एक रक्त जमा देने वाली दहाड़ सुनाई दी और काकू ने दो पीले आग के चमकते गोलों को गुफा के अंधियारे में से अपने को घूरते देखा।

एक पल बाद वह शाही शक्तिशाली जानवर स्वयं भी गुफा से बाहर निकल आया। पूँछ को इधर से उधर पटकता हुआ वह उस मूर्ख प्राणी की ओर देखने लगा जिसने अपनी मौत के घर आने का साहस किया था। वह अपने नेत्रों को बिल्कुल भी नहीं झपक रहा था। उसका शरीर एक पूरे युवक के बराबर था जिसके पीले रंग के ऊपर काली धारियाँ पड़ी हुई थीं। चीते का पेट और सीना बिल्कुल हिम-श्वेत था।

काकू को आगे बढ़ता देख उसका ऊपरी होंठ पीछे को हटा और अठारह इन्च लम्बे उसके डरावने दांत जो ऊपरी जबाड़े के दोनों ओर स्थित थे दिखाई देने लगे। उसके गले में से फिर एक दहाड़ निकली जिसने मीलों तक भयभीत जंगल को शान्त कर दिया।

शिकारी ने अपने चाकू को कमर से निकाल हर, सफेद दांतों के बीच में कस कर मुँह में दाब लिया जहाँ से वह फौरन काम में आ सके। बायें हाथ में उसने अपना भाला संभाल लिया और दाहिने हाथ में हथौड़ा ले लिया जो दूर और पास दोनों जगह से आक्रमण करने के लिये बहुत उपयुक्त था।

ऊ धीरे धीरे उसकी ओर बढ़ रहा था। उसके जबाड़ों से लार टपक रही थी। उसकी पीली आँखें रक्त बरसा रही थीं। यह अदना चुहिया सा आदमी उसके सामने आने की जुर्रत कर रहा था— जो उस समय का काल था, जंगल का शैतान था और आदमियों तथा मैमथों को मार कर खाने वाला था।

काकू के मुख से निकला— 'मातुल के लिये', क्योंकि चीता उछलने वाला था।

जैसे ही वह मांसपेशियों और हड्डियों का ढेर तड़प कर उछला वैसे ही काकू ने अपनी पूरी शक्ति से हथौड़ा घुमा कर छोड़ दिया जो चीते के, छलांग के बीच, आँखों के मध्य बारूद से छुटी गोली के समान जाकर लगा। साथ ही काकू बिल्ली के समान फुर्ती से छलांग मार कर एक ओर हो गया। चीते का

शरीर ज़मीन पर उस स्थान पर आ कर पड़ा जहाँ दो पल पहले मनुष्य खड़ा था।

जानवर के ज़मीन छूते ही गुफानिवासी ने अपनी पूरी मछलियां चमकाते हुए अपना भारी भाला उसके कन्धे के अन्दर ठूंस दिया। ऊ दर्द और क्रोध में चिंघाड़ता पैरों पर खड़ा हो गया। उसकी दर्दनाक चीखों से ज़मीन काँप गई और वायु थर्रा उठी। दूर दूर तक भीषण जंगल के जंगली जानवर भय से काँपते हुए अपने घरों की ओर भाग लिये। वे मुड़ मुड़ कर पीछे की ओर देखते जा रहे थे जहाँ से वह भयावनी आवाज़ आ रही थी।

पूरा जबाड़ा खोले और पंजे फैलाये चीता अपने विपक्षी की ओर मुड़ा जो अब भी अपने हथियार की मूठ पकड़े खड़ा था। जैसे ही पशु मुड़ा वैसे ही भाला भी मुड़ा और चाकू भी तूफान में उड़ती शाखा के पत्ते के समान फेंक दिया गया। इधर उधर चिल्लाता हुआ वह भीषण पशु छलांगें लगा रहा था पर चाकू उसके कन्धे के पीछे भाले को पकड़े लटका उसके पंजों की मार से बाहर था। धीरे धीरे ऊ के प्रयास धीमे होते गये। वह पेट के बल लेट गया। सावधानी से उसने अपना विशाल पंजा चुभते भाले की ओर फैलाया।

इसी बीच आदमी अपने शत्रु को तरह तरह के नाम दे रहा था और भाले को अधिक से अधिक चीते के अन्दर घुमा रहा था क्योंकि वह जानता था कि यदि एक बार भी भाला पंजे की पकड़ाई में आ गया तो उसके बचने की आशा सौ में से एक होगी। उसने देख लिया था कि रक्त के बहने से ऊ कमज़ोर होता जा रहा था। फिर भी बहुत शक्ति बाकी थी। भाले को दिल के छेद डालने से पहले कुछ नहीं कहा जा सकता था।

आखिर पशु सफल हुआ। पंजे ने भाले को पकड़ लिया। कड़ी लकड़ी फौलादी नसों के बीच में आकर मुड़ गई और आवाज़ करती हुई टूट गई। तभी कटार-दन्ती चीता उठ खड़ा हुआ और अपने विपक्षी पर झपटा जो मुख में चाकू हाथ में लेकर उसके स्वागत के लिये खड़ा था। दोनों एक दूसरे को

लिये ज़मीन पर जा पड़े। चाकू बार बार पशु की सफेद छाती में घुस रहा था। पशु बिल्कुल क्रोध का प्रतिरूप बना हुआ था।

यह पता नहीं किस भाग्य का फल था कि दहाड़ते पशु के दांतों तथा पंजों ने एक बार भी मानव को नहीं छुआ। पशु ने एक अन्तिम प्रयास किया और फिर हमेशा के लिये शान्त हो गया।

काकू कठिनाई से चीते के विशाल शरीर के नीचे से निकल पाया। अपनी उछल कूद में चीते ने अपने आप ही भाले का फल अपने हृदय तक पहुँचा दिया था। आदमी अपने पैरों पर कूद कर खड़ा हो गया और उसने चाकू से चीते का गला काट दिया। जैसे ही रक्त बह निकला, वह अपने विपक्षी के चारों ओर चाकू और हथौड़े को घुमाता हुआ नाचने लगा। उसके मुख से चीते के स्वर की नकल निकल रही थी। कभी कभी वह अपना विजय-नाद भी गरज उठता था।

आस पास की पहाड़ियों तथा जंगल से उसके भीषण प्रतिद्वन्द्वियों के स्वर आने शुरू हो गये थे। गुफा के भालुओं की गुर्राहट, शेर की गरज, लकड़बग्घों की चिल्लाहट, हाथियों की चिंघाड़, भारी भैंसे की आवाज़ तथा दूर दलदल से पानी के जानवरों की सिसकारी।

विजय का नृत्य समाप्त करने के उपरान्त आदमी काम में जुट गया। उसने पशु के मृत शरीर में से टूटा हुआ भाला निकाला और चीते की दृढ़ नसों को निकाल कर उसके दोनों भागों को मज़बूती से बांध दिया। वह जानता था कि इस शत्रु जंगल में वह बिना भाले के एक मिनट भी जीवित नहीं रह सकता है।

हथियार ठीक कर लेने के बाद उसने चीते का सिर काटना आरम्भ किया। सिर को ले जा कर ही तो उसे अपनी प्रेयसी को दिखाना था। हथौड़े से चाकू को ठोक ठोक कर उसने अपना कार्य प्रारंभ किया जिसमें उसे लगभग आधा घण्टा लग गया। सिर को हाथ में लेकर उसने फिर हवा में छलांग मारी और

अपना विजय-नाद गरज उठा। सबको पता चल जाना चाहिये कि नातू के बेटे काकू से बड़ा शिकारी इस दुनिया में कोई नहीं हुआ है।

उसका भयानक नाद वायु में गूंज ही रहा था कि प्रकृति विलक्षण रूप से शान्त हो गई। दूर तक पेड के पत्ते हिलने का भी स्वर नहीं सुनाई देता था। जलते सूर्य के चारों ओर एक प्रकार का पीला अँधियारा छा गया था। सहसा जमीन हिली और कांपी। पृथ्वी के वक्ष से अजीब स्वर आते सुनाई दिये। जैसे लाखों चीते एक साथ गरज रहे हों।

काकू ने अपनी सब इन्द्रियों को सजग कर चारों ओर झांका। आखिर कौन सा ऐसा जानवर है जिसके कारण पृथ्वी कांप रही है और भयभीत होकर इस प्रकार की आवाज कर रही है। ऊपर आकाश भी रोता लगता था और सूर्य भयभीत होकर छिप गया था।

इधर उधर सब पशु-प्राणी डर के मारे भागे जा रहे थे। भय की स्वाभाविक प्रवृत्ति से काकू ने अपने हथियार इकट्ठे किये और पास की ऊ की मांद में शरण लेने के लिये भागा। जल्दी जल्दी में ऊ का सिर वहीं छूट गया। वह गुफा के अन्दर पहुँचा ही था कि भूमि स्थान स्थान पर से फटनी आरम्भ हो गई, पत्थर टूट कर गिरने लगे और इस सब भयानक वर्षा में गुफा का मुख ऊपर से गिरते एक भारी पत्थर से बन्द हो गया। गुफा के हाथ न सूझने वाले अंधियारे में नातू का बेटा काकू बेसुध हो गया।

२

सवेरा हो चुका था जब मातुल की नींद खुली। विस्तृत सागर पर सूर्य की किरणें नाच रही थीं पर उनकी गुफा में अब भी अंधेरा था। पक्षियों के पंखों को पहाड़ की पथरीली भूमि पर फैला कर वह लेटी हुई थी। उसकी बगल में एक नारी लेट रही थी जिसकी अवस्था काफी हो चुकी थी पर जो अब भी सुन्दर दिखाई देती थी। वह मातुल की माँ कातुल थी। उनके सम्मुख गुफा के द्वार पर दो पुरुष पड़े थे। एक उसके पिता भू थे तथा दूसरा भाई चा। कातुल ने भी अपने नेत्र खोले और अपने नग्न सांवले हाथों को सिर के ऊपर फैलाया। उसने मातुल की ओर करवट ली। बेटी को ओर देख कर वह मुस्कराई। उत्तर में मातुल भी मुस्कराई। दोनों के सुन्दर शक्तिशाली श्वेत दांत उस अंधेरे में चमक उठे।

'कल तो मर गये थे।' कातुल ने सांस छोड़कर कहा।

'मुझे प्रकाश को देख कर जितनी प्रसन्नता आज हुई है, उतनी कभी नहीं हुई।' मातुल उठ बैठी। 'कल के भूमि-कम्पन ने तो मुझे इतना डरा दिया कि सारी रात मैं निश्चिन्त नींद नहीं ले सकी। रात भर मुझे तरह तरह के सपने आते रहे।'

भू की जगने की बारी थी। उसने नेत्र खोल कर नारियों की ओर देखा। 'मुझे भी रात बड़ा भयावना सपना आया। मुझे लगा कि पृथ्वी फिर कांप रही है। पहाड़ियां ज़मीन में धंस गई हैं तथा यह व्याकुल सागर भूमि पर चढ़ आया है। हमारा नाम निशान भी मिट गया है। यह जगह रहने के लिये अच्छी नहीं है। मैं अभी जाकर सरदार नानू से कहता हूँ कि हमारे गिरोह को किसी अन्य स्थान पर चल कर रहना चाहिए।'

मातुल उठ कर दोनों आदमियों को लांघती हुई गुफा के द्वार पर आ खड़ी हुई। उसके नेत्रों के सामने प्रतिदिन का जाना पहचाना दृश्य फैला हुआ था।

फिर भी वह आज नया सा लग रहा था। उसके पैरों के नीचे वाली ज़मीन थी जहाँ पत्थर के ढोकों के अतिरिक्त हरियाली का नामनिशान भी नहीं था। इस भूमि में एक चौकोर हिस्सा बिल्कुल साफ था जहाँ से पत्थर के टुकड़े भी हटा दिये गये थे। कुछ दूरी पर शीतोष्ण जंगल खड़ा था। बड़े विशाल सुई के समान पत्तियों वाले पेड़ अपना सौ सौ फीट ऊँचा सिर उठाये खड़े थे। सूर्य निकल चुका था यह पश्चिम में लहराते सागर की उज्ज्वल लहरों में दिखाई दे रहा था। लेकिन अभी वह मातुल की दृष्टि से पहाड़ की ओट में छिपा था— उस पहाड़ की ओट में जिसके पश्चिमी ढलान पर गुफायें बनी हुई थीं। वातावरण में एक प्रकार की उमस थी। आकाश में पंख वाले प्राणियों ने चक्कर काटना प्रारम्भ कर दिया था और जीवों की अधिकता के कारण ऊपर से सागर की सतह काली दिखाई देती थी।

मातुल ने अपनी भौंहें सिकोड़ी। वह कुछ याद करना चाह रही थी जो उसे याद नहीं आ रहा था। उसे यह भी ध्यान नहीं था कि जिसे वह सोच रही है वह स्वप्न की घटना है या तथ्य है। उसने झुंझला कर सिर हिलाया।

उसने दृष्टि अपनी ओर डाली। कुचाग्र तने खड़े थे। सुन्दर वक्ष आलोड़ित हो रहा था। कमर में उसने बारहसिंघे की खाल बाँध रखी थी। पैरों में गैंडे की खाल के चप्पल थे जिन्हें जंगली भैंसे की नसों के फीते बनाकर बाँध रखे थे। मातुल ने हाथ फिरा कर अपने कटिवस्त्र को ठीक किया। फिर अपने सिर पर हाथ फेरा। उसके लम्बे काले रेशमी बाल जो घुटनों तक लटक रहे थे, एक फीते से माथे के पीछे की ओर बँधे थे। उसे ध्यान हो आया। यह फीता काकू ने उसे बनाकर दिया था। किस चीज़ का यह उसे पता नहीं। न उसके इतना पूछने पर भी काकू ने उसे बताया था। उसकी इतनी अवस्था हो गई थी और आश्चर्य की बात यह थी कि उसने अभी तक साँप नहीं देखा था, नहीं तो वह फौरन पहचान जाती कि उसके बालों को बाँधने वाली एक चितकबरे साँप की सूखी खाल है।

बालों पर हाथ फेरते फेरते वह फिर गुफा के अन्दर घुस आई। बगल की दीवार में गाड़ी लकड़ी की एक खूँटी से उसने रंग-बिरंगे सुन्दर पंख उठा लिये।

इन पंखों को उसने फीते में खोंस कर अपने मोहक मुखड़े के चारों ओर सजा लिये।

गुफा के अन्य रहने वाले भी जाग गये थे। गुफा के बाहरी भाग में प्रौढ़ा कुछ सूखी घास और चकमक पत्थर लिये आग जलाने की तैयारी कर रही थी। भू और चा गुफा के बाहर खड़े हो कर प्रातः का शीतल सुखद समीर अपने फेफड़ों में खींच रहे थे। अन्दर से एक मशक उठा कर मातुल भी बाहर निकल आई। तीनों पहाड़ी से नीचे उतरने लगे।

पहाड़ी की अन्य गुफाओं से स्त्री-पुरुष नीचे की ओर उतर रहे थे। आपस में मुलाकात होने पर सब एक दूसरे का मुस्करा तथा बोल कर अभिवादन कर रहे थे। हर व्यक्ति के मुख से कल के भयानक भूचाल के विषय में कुछ न कुछ वाक्य निकल रहे थे।

भू और चा जंगल की ओर चले गये। वे नित्यकर्म से निवृत्त होने गये थे। मातुल मुड़ कर एक स्रोत पर जा पहुंची जहाँ ठंडा और स्वच्छ जल पहाड़ी से फूट रहा था। वहां अन्य युवतियाँ भी थीं जो पशुओं की खालों की बनाई मशकों में पानी भर रही थीं। उनमें रा थी गिरोह के प्रसिद्ध भाला बनाने वाले कोर की लड़की; तथा ऊना थी, गिरोह के सरदार नानू की लड़की और मातुल के प्रेमी काकू की बहन। इसी प्रकार गिरोह की छः लड़कियाँ और थीं। सब की सब तन्वंगी थीं और आपस में ठिठोली करती पानी भर रही थीं।

मातुल को देख कर ऊना ने उसकी ओर इशारा किया, 'कल के भू-कंपन का इस पर तो कुछ असर पड़ा दीखता नहीं।'

रा ने मुँह बिचकाया, 'हाँ देखो तो, कैसा शृंगार करके आई है।'

मातुल के कानों में रा के कथन की भनक पड़ी। उसकी कुछ समझ में नहीं आया। ऊना उसकी सहेली थी। उससे पूछा, 'क्यों, क्या बात है?'

ऊना— 'कुछ नहीं। यह बता तू कल सन्ध्या के भू-कंपन से डरी थी या नहीं?'

'क्यों न डरी थी? मुझे तो रात भर बुरे बुरे सपने आते रहे। कभी देखती कि एक बड़ा मैंमथ मेरे पीछे चला आ रहा है जिसके पदचाप से धरती काँप रही है। कभी सामने का पहाड़ चलता दिखाई देता था। एक सपने में तो मैंने देखा कि मैं किसी दूसरे देश में पहुँच गई हूँ। वहाँ स्त्री पुरुष थे पर बिल्कुल काले।'

'काले!' सब युवतियों ने एक साथ जिज्ञासा की।

'हाँ काले। वे बिल्कुल नंगे थे। उनके हाथ में कोई हथियार नहीं था। जहाँ कोई जंगली पशु उन्हें मिल जाता था, वे दौड़ कर पेड़ पर चढ़ जाते थे! ......'

'वहाँ तू अकेली गई थी या काकू भी तेरे साथ था।' रा ने ईर्ष्या भरे शब्दों में पूछा।

मातुल ने घूर कर रा को देखा। उसका वक्ष कुछ आन्दोलित हो उठा। कुचाग्र और तन गये।

ऊना ने बीच बचाव किया। 'कल रात काकू घर वापिस नहीं आया।'

मातुल ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसे देखा, 'क्यों घर नहीं लौटा? वह कहाँ गया हुआ था?'

'इसे तुझसे अधिक कौन जान सकता है मातुल? तूने ही तो उससे कहा था कि तू उसकी साथिन तब बनेगी जब वह ऊ का सिर लाकर तेरी गुहा के सामने लटकायगा।'

'मैंने कहा तो था,' मातुल ने मान लिया। 'पर मैंने मजाक में कहा था। सब जानते हैं कि मनुष्य और मैंमथ के हत्यारे कटार-दन्ती चीते को कोई व्यक्ति अकेला नहीं मार सकता है। उसने मुझसे कहा था कि मैं जाऊँगा पर मैं उसे भी हँसी समझी थी।'

उसने 'मनुष्य' और 'मैंमथ' नहीं कहा था। उसने उन दोनों के लिये अपनी जाति के शब्द प्रयोग किये थे। उस समय भाषा कुछ शब्दों तक सीमित थी जो आज भी संसार में एप-बन्दरों की बोली के रूप में बचे हुए हैं।

अपने कुछ शब्दों को वह कोमल बाहों को घुमाकर तथा नेत्रों से इशारा देक पूरा करती थी जैसा उस जाति के अन्य मनुष्य करते थे। उनके पूर्वज बिल्कुल बोलना नहीं जानते थे। भाषा धीरे धीरे मनुष्य के अधिकार में है। उनको कुछ प्रतिदिन के शब्दों को बोलना ही आया था। यहां पर बोलचाल सर्वनाम, क्रिया आदि लगाकर पूरी कर दी गई है जैसे ह विभिन्न इशारों से पूरी करते थे।

काकू का न आना सुन कर रा व्याकुल हो उठी। 'तूने उसे म ऊ का सिर चाहिये था तो चा को भेज देती।'

मातुल ने क्रोधित हो मुक्का दिखाया।

रा फिर बोली, 'काकू लौट आये तो मैं कहूँगी कि मैं तेरा काकू तेरे लायक नहीं।'

मातुल गरज कर रा पर झपट पड़ी। रा भी उससे ' मारे दोनों की देह थरथरा रही थी। वे एक दूसरे को नों र रही थीं।

उस आरम्भिक सभ्यता का यह नियम था कि द बीच में पड़ता था न किसी का पक्ष लेता था। ऊला से इस युद्ध को देख रहीं थीं।

लड़ते लड़ते दोनों के कठिनता से जांघ क खुल गये, पर उन्हें होश नहीं था। तभी रा की आ गया। उसने काट खाया। पीड़ा से पागल से धक्का दिया। रा सम्भल न सकी। गिरने पत्थर से टकराया और वह अचेत हो गई।

मातुल के स्तन आडोलित हो रहे थे दृष्टि से देख रही थीं। उछलते वक्ष हाथ को ठण्डे पानी के नीचे कर दिया गया। फिर उसने खाल को उठा कर

रा को वहीं अचेत छोड़ सब अपनी अपनी मशक भर कर गुहाओं में लौट लीं।

मातुल ने गुहा में लौट कर मशक को पत्थर के बाहर निकले सिरे पर लटका दिया। तभी भू और चा भी लौट आये। एक ने कन्धे पर हिरन की देह लटका रखी थी, दूसरे के हाथ तरह तरह के फलों से भरे थे।

गुहा के द्वार के पास ही पथरीली भूमि में एक छोटा गड्ढा खुदा हुआ था। मातुल ने मशक उतार कर उसमें थोड़ा पानी डाल दिया। कानुन ने भू से हिरन का शरीर ले लिया और पत्थर के चाकू से उसके छोटे छोटे टुकड़े कर पानी में डालने शुरू कर दिये। फिर उसने जलती आग में से एक दहकता पत्थर निकाला जो लाल हो रहा था। वह भी मांस के साथ पानी में डाल दिया गया। उसने खूब बुलबुले उड़ाये और छन छन की आवाज़ की। एक के बाद एक कई दहकते पत्थर डाल देने के उपरान्त गड्ढा एक खमकता कड़ाह बन गया। जब पत्थर न फेंकने पर भी पानी ने खौलना जारी रखा तो कानुन ने हाथ खींच लिया। पूरा परिवार पर्याप्त देर तक उस कड़ाह के चारों ओर बैठा रहा।

समय समय पर कानुन अपनी उंगली पानी में डाल कर देख लेती थी कि वह कितना गरम है। आखिर जब उसे सन्तुष्टि हो गई तो उसने भू को भोजन आरम्भ करने का संकेत दिया।

भू ने अपना पत्थर का चाकू मांस के एक टुकड़े में गड़ाया और उसे बाहर निकाल कर कानुन के सामने फर्श पर फेंक दिया। दूसरा टुकड़ा मातुल को दिया गया, तीसरा चा को और चौथा टुकड़ा भू ने अपने लिये रख लिया। चारों ने आराम से पेट पूजा आरम्भ की। खाने के बीच में वे आपस में मज़ाक भी कर रहे थे।

चा ने नानू के बेटे काकू को लेकर मातुल को छेड़ा। "बड़ा शिकारी बनता है। मना अकेला भी कोई ऊ को मार सकता है। मेरे विचार में तो कोई नरकव्यथा इस समय काकू की हड्डियों को चूस रहा होगा।"

मातुल ने क्रोध से नेत्र संकुचित कर चा को घूरा।

कातुल ने अपनी बेटी का पक्ष लिया। "काकू बहुत बड़ा वीर है। अवश्य उसने ऊ का परिवार ढूंढ लिया होगा और अब उसके मारने की युक्ति सोच रहा होगा।'

"नहीं कातुल। युक्ति नहीं ढूंढ रहा होगा, ऊ काकू को तो मार चुका होगा और उसके परिवार को ढूंढ रहा होगा।'

मातुल ने एक चीख मारी और चा को नोचना खसोटना शुरू कर दिया। चा मुस्करा कर अपने स्थान से हट गया।

तब भू बोला, "मुझे ऊ के कारण काकू का डर नहीं है क्योंकि नानू का बेटा काकू अपने बाप से भी बढ़ कर शिकारी है। लेकिन फिर भी मुझे उसे यहाँ देख कर प्रसन्नता होगी। कल सारी ज़मीन काँपी थी, गरज ऊपर के बजाय भूमि के अन्दर से आई थी, बड़े बड़े पहाड़ लुढ़क गये थे, तब पता नहीं उस पर क्या बीती हो। हम सब को बहुत प्रसन्नता होगी कि चाहे वह ऊ का सिर लाये या नहीं पर मातुल उसके साथ सहवास करने को तैयार हो जाय।"

भू के कथन ने मातुल को सोच में डाल दिया। वह भी जानती थी कि कोई मनुष्य कितना ही वीर क्यों न हो प्रकृति के हथियारों के सामने नहीं जीत सकता था। चा तो उसे खिजा रहा था पर भू ने उससे सच्ची बात कही थी। कल के भूकम्प के बाद पता नहीं काकू का क्या हुआ हो।

भोजन करने के उपरान्त भू, जैसा उसने कहा था, सरदार नानू की गुहा की ओर चल दिया। वहाँ उसने पहले से ही कई युवक और पुराने वीर एकत्रित हुए देखे। वे इतने थे कि उनके लिये गुहा में स्थान नहीं था। गुहा के बाहर भी बैठने का कोई स्थान नहीं था। सो नानू का संकेत पाते ही सब पहाड़ की तलहटी के उस छोटे साफ किये चौकोर स्थान पर उतर गये। यह वह स्थान था जहाँ समय समय पर पूरी जाति एकत्रित हुआ करती थी, दावत के समय या किसी अन्य आयोजन पर।

स्थान के एक कोने में चौरस पत्थर के ऊपर भानू बैठ गया। उसके कन्धों पर भीषण विशाल रीछ के बालों से भरी खाल पड़ी थी। उसके लंगोट को सम्भालने वाली डोरी में एक ओर उसकी लकड़ी की बेंट लगी पत्थर की कुल्हाड़ी लटक रही थी और दूसरी ओर चाकू। उसके हाथ में पैरों के बीच रखा तेज भाला चमक रहा था। उसके काले बाल अनाड़ीपन से कटे हुए थे और उन पर बाघ की खाल टोपी की तरह बंधी हुई थी जिसमें से एक लम्बा, सीधा पंख ऊपर की ओर निकला हुआ था। उसके गले से एक डोरी में पशुओं के तेज दांत और तीखे नख लटक रहे थे। एड़ी से लेकर चोटी तक उसका तपे-ताम्र-वर्ण का शरीर घावों के निशानों से भरा पड़ा था। ये सब उसके किये गये शिकारों के चिह्न थे। सवेरा गरम था। इसलिये उसने अपने शरीर पर ओढ़ी खाल को नीचे खिसका लिया। उस उसांसी जलवायु में किसी प्रकार का कपड़ा पहनना आवश्यक नहीं था और अपनी अपनी गुहा में कोई पहनता भी नहीं था। पर दूसरों को दिखाना, फैशन और अभिमान मनुष्य को बुद्धि के साथ मिले हैं। आदिम मनुष्य भी खाल आदि अपनी वीरता दिखाने के लिये पहनते थे और अपना वैभव दिखाने के लिये नारियों को भी विभिन्न प्रकार से सजाकर गुहा से बाहर निकालते थे। उस समय के वैभव का द्योतक खाल, नख और दांत थे।

भू सरदार का विश्वासपात्र था। उसने सबसे पहले बोलना आरम्भ किया। उस समय शब्द थोड़े थे, बोली बालक, इसलिये उसे इशारों और हाथ पैर चला कर सहारा देना पड़ता था। भाषण देना उस समय बहुत ही कठिन काम था। उस में भाषण की कला तथा असाधारण बुद्धि के साथ साथ विशेष कल्पना की आवश्यकता पड़ती थी। एक के विचार दूसरे तक पहुँचा देना क्योंकि दुष्कर था इसलिये बोलने की शक्ति का बहुत आदर किया जाता था और उस समय मनुष्य के लिये उसकी बड़ी कीमत थी। आजकल की तरह नहीं कि जो ज्यादा बोलता है उसे सब बकवासी कहते हैं और घृणा की दृष्टि से देखते हैं। तब बुद्धि को बोलने के लिये अपनी सारी शक्ति व्यय कर देनी पड़ती थी।

और व्यक्ति सुनने वाले भी अच्छे थे। बिना ध्यान मे बुद्धि लगाये वे इशारों तथा शब्दों का सिर पैर नहीं समझ सकते थे।

उस चौकोर स्थान में चारों ओर जाति के लड़ाका बैठे हुए थे। बीचों बीच थोड़ी जगह खाली थी जो बोलने वाले के लिये थी। भू उस जगह जाकर खड़ा हो गया। उसके चारों ओर वृद्ध बैठे थे। उनके पीछे प्रौढ़ घुटनों पर बैठे थे और सबसे पीछे युवक खड़े थे।

भू ने सीने से एक भयानक गड़गड़ाती आवाज़ निकाली जिससे उसका विशाल शरीर कांप उठा।

"भूमि गरजती है और काँपती है जहाँ हम रहते हैं," उसने कहा। "किसी दिन यह पहाड़ गिर पड़ेगा।" उसने अपने रहने के स्थानों की ओर इशारा किया, फिर हथेली खोलकर ज़मीन की ओर करली। "हम सब मारे जायँगे। हमें यहाँ से चल देना चाहिये। हमें ऐसी जगह ढूंढनी चाहिये जहाँ भूमि काँपती न हो। पशु सब जगह हैं। फल-मूल भी सब जगह हैं। प्रत्येक नदी की घाटी में नस्पति उगी पाई जाती है। हम यहाँ के समान सब जगह शिकार कर सकते हैं। सब जगह खाना ढूंढ सकते हैं। हमें अपने बाल बच्चों को लेकर इस भयानक स्थान को छोड़ देना चाहिये।"

बोलते बोलते उसने शिकार का पीछा करने, फल और बनस्पति एकत्रित करने तथा चलने और नया घर ढूंढने की नकल की। उसके संकेत शानदार और मोहक थे। श्रोतागण ध्यानपूर्वक उसकी बातें सुन रहे थे।

अपनी बात समाप्त कर वह पलोथी मार कर बैठे हुए मनुष्यों की रेखा में जा मिला। फिर दूसरा व्यक्ति उठा जो बहुत बूढ़ा था। वह मध्य के खाली स्थान में आ खड़ा हुआ और कुछ शब्दों तथा अधिकतर संकेतों से घर छोड़कर जाने के दुःख और कष्ट बताने लगा। उसने बताया कि किसी अकेले अजनबी या अजनबियों की टोली के नानू की पहाड़ी के निकट आने पर किस तरह नानू की जाति के लड़ाके उन पर टूट पड़ते हैं और जो भाग नहीं जाते उन्हें मार डालते हैं।

"दूसरे भी हमारे साथ यहीं करेंगे," उसने डराया, "यदि हम उनकी जमीन पर पैर भी धरेंगे।"

उसके बैठ जाने पर पीछे खड़े युवक लड़ाकों की कतार में से हथा आगे आया। हथा भी मू की पुत्री मातुन के साथ सहवास करने की उद्दाम इच्छा रखता था। इसलिये उस ने दो कारणों से मातुन के बाप मू का समर्थन किया। एक तो यह कि इस तरह से वह प्रौढ़ वीर मू की नजरों में चढ़ जायगा; दूसरे इस आशा पर कि जाति अभी फौरन दूसरी जगह को रवाना हो जायगी और क्योंकि नातू का बेटा काडू अभी तक नहीं आया है, सो मातुन को उसके साथ सहवास करने के लिये दूसरी जगह राजी होना पड़ेगा।

"मू ने बुद्धिमानी की बात कही है," हथा बोला। "यह स्थान मनुष्य या पशु के लिये सुरक्षित नहीं रह गया है। कठिनाई से कोई चन्द्रमा गुजरता होगा जिस दिन धरती काँपती न हो। जगह जगह पर पहाड़ लुढ़क गये हैं। किसी भी दिन हमारे पहाड़ की भी बारी आ सकती है। हमें ऐसे स्थान पर चलना चाहिये जहाँ धरती काँपती न हो और फटती न हो। हमें अजनबियों से डरना नहीं चाहिये। यह काम तो बूढ़ों और बच्चों के साथ स्त्रियों का है। नातू की जाति बड़ी शक्तिशाली है। वह जहाँ भी चाहे जा सकती है और जो उसके रास्ते में आयेगा उसे मार सकती है। हमें मू की बात माननी चाहिये। क्या पता, किसी भी समय दूसरा भूकम्प आ सकता है। हमें अभी चल देना चाहिये। खाना हम सब खा चुके हैं।"

अन्य भी बोले। भूकम्प का इतना डर उनके दिलों में बैठा हुआ था कि शायद ही किसी ने वहीं रहने के लिये कहा हो। नातू बड़ी संजीदगी से सब की बात सुन रहा था।

तभी झरने की ओर से रा भागती हुई आई। उसका शरीर पानी में भीग रहा था, मुख पर हवाइयाँ उड़ रही थीं, वक्ष ऊपर नीचे हो रहा था, साँस फूला जा रहा था।

जाति की सभा में नारी नहीं बोल सकती थी पर वह किस मुह से बोलने लगी।

"...... में बेहोश ...... होश में आई तो झरने में नहाने लगी जिससे रक्त बन्द हो जाय। तभी मैंने झरने के ऊपर से एक पहाड़ उतरता देखा ?"

नानू ने गम्भीर आवाज़ में कहा, "क्या बकती है ?"

रा ने उत्तर दिया, "पहाड़ इतना बड़ा, वह नीचे से ऊपर जा रहा था।"

तभी कोर बाहर निकल कर आया। उसने रा के स्तन युगलों के नीचे ज़ोर का दुहत्थड़ दिया। पीड़ा के मारे युवती दुहरी हो गई। "पागल, चल गुहा में।" वह बाल पकड़ कर रा को घसीटता ले गया।

कोर और रा के जाने के बाद नानू उठा। "यही अच्छा है कि हम यहाँ से चल दें ...." हथा के मुख पर विजय की मुस्कान दौड़ गई "...... पर मेरे बेटे काकू के लौटने के बाद।" हथा के मुख से एक गुर्राहट निकली। "मैं उसे ढूंढ़ने जा रहा हूँ।" नानू ने अन्त में कहा।

सभा समाप्त हो गई। सब पुरुष अलग अलग कामों में लग गये। भू भी नानू के साथ हो लिया। दोनों काकू को ढूंढने चल दिये। दल का एक भाग उजाड़ पहाड़ी के दाहिने ओर चल दिया जहाँ तलहटी में समुद्रतट के समीप ही किसी ने नर मैमथ (हाथी का पूर्वज) को चरते देखा था।

हथा अपनी गुहा में चला गया और मातुल से अकेले में मिलने का अवसर ढूंढ़ने लगा। अन्त में उसकी बाट समाप्त हुई। मातुल फिर पानी भरने के लिये झरने की ओर जा रही थी जो अब निर्जन पड़ा था। हथा उसके पीछे पीछे भागा और जैसे ही वह मशक भरने के लिये झुकी उसे पकड़ लिया।

हथा ने प्रारम्भिक मनुष्यों के सीधे सादे तरीके से कहा, "मैं चाहता हूँ कि तू मेरी सहवासी हो।"

एक पल मातुल ने उसके मुख की ओर देखा और फिर खिलखिला कर हँस पड़ी।

"जा और ऊ का सिर लाकर मेरे पिता की गुहा के सामने रख दे," उसने उत्तर दिया, "केवल तब ही मातुल हथा की सहवासी होने का सोचेगी।"

"पर मैं भूल करती हूँ," वह सहसा चिल्ला उठी। "हृया तो स्त्रियों और वृद्धों के साथ घर में रहना पसन्द करता है जब कि शेष दल वाले समय का शिकार करते हैं। हृया शिकार नहीं करता।"

हृया सान्त हो उठा। शक्ति तथा देह में वह कायर नहीं था। उस जमाने में कायर पैदा हो ही नहीं सकते थे। उसने झुंझला कर मातुल का हाथ कस कर पकड़ लिया।

"हृया तुझे दिखला देगा कि वह कायर नहीं है," वह गरजा। "वह तुझे अपने साथ पकड़ कर ले जायगा और मू, नान्नू, काकू किसी की परवा नहीं करेगा। यदि वे तुझे मुझ से छुड़ाने के लिये आयेंगे तो मैं उन सबको मार डालूंगा।"

कहते कहते उसने मातुल को झरने के उस पार वाले जंगल की ओर खींचना आरम्भ किया। वह जंगल सागर और पहाड़ से अन्दर की ओर चला गया था। मातुल ने उसके पंजे से छूटने के लिये पूरा जोर लगाया, पर एक हाथ से उसका मुख दाबे और दूसरे में उसकी देह थामे हृया धीरे धीरे उस जंगल में बढ़ता गया। जंगल पार कर युवक उत्तर की ओर तट के सहारे बढ़ गया। वहाँ उसने लड़की के मुख पर से हाथ हटा लिया।

"क्या तू मेरे साथ आयेगी?" उसने पूछा, "या सारे दिन मैं तुझे घसीट कर ले जाता रहूँ?'

"मैं अपनी इच्छा से तेरे साथ नहीं आऊंगी," मातुल ने उत्तर दिया। "इससे काकू को या मेरे पिता को या मेरे भाई को मुझे मारने का हक नहीं रहेगा। पर क्योंकि अब तू जबरदस्ती मुझे ले जा रहा है जैसा सालों गुज़रे हमारे बालों वाले पूर्वज ले जाते थे, वे तुझे मार डालेंगे। हृया, तू एक पशु है और तुझे एक पशु की तरह मार डालना चाहिये।"

"इससे तेरी ही हानि अधिक होगी," हृया मुस्कराया। "यदि तू राजी ने मेरे साथ नहीं गई तो हमारी जाति बच्चे को जान से मार डालेगी।"

"हमारा कोई बच्चा नहीं होगा," मातुल गुर्राई और अपनी मृगछाल के नीचे उसने पत्थर के चाकू का बेंट कस कर पकड़ लिया।

हथा तट के किनारे किनारे चलता रहा। उसे लौटते हुए मैमथ के शिकारियों से मिलने का डर था क्योंकि वे भी उत्तर की ओर गये थे। पर वे पहाड़ की तलहटी में जंगल के अन्दर अन्दर गये थे।

इस तरह चलते हुए वे उजाड़ पहाड़ियों के तीखे ढलान के नीचे आ पहुँचे। सूरज उन दोनों के सिर पर आ पहुँचा था। हथा ने अपने साथी को पहाड़ियों के ऊपर खींचना आरम्भ किया। वह कोई सुरक्षित स्थान ढूंढना चाहता था। वह जानता था कि जो काम उसने किया है उसके कारण वह कम से कम एक पूर्ण चन्द्रमा तक जाति में नहीं लौट सकेगा। उसके बाद भी लौटना कठिन ही होगा क्योंकि नानू की जाति ने कई पीढ़ियों से किसी युवती को बलपूर्वक सहवासी नहीं बनाया था। उनमें यह विश्वास था कि जो स्त्री-पुरुष अपनी इच्छा से सहवास करते हैं, उनके बच्चे अधिक सुन्दर, वीर और शक्तिशाली होते हैं। फिर भी वह आशा करता था कि वह मातुल को यह कहने के लिये राज़ी कर लेगा कि वह अपनी सहमति से उसके साथ भागी थी। लेकिन इस बात को अभी बहुत दिन थे।

उजड़ी पहाड़ियों की चोटी पर पहुँच कर दूसरी ओर का दृश्य बिलकुल निराला था। उसके उत्तर में एक बहुत बड़ा चौरस मैदान था जिसमें स्थान स्थान पर पेड़ों के ठूंठ खड़े थे। कुछ दूरी पर ब्रह्मपुत्र नदी अपने किनारों पर जंगल का परिधान पहने सागर से मिलने को भागी जा रही थी। मैदान में हिरन, बारहसिंघे आदि के झुंड घास में चर रहे थे। वहाँ पर भेड़ें तथा अन्य जानवर भी थे। जंगली सुअरों का दल भी वहाँ था। समय समय पर वहाँ भगदड़ मच जाती थी जब कोई शिकारी जीव पर टूट पड़ता था। गुर्राते, हिनहिनाते, चिचियाते, शोर मचाते वे थोड़ी दूर भाग कर फिर रुक जाते थे और अपने पेट भरने में या प्रणय-गाथा में लग जाते थे। थोड़ी दूर पर ही उनका भय अपने शिकार को साफ़ करने में लगा होता था। वे अधिक दूर नहीं भागते थे। यह उनके लिये प्रतिदिन का काम था। वे जानते थे कि आगे भाग कर कहाँ जायेंगे। चारों ओर वे अपने शत्रु जानवरों से घिरे हैं। उनका जीवन ही यह था कि खाना खाते खाते तथा उत्पत्ति की समस्या सुलझाते सुलझाते इधर

उधर भागना और अपनी अधिक उत्पादन शक्ति के कारण इस संसार में जीवित रहना।

हथा ने उजाड़ पहाड़ियों के उत्तर की ओर उतरना आरम्भ किया। वह एक गुहा की तलाश में था जिसमें वे कुछ दिन वास कर सकते थे। ढलान पर आधी दूर उतरने पर उसे एक गुहा मिली जिसके सामने हिरन, बैल और यहाँ तक कि भैंसे की हड्डियों का ढेर लगा था। अन्दर झांकते समय हथा ने अपना भाला मजबूती से पकड़ लिया। यह विशाल भालू की गुहा थी। हथा ने एक हड्डी उठा कर अन्दर फेंकी। अन्दर से उत्तर में गुर्राहट नहीं आई—भालू अपने घर में नहीं था।

हथा ने मातुल को गुहा के अन्दर धकेल दिया। फिर उसने कुछ भारी पत्थर सरका कर गुहा के मुख के सामने लगा दिये जो भालू के लौटने पर उसको अन्दर न आने देने के लिये पर्याप्त थे। बचे छिद्र से वह सरक कर अन्दर घुसा। झिलमिले प्रकाश में उसने मातुल को गुहा के दूसरे कोने में चिपके देखा। वह उसे अपनी बाहों में भर लेने के लिये आगे बढ़ा।

३

जव नान्नू के पुत्र काकू की मूर्छा टूटी, तव सूर्य का प्रकाश गुहा के प्रवेश-द्वार पर पड़े उन पत्थरों में वने सूराखों में से छन छन कर आ रहा था जिनसे रास्ता वन्द हो जाने के कारण वह क़ैद हो गया था। वह अर्धचकित उठ कर वैठा। उसने अपनी दृष्टि अन्दर के अन्धकार में इधर उधर घुमाई। वह उछलकर अपने पाँवों पर खड़ा हो गया और कुछ पलों में गुहा के सव कोनों को छान मारा। वहाँ कोई नहीं था। गहन विचारों में डूवा, काकू एक पल अपने मस्तक को हाथ से दवाये खड़ा रह गया। वह अभी, गत भूत में हुई, घटना को अपनी याद में संजोने का प्रयास कर रहा था।

अन्ततः उसे स्मरण हो आया कि वह अपनी जाति के गाँव से ऊ का शिकार करने चला था कि वह उस भयानक दैत्य का सिर ले जाकर भू की पुत्री मातुल के सामने डाल दे। किन्तु उसके विचार से तो मातुल इस समय उसके पास थी। फिर मतलव क्या ······

काकू ने अपना सिर हिलाया और ज़ोर से पैरों को पटका ······· यह केवल भयावह स्वप्न के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं था।

पर गत रात्रि का भूकम्प किसी प्रकार भी स्वप्न नहीं हो सकता था। वह स्वयंसिद्ध था क्योंकि वह जीवित ही गुफा में दफना दिया गया था।

उसे स्मरण हो आया-- ऊ उसे घर पर मिला था, कैसे उसको मारा था, और जव भूकम्प आया था तो वह पृथ्वी से फूट कर निकलने वाले पदार्थों और पहाड़ के टुकड़ों से वचने के लिये भागकर ऊ की गुहा में छिप गया था।

तव उसने अपने मस्तिष्क को चट्टान के उस भाग पर केन्द्रित किया जो गुहा के द्वार पर आ पड़ी थी। उसे यह देख कर आनन्द हुआ कि चट्टान ऊँचे से गिरने के कारण छोटे छोटे टुकड़ों में विभक्त होकर एक विशाल ढेर मात्र

रह गई है। उसने एक एक करके उन टुकड़ों को हटाना शुरू किया। एक टुकड़ा हटाया जाने पर उसका स्थान ऊपर से लुढ़क कर दूसरा पत्थर ले लेता था, पर वह निराश नहीं हुआ क्योंकि वह जानता था कि बाहर निकलने का केवल यही रास्ता है चाहे इसमें परिश्रम कितना ही क्यों न करना पड़े। उसके पीछे गुहा आधी भर गई। आखिर वह रेंग कर निकलने लायक अपने लिये छेद बना पाया।

वह बाहर आया। पर शोक! उसका इतना परिश्रम से किया गया शिकार वहाँ मौजूद नहीं था। जरूर उसे कोई लकड़बग्घा ले गया होगा। उसी में इतना आत्मसम्मान नहीं होता कि दूसरों का मारा शिकार अपने खाने को ले जाता है। या कोई अन्य जंगली जानवर होगा। लेकिन सिर तो उसने काट कर अलग कर लिया था। ध्यान नहीं, कल रात की गरज से घबरा कर उसने सिर कहाँ फेंक दिया। काकू ने चारों ओर दूर दूर तक सिर को तलाश किया किन्तु असफल रहा।

तो अब। बिना सिर लिये वह जाति में नहीं लौट सकता। बिना सिर दिखाये सब उसकी वीरता को गप्प मानेंगे। यह तो ठीक था कि कोई उसकी इस बात पर शक नहीं करता है कि वह ऊ से मुठभेड़ करने निकला है क्योंकि सारी जाति वाले उसके शौर्य और उत्साह को जानते हैं। फिर भी केवल कोरी बातें लेकर लौटना अवश्य जगहँसाई का कारण बनेगा।

फिर वह बिना शिकार किये भी नहीं लौट सकता। उसके द्वेषी युवक कहेंगे— ऊ से डर कर वह खाली हाथ घर पर आकर बैठ गया है। युवतियाँ उसकी ओर क्रुद्ध ऐसी दृष्टि से देखेंगी कि ······। नहीं, नहीं, वह बिना ऊ का शिकार किये जाति में नहीं लौटेगा।

इस गुहा का चीता तो मर चुका है। हो सकता है उसकी साथिन अभी जीवित हो। पर जीवित होने पर भी अब वह इस गुहा में शायद ही लौट कर आये क्योंकि पत्थर के टुकड़ों से इसका मुख बन्द हो चुका है। मतलब यह है कि उसे दूसरे सिरे से ऊ को खोजना पड़ेगा। खैर, आज तो वह इस गुहा पर ही नज़र रखेगा।

काकू ने पहले कुछ फलों को तोड़ कर खाया और फिर उसने एक पेड़ की शाखा पर अपने बैठने के लिये आरामदेह जगह ढूंढ निकाली, जहाँ से वह चीते की गुहा पर दृष्टि रख सकता था। तब ही उसके सचेत कानों ने अपने पीछे जंगल में होने वाली हलचल को पकड़ लिया। और साथ ही उसके शक्तिशाली नथुनों में हवा के साथ मनुष्य-गंध प्रविष्ट हुई। अब वह इस नई दिशा की ओर सचेत हो गया, और उन आगन्तुकों को पहचानने में उस समय तक अपनी समस्त शक्ति लगा दी, जब तक कि वे उसकी नजर में नहीं आ गये।

शीघ्र ही वे दिखाई पड़े--- दो मनुष्य, नानू और भू, जो काकू की तलाश में आये हुए थे। उन्हें देखने पर नानू का पुत्र काकू हर्षध्वनि कर उठा।

'नानू और भू, कहाँ जा रहे हैं?' जैसे ही वे दोनों उस पेड़ के नीचे रुके, उसने पूछा।

"वे नानू के पुत्र, काकू को तलाश करते हैं," युवक के पिता ने उत्तर दिया, "और उसे पा लेने पर वे नानू की जाति के घरों को लौट रहे हैं, और काकू, नानू का पुत्र, उनके साथ लौटता है।"

युवक ने अपने चौड़े कन्धों को उचकाया।

"नानू का पुत्र काकू यहीं रहेगा और ऊ का शिकार करेगा," उसने उत्तर दिया।

"नीचे उतर आओ और अपने पिता के साथ चलो," बूढ़े ने उत्तर में कहा, "क्योंकि नानू की जाति ने आज दूसरे निवास-स्थान की तलाश शुरू कर दी है, जहाँ पृथ्वी काँपती नहीं है, या जहाँ चट्टानें चटखती नहीं हैं और गिरती नहीं हैं।"

काकू धीरे धीरे पृथ्वी पर उतर आया।

"मुझे बता दो कि जाति किस ओर गई है," काकू के पुत्र ने कहा, "मैं ऊ का शिकार करने के पश्चात उससे जा मिलूँगा।"

युवक के पिता ने शान्त भाव से एक क्षण तक सोचा। उसे अपने पक्ष के

साहस पर बड़ा गर्व था। सोच विचार करने पर उसे इस बात का आभास हो चला कि यदि उसके पुत्र को बलात् खाली हाथ वापिस ले जाया गया, तो उसकी कितनी जगहँसाई होगी। उसने युवक के कन्धे पर हाथ रखा।

"मेरे पुत्र", उसने कहा, "अगली भोर होने तक रुको। कबीला उत्तर की ओर ब्रह्मपुत्र नदी के साथ साथ पथरीली चट्टानों के पीछे की ओर बढ़ेगा। तुम हमें आसानी से पकड़ लोगे। यदि तुम लौट कर नहीं आये, तो हम समझ लेंगे कि नानू के पुत्र से ऊ अधिक शक्तिशाली है।"

अधिक कहे बिना ही दोनों वृद्ध घूमे और गाँव की ओर क़दम बढ़ाते हुए चल पड़े, जबकि नानू का पुत्र काकू पुनः पेड़ पर बनाये हुए स्थान पर जा बैठा।

पूरे दिवस भर वह के ऊ लौटने की प्रतीक्षा करता रहा। बड़े बड़े एप और छोटे छोटे बन्दर उसके ऊपर नीचे से, बराबर में, गुज़रते रहे। कभी कभी वे गुज़रते हुए उसकी ओर व्यग्र कम जाते थे। नीचे, विशालकाय गैंडा नींद के आनन्द ले रहा था। लकड़बग्घों का एक झुण्ड चट्टान के ऊपर से धीरे धीरे उतर कर नीचे आया और सोते हुए विशालकाय जीव को घेर कर खड़ा हो गया। विशालकाय जीव ने अपनी छोटी आँखें खोलीं। फिर धीरे-धीरे अपने पाँवों पर खड़ा हो गया। वह घूम कर लकड़बग्घों की दिशा में आ गया; तब वह मांस का पहाड़ पागलों की भाँति दौड़ा, और सीधे भौंकते हुये लकड़बग्घों की पंक्ति पर आक्रमण किया। कायर कुत्ते इधर उधर फैल गये, और फिर सारा का सारा झुण्ड गैंडे के पीछे चिपट गया। विशालकाय पशु बिल्ली की सी तेज़ी से लौटा। अपनी शस्त्र रूपी नाक से एक सताने वाले पर आक्रमण किया। शक्तिशाली सींग के प्रहार से वह टुकड़े टुकड़े हो गया। पुनः गैंडा दौड़ा, और पुनः झुण्ड ने उसे सताना शुरू कर दिया। जंगल उन्हें निगल सा गया, किन्तु फिर भी एक लम्बे समय तक काकू उन पशुओं की भयावह गुर्राहट सुनता रहा, और दर्द की उन पुकारों को भी, जो समय-समय पर गैंडा अपने को सताने वालों के आक्रमण से कर बैठता था।

तब एक गुहा-रीछ चट्टान से उतरता हुआ दिखाई दिया। ऊ की गुहा के मुख पर रुक कर, सावधानी के साथ सूंघने लगा, और साथ साथ ही गले में दबी हुई घृणा एवं क्रोध की गुर्राहटें निकालता रहा।

काकू अर (गुहा-रीछ) के पुरातन शत्रु की ललकार, स्वीकृतोक्ति, के लिये कान लगा कर बैठ गया, किन्तु कोई आवाज नहीं आई। काकू ने अपने कन्धों को बिचकाया। यह इस बात का परिचायक था कि ऊ वहां आस पास नहीं है, अन्यथा वह कदापि अर की ललकार को अनुत्तरित नहीं जाने देता।

रीछ ने चट्टान की ओर बढ़ना शुरू कर दिया। वह उस पेड़ की ओर बढ़ रहा था, जिस पर काकू बैठा हुआ था। जंगल के किनारे पर पहुंच कर पशु रुक गया और मुलायम धरती में मुंह घुसा कर जड़ें खाने लगा। काकू उसे देखता रहा। यदि ऊ का सिर नहीं तो अर का सिर ही सही। ऊ आज नहीं लौटेगा, इसका काकू को दृढ़ निश्चय हो गया था, क्योंकि दोपहरी बीते काफी समय हो चुका था, और यदि विशाल चीता निकट ही होता, तो उसने गुहा-रीछ की ललकार को सुनकर उत्तर अवश्य दिया होता।

काकू पेड़ की दूसरी ओर, धीरे से धरती पर उतर आया। दायें हाथ से उसने अपना लम्बा, भारी भाला संभाल लिया। बायें हाथ में उसका पत्थर का कुल्हाड़ा था। पीछे की ओर से वह विशालकाय पशु के निकट पहुंचा, और उसके सचेत होने के पूर्व उससे कुछ ही कदम दूर रह गया।

किन्तु अन्त में अर ने उसको देख ही लिया, और उसी क्षण काकू की सुदृढ़ मांसपेशियों ने पत्थर की नोक के भाले का वार किया। गोली के समान सीधा वह बालों वाले दैत्य के सीने की ओर दौड़ा, और उसके शरीर में गहरा घुस गया। तैसे ही फुफकारता हुआ रीछ आक्रमण का दुस्साहस करने वाले जीव की ओर झपटा।

काकू अपने स्थान पर खड़ा हुआ, दोनों हाथों से पत्थर के भारी कुल्हाड़े को इधर-उधर चलाता रहा। गुहा-रीछ ने अपने पावों को उठाया, जैसे ही वह मनुष्य के निकट पहुंचा, ताकि वह उछल पर अपने शत्रु के सिर को कुचल

डाले। मुँह फाड़े, पंजों को फैलाये, वह भयानक पशु आगे बढ़ा। भाले की नुकीली एवं मजबूत नोक से उसकी छाती का घाव बढ़ता जा रहा था जिस के कारण उसके मुँह से क्रोध एवं वेदना की धरती कंपा देने वाली गरजें निकल पड़ती थीं।

जैसे उसकी शक्तिशाली अगली भुजायें निकट पहुँचीं, काकू एकदम नीचे बैठ कन्नी काट गया और अपने कुल्हाड़े को रीछ के झुके हुये सिर पर दनादन मारने लगा। भयावह गर्जना करता हुआ पशु घुमा और दूसरी ओर से आक्रमण करने लगा, किन्तु पुनः काकू ने अपनी पहली चतुराई का सहारा लिया, और पुनः अंग-भंग कर देने वाला प्रहार गुहा-रीछ के जबाड़े पर पड़ा।

जीव के मुख और शरीर से रक्तधार बह निकली। इसका कारण केवल पत्थर का कुल्हाड़ा ही नहीं था, बल्कि पत्थर का भाला भी था, जो दैत्य के फेफड़ों को बींधे चला जा रहा था। और अब अर ने वही किया, जिसके करने की काकू प्रतीक्षा कर रहा था। वह अपने चारों पाँवों पर पागलों की भाँति अपने प्रतिद्वन्द्वी की ओर दौड़ा। इस बदली हुई दशा ने गुहा-रीछ की खोपड़ी को मनुष्य के शस्त्र की पहुँच के अन्दर ला दिया। आक्रमण से बचने के लिये उसने कदम उठाया, और अपने कुल्हाड़े से रीछ की खोपड़ी पर, आँखों के बीच जोरदार आघात किया।

रीछ चकित हो, लड़खड़ा कर जमीन पर गिर पड़ा, और अपनी नाक को रणभूमि की रौंदी हुई मिट्टी एवं घास में दबा दिया। केवल एक क्षण के लिये ही वह ऐसा रहा होगा। और उसी सुनहरे क्षण का उपयोग करने में काकू ने किंचित् भी ढील नहीं की। अपने कुल्हाड़े को फेंक, वह पत्थर के चाकू को ले अर पर टूट पड़ा और बार बार चाकू के फल को जंगली पशु के हृदय में घुमाने लगा। गुहा-रीछ एक ओर मृत होकर लुढ़क गया।

आधे घण्टे तक काकू सिर काटने में व्यस्त रहा, और फिर पशु की खाल छुटाने में लग गया। उसका ढंग बड़ा ही बेहूदा था, किन्तु वह अपने प्रारम्भिक शस्त्रों से, तेज चाकुओं से काम करने वाले आधुनिक मनुष्य के मुकाबिले, अधिक

तेजी से काम कर रहा था। आधा घण्टा बीतने से पहले ही, वह खाल को उतार, लपेट कर बन्डल बना चुका था, और साथ ही खाने के लिये अर के शरीर से काफी मांस निकाल चुका था। तब उसने कुछ सूखी पत्तियाँ एवं तिनके इकट्ठे किये और अगहर की लकड़ी घिस कर, उस ढेर में आग लगा दी। वह मांस के टुकड़ों को एक शाखा में बींध कर, आग के ऊपर सेंकने लगा। उसका रात का भोजन तैयार हो चुका था। वह अधजला, अधकच्चा और कहीं से जल चुका था, किन्तु उसने उसे बड़े आनन्द एवं प्रेम से खाया।

अपनी पोटली को कन्धे पर रखने के पश्चात्, वह अपने कबीले से मिलने के लिये चल पड़ा। वह सीधा सागर के किनारे वाली चट्टानों पर लौट आया, क्योंकि उसे इसका कोई ज्ञान नहीं था कि उसका कबीला किसी अन्य रहने योग्य स्थान की खोज के लिये अभी चल पड़ा है अथवा नहीं। रात्रि का अन्धकार छा चुका था, किन्तु फिर भी वहाँ की अस्त व्यस्त चीजों ने उसे इस बात की सूचना दे दी कि कबीला प्रस्थान कर चुका है। रात गुज़रने के लिये वह अपनी गुहा में ठहर गया। भोर हो जाने पर वह उन्हें आसानी से पकड़ सकेगा।

४

जब हथा मातुल से मिलने के लिये गुहा में प्रविष्ट हुआ तो वह अपनी शारीरिक शक्ति के उन्माद से विफरा हुआ था। वह अपने हाथों को इस प्रकार फैलाये हुआ था, कि उसे अपने बाहु-पाश में जकड़ सके।

"हथा," मातुल ने कहा, "यदि मैं अपनी इच्छा से तेरी सहवासिनी बन जाऊ, तो क्या तू मुझ से सदा नम्र व्यवहार करेगा?"

हथा अपने शिकार से कुछ फीट की दूरी पर रुक गया। वास्तव में, यह स्पष्ट रूप से, उसकी आशा के विपरीत, अधिक सरल हो चला था। अपनी प्रेयसी के लिये उसे ऊ का सिर लाने की जोखम नहीं उठानी पड़ेगी, और इसलिये वह उस प्रत्येक वादे को करने के लिये तैयार था, जिसे लड़की कराना चाहती थी। बाद में वह उनका सरलता से पालन करता रहेगा।

"हथा एक अच्छा साथी बनेगा," उसने उत्तर दिया।

मातुल उसकी ओर बढ़ी, और हथा ने उसे अपनी बाहों के घेरे में बन्द कर लिया। किन्तु जब मातुल की बाहें उसके शरीर के इर्द-गिर्द कसने लगी, तो उसने मातुल के दायें हाथ में पकड़े पत्थर के चाकू को नहीं देखा। सर्वप्रथम उसे उसका आभास उस समय हुआ, जब चाकू का फल उसके बायें कन्धे के नीचे बड़ी बेरहमी से प्रविष्ट हो चुका था। तब हथा ने मातुल की बाहों की पकड़ से छूटने का प्रयत्न किया, और जैसे ही उसने प्रतिरक्षा करनी चाही, वैसे ही वह पुनः उसके साथ विकराल रूप से चिपट गई और पुन उसकी पीठ में उस घातक शस्त्र को बार बार ठूंसने लगी।

हथा ने अपनी अंगुलियाँ उसके गले के चारों ओर कसनी चाही, किन्तु मातुल के पैने दांत उसकी कलाई में गड़ गये। तब अपने दूसरे स्वतन्त्र हाथ

उसने मातुल के मुख पर प्रहार किया। इस बीच में चाकू को उसका हृदय
ल गया, और फिर एक क्षीण कराहट के साथ हथा गुहा के पथरीले फर्श
र अचेत हो गिर पड़ा।

इस बात के जानने की प्रतीक्षा किये विना ही कि वह मर गया है या
नहीं मातुल अन्धकार-मय गुहा से फौरन बाहर निकल आई। तेज़ी के
साथ हिमालय के पठारों पर चढ़, फिर नीचे उतर दूसरी ओर अपनी घाटी में
पहुँच गई। किनारे के साथ साथ, इस बात से अनभिज्ञ कि उसकी जाति के
लोग नये घरों की तलाश में चल पड़े हैं, वह दौड़ती हुई अपनी गुहा की ओर
बढ़ी। जब मातुल अपनी जाति की उजड़ी हुई गुहाओं में पहुँची, उस समय
रात घिर चुकी थी और सारी बस्ती नीरव एवं उजाड़ पड़ी थी।

भूखी, वह छोटी एवं ऊंची गुहाओं में से एक में प्रविष्ट हुई। उस
समय कबीले के पीछे जाना मूर्खता से अधिक नहीं था। रात्रि का अन्धकार
और उसके असंख्य भय पृथ्वी को आवृत किये चले आ रहे थे। उसने एक
वार झपकी ली, तब ही उसकी आंखें चट्टान की चोटी पर होने वाली हलचल
की आवाज़ से खुल गई। सांस रोक, लेटे ही लेटे वह ध्यानपूर्वक सुनने लगी।
उसकी जाति के उजड़े गांव में घूमने वाला कोई मनुष्य अथवा पशु है। मध्य-
रात्रि की नीरवता को भंग करने वाले की आवाज़ ऊँची, और ऊँची होती
चली गई। जीव, वह चाहे कोई भी रहा हो, क्रमवार गुहाओं की खोज कर
रहा था, किन्तु कोई भी उसके योग्य नहीं मिल पा रही थी। अब केवल कुछ
ही क्षणों की देन थी, जब वह उसके छिपने के स्थान तक पहुँच जाता।

मातुल ने अपना चाकू और मज़बूती से पकड़ लिया।

आवाज़ ठीक उसके नीचे के पहाड़ के उभरे हुये भाग में लुप्त हो गई
तब, कुछ क्षणों के पश्चात, वह पुनः शुरू हो गई, किन्तु इस बार उसक
जान में जान आ गई क्योंकि आवाज ढलान पर निरन्तर दूर और दूर हो
चली जा रही थी। अब वह नितान्त लुप्त हो चुकी थी, यद्यपि फिर
अपने भय को संयत करने में उसे घण्टों लग गये। अन्त में उसे गहन निद्रा
आ घेरा।

५

ऊषा की लाली के साथ नानू के पुत्र काकू की आँख खुली। वह अंगड़ाई लेकर उठा। अपनी गुहा के आगे निकले हुये पत्थर पर खड़े होकर उसने बाल रवि के सौन्दर्य को निहारा। उसके पचास फीट ऊपर वह लड़की सो रही थी, जिसे वह प्यार करता था। काकू ने अपने शस्त्रों एवं रीछ की खाल को संभाला, और सहज निःशब्द कदमों से चश्मे की ओर बढ़ा, जहाँ पहुँच उसने अपनी प्यास को शान्त किया। फिर वह जंगल पार कर ब्रह्मपुत्र के किनारे पर पहुँचा। वहाँ उसने अपनी कोपीन और उस खाल को उतार डाला, जो उसके कन्धों को ढके हुए थी, और नदी के जल में डुबकी लेने लगा। दायें हाथ में उसका चाकू था, क्योंकि ब्रह्मपुत्र नदी में विकराल जीवों का कोई अभाव नहीं था। सचेत हो उसने स्नान किया, वह पानी के अन्दर अथवा धरती की ओर से आने वाले शत्रुओं के प्रति एकदम सावधानी रखे हुये था। भय उसे छू तक भी नहीं गया था, क्योंकि वह जानता था कि उसका जीवन पानी, जंगल अथवा पर्वत के विकराल एवं भयावह जन्तुओं से संघर्ष करने का ही दूसरा नाम है; अतः वह सदैव उसके लिये तत्पर रहता था। काकू की दिनचर्या में यह एक आवश्यक कार्य था, एक अविभाज्य आवश्यकता थी।

उसका स्नान सम्पूर्ण हो गया। इसके पश्चात् उसने पुनः अपनी कोपीन को पहना और खाल से कन्धों को ढक लिया। फिर अपने शस्त्रों एवं बोझ को संभाला और अपने पिता के कबीले के पीछे चल पड़ा। उसके ऊपर, जब वह चट्टान के नीचे से गुजरा, उसकी प्रेयसी उसकी उपस्थिति की अनभिज्ञता में सोई हुई थी।

इधर जब मातुल जागी तब सूर्य अपनी दिन-यात्रा काफी तय कर चुका था। मातुल अत्यन्त सावधानी के साथ इधर-उधर देखती हुई चट्टान से नीचे उतर आई। प्रायः बीच-बीच में अपना ध्यान कई बार एक ओर केन्द्रित कर सुनने का प्रयत्न करती रही। उस प्रारम्भिक काल के मनुष्य को बड़े बड़े पक्षी और भयावह उड़ने वाले जन्तु अत्यधिक भयभीत रखते थे। वह जंगल, सागर एवं हवा की आवाज़ों के अतिरिक्त कुछ और नहीं सुन सकी।

सुरक्षा के साथ वह चश्मे तक पहुँच गई, और फिर जंगल में भोजन की तलाश में प्रविष्ट हुई। वह भूख से अधमरी सी हो रही थी। कन्द मूल, फल, टिड्डे, केंचुयें और अन्य छोटे छोटे जन्तु और चिड़ियों तथा रेंगने वाले जन्तुओं के अण्डों की ही उसे भोजन के लिये तलाश थी। अपने पेट की क्षुधाग्नि बुझाने में उसे कोई अधिक समय नहीं लगा। उन दिनों अब की अपेक्षा प्रकृति निश्चित रूप से अधिक उदार थी, क्योंकि उसे अनेक एवं आज की तुलना में कहीं अधिक बड़े पेटों की ज्वालाओं को शान्त करना पड़ता था।

मातुल जंगल पार कर किनारे पर पहुँची। वह स्नान करना चाहती थी, किन्तु अकेले होने से साहस नहीं कर सकी। अब वह इस निष्कर्ष में उलझी हुई थी कि उस की जाति के लोग कौनसी दिशा में गये हैं। वह जानती थी कि साधारणतः यदि वे उत्तर अथवा दक्षिण की ओर बढ़ रहे हैं, तो निश्चय ही वे किनारे की सख्त एवं दबी हुई रेत पर अपने पाँवों के चिह्न छोड़ते गये होंगे, क्योंकि किनारे के साथ साथ यात्रा करना ही सुगम था, किन्तु ज्वार ने इस समय से काफी पूर्व उन चिह्नों को धो दिया होगा। उसने उनके पाँवों के चिह्न उत्तर की ओर जाते हुये देखे, अतः वह किसी उचित निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सकी कि उसकी जाति के लोग कौनसी दिशा में आगे बढ़े हैं।

जब वह किनारे पर खड़ी हुई अपने भविष्य की योजना खोज निकालने में व्यस्त थी, तो उसे यह स्पष्ट हो गया कि यदि कबीला उत्तर की ओर गया होता तो कल पहाड़ियों से लौटते समय वे उसे रास्ते में अवश्य मिल गये होते,

ग्रौर इसलिये, क्योंकि उसकी उनमे मुठभेड नही हुई, वे श्रवश्य ही दक्षिण की ग्रोर गये है।

ग्रौर इस प्रकार उसने अपने कदमों को दक्षिण की ग्रोर अपने कबीले से दूर ग्रौर अपने काकू से दूर, मोड़ दिया।

६

मातुल किनारे के साथ साथ दक्षिण की ओर बढ़ती गई। उसकी दाईं ओर ...ल था, तथा बायें विशाल ब्रह्मपुत्र नदी थी, सागर वह पीछे छोड़ आई ...। अक्लान्त वह बढ़ती गई। उसके लिये वह दुनिया की सीमा थी— उन ...बके पीछे बस बेकार की ही चीज़ें थीं। विशाल नदी का दूसरा किनारा एक ...जीव सा अस्तित्व लिये उसे दिखाई पड़ रहा था, यद्यपि वे सब जानी-...पहचानी वस्तुयें थीं, किन्तु फिर भी एक रहस्य में डूबी हुई थीं, और प्रायः उसके कबीले के लोगों में बातचीत का विषय बनी रहती थीं। वहाँ, उस किनारे पर क्या है, क्या वहाँ भी आबादी है? और यदि हां, तो क्या वहाँ के जीव-जन्तु, स्त्री-पुरुष भी उन्हीं जैसे हैं? मातुल के लिये वे रहस्य के सजीव प्रतिरूप बने हुये थे, जैसे नक्षत्र और ग्रह हमारे लिये आजकल बने हुये हैं।

मातुल के ठीक सामने वाले चढ़ाव के पीछे, पचास अथवा साठ नर, नारी और बच्चे उस छोटी धारा के निकट, जो ब्रह्मपुत्र से मिलती थी, काम करने में व्यस्त थे। जब मातुल उस चढ़ाव के मुहाने पर पहुँची, और उसकी नज़र उन अजनबियों पर पड़ी, वह फौरन ही एक झाड़ी के पीछे अपने पेट के बल लेट गई। वहीं से उसने उन विचित्र अपरिचितों के विचित्र कारनामों को देखा। यह स्पष्ट था कि वे लोग अभी-अभी किसी लम्बे सफर को तय कर आ रहे हैं। वे उन सब मनुष्यों से कई रूप से भिन्न थे, जिन्हें उसने अब तक देखा था। उनके शरीरों पर हिंसक पशुओं की खाल न हो कर घास खाने वाले पशुओं की खालें थीं। उनके सिर की पोशाक बैलों और बारहसिंहों के सींगों से बनी हुई थी, जो उन्हें कुछ भयावह दिखाने में मदद कर रही थी।

किन्तु वह उनके रहने का स्थान था, और जिस कार्य में वे लोग व्यस्त थे, जिसने मातुल को आशातीत रूप से चकित कर दिया था। उनकी गुहायें

एकदम गुहायें नही थी। वे लम्बी लम्बी शाखाओं की बनी हुई थी, जो अन्दर की ओर एक दूसरे से सटी हुई गोल घेरे के रूप में झुकी हुई थीं, और खालों एवं पत्तियों से ढकी हुई थी, अथवा पाम और ताड के बड़े-बडे पत्तो से आवृत थी। पाम और ताड आज भी उसी दशा में नजर आजाते हैं, किन्तु मातुल के समय में उन्हे हाथी का कान कहा जाता था, क्योकि उनकी शकल विशालकाय जीवधारी के उस अंग से हूबहू मेल खाती है।

उन मनुष्यों के शस्त्र भी उन शस्त्रो से एकदम भिन्न थे, जिन से मातुल परिचित थी। पत्थर की कुल्हाडी की शक्ल भी भिन्न थी, और भाला अधिक छोटा और मजबूत था। उसकी नोक मछली मारने के हुक के समान थी, और उसका एक सिरा तांत की बटी हुई रस्सी से बधा हुआ था, जब कि शेष रस्सी की गुच्छी बनी हुई उन की कमर के साथ बधी हुई थी। मातुल को इन मछली मारने वालो का किंचित् भी ज्ञान नही था। उसके अपने कबीले के लोग कभी-कभी मछली पकड़ लिया करते थे, कभी कभी वे अपने भालो से उनका शिकार किया करते थे, किन्तु उन्होंने मछली पकडना व्यापार नही बना लिया था। इसलिये उसे इस बात का कुछ भी पता नही था कि आगन्तुकों के ये भाले सुरक्षा एवं जीवनयापन दोनो के ही शस्त्र का काम सरंजाम देते हैं।

उसके लिये सबसे आकर्षक एवं आश्चर्यकारी वह काम था, जिसमें वे लोग जुटे हुये थे। उन्होंने अनेक बड़े-बड़े पेड़ो को गिरा दिया था, जिन्हें उन्होंने विभिन्न लम्बाइयो में जला और काट डाला था, जो पन्द्रह से बीस फुट तक थी। अपने पत्थर के कुल्हाडे से उन्होंने लट्ठो की ऊपरी खुरदुरी और टेढ़ी-मेढ़ी सतह को छील कर साफ कर दिया था। बीच के मुलायम और सारपूर्ण भाग को खोखला कर, उसमें आग जला दी थी।

मातुल उन के इस श्रम पर आश्चर्य के अतिरिक्त कुछ और नही कर सकी। उसने देखा कि नारी और पुरुष अग्नि को सावधानी के साथ आगे बढ़ाते जा रहे हैं, और उस लपट को पानी से बुझाते जा रहे हैं जो पेड के तने के बीच से निकल कर इधर उधर के भाग को जला रही है। गहराई,

श्रौर गहराई तक उन्होंने उस आग को चालू रखा, अन्त में अग्नि द्वारा तपाई हुई लकड़ी का पतला सा वाह्य अवशेष रह गया ।

अपने सम्मुख होने वाले विचित्र दृश्यों को देखने में मातुल इतना खो गई कि दाईं ओर के जंगल से आकर अपने पीछे रुकने वाले आदमी की पहुँच को वह नहीं जान सकी । आगन्तुक लम्बा और सुडौल था । उसके कन्धों और पीठ को ढकती हुई एक भैंसे की खुरदरी खाल लटक रही थी, जिसकी पूंछ उसके पीछे जमीन के साथ रगड़ खा रही थी। उसके सिर पर बैल की खोपड़ी मजबूती के साथ जमी हुई थी— प्रारम्भिक काल का कवच, जिस पर बैल की ही सूखी खाल चढ़ी हुई थी और छोटे छोटे तथा मजबूत सींग उसकी कानपटी से आगे को झुक कर समकोण बना रहे थे ।

उसके दायें हाथ में छोटी सी मछली मारने की बर्छीनुमा बंसी थी और उसकी कमर के साथ तांत की रस्सी की गुच्छी लटक रही थी । शरीर के अगले भाग को ढकने में असमर्थ पोशाक, पुरुष के सुगठित शरीर का प्रदर्शन करा रही थी । कटिप्रदेश में वह हरिण की खाल पहने हुये था, जिसमें उसका पत्थर का चाकू और कुल्हाड़ा लटक रहा था ।

कुछ मिनटों तक वह लड़की की ओर देखता हुआ खड़ा रहा, उसकी आंखें उसके सुगठित अंगों की सुन्दरता, सुडौलता एवं लचीलेपन से चौंधिया रही थी । तब खूब सावधानी के साथ, वह उसकी ओर बढ़ा । इस प्रकार बढ़ने वाला नौकानिर्माताओं की जाति का शूर था । शूर ने अपने जीवन में इससे पूर्व इतनी सुन्दर नारी नहीं देखी थी । उसे देखने का ही अर्थ था, कि वह उसे चाहता है । शूर उसे अवश्य अपना बनायगा । वह लगभग उसके ऊपर गिर ही चुका था, किन्तु तब ही एक सूखी टहनी उसके पांव के नीचे आकर कुचली गई ।

अकस्मात् चौंकी हुई हरिणी के समान मातुल एकदम उठ कर खड़ी हो गई । उसी क्षण शूर उसे पकड़ने के लिये आगे झपटा । वह उसके और उस कबीले के बीच में थी, जिसे वह देख रही थी । उनकी ओर दौड़ने का सीधा

अर्थ था, अवश्य ही पकड़े जाना। बन्दूक की गोली के समान वह सीधी शूर की फैली हुई बाहों की ओर घूमी, किन्तु जैसे ही वह बाहें उसे दबोच लेने के लिये बन्द हुईं, तो शूर उनमें वायु के अतिरिक्त कुछ और कैद नहीं कर सका। मातुल युवक बहादुर के प्रबल उत्सुक बाहुपाश से एक दम नीचे झुक कर, डरी हुई हरिणी को भाँति उत्तर की ओर, नदी के किनारे के साथ साथ, चौकड़ी भरती हुई बेतहाशा भागी चली जा रही थी।

उसके इस प्रकार धोखा देकर जाने पर शूर ने उसे रुकने के लिये आवाज दी, किन्तु भय से परिपूर्ण मातुल और भी हवा की तेजी से दौड़ चली। उसके कोई सौ कदम पीछे शूर दौड़ा आ रहा था। वह जानता था, कुछ दूर तक तो वह अवश्य उसकी पहुँच से बाहर रहेगी, किन्तु अन्त में, उसके शक्तिशाली पाँव लड़की को आगे बढ़ने से अवश्य रोक लेंगे। वह अब ही सुस्त पड़ने लगी थी। उनके बीच का फासला अब और नहीं बढ़ पा रहा था। शीघ्र ही, उसका भी अन्त हो जायगा। वह उसके निकट पहुँच जायगा............ और फिर।

७

हिमालय पर्वत श्रेणी के उत्तर की ओर काकू अपने पिता नानू के कबील में पुनः जा मिला। वह वहाँ उनके विश्राम के दौरान में आया था। जैसे ही वह वहाँ पहुँचा, उन्होंने उसकी अगवानी की। पर उसने उनके मुख पर छाई हुई मलीनता को देखा। युवा स्त्रियों ने उसकी ओर रंजीदा आँखों से देखा। उसके युवा बहादुर साथी उसके द्वारा नाम लिये जाने पर मुस्कराये नहीं।

वह सीधा अपने पिता नानू के पास पहुँचा। उसने जाति के सरदार को आग के छोटे से कुण्ड के निकट भू के साथ बैठे हुये पाया, जहाँ मिट्टी चढ़ा हुआ बत्तख भुन रहा था।

उसका पिता उठा और उसे शाबाशी दी। अपने पुत्र को पुनः अपने सम्मुख पा वृद्ध की आँखों में प्रसन्नता झलक आई, किन्तु उसके होठों पर मुस्कान नहीं खेली। उसने अर के सिर और ख़ाल पर भी दृष्टिपात किया।

"ऊ नहीं लौटा?" नानू ने पूछा।

"ऊ नहीं लौटा," पुत्र ने उत्तर दिया।

नानू के पुत्र काकू ने स्त्रियों और शोकग्रस्त बहादुरों की ओर एक बार फिर देखा। जिसे वह तलाश कर रहा था, वह वहाँ नहीं थी। उसकी माँ आई और उसे चूमा, उसकी बहिन ऊना ने भी वैसा ही किया।

"मातुल कहाँ है?" काकू ने पूछा।

उसकी माँ और बहिन ने एक दूसरे को देखा और फिर उसके पिता की ओर देखा। सरदार नानू ने भू की ओर देखा। भू उठा और युवक काकू के निकट आया। उसने अपना हाथ काकू के कन्धे पर रखा।

"जब से तुम अपनी मां के गर्भ में आये थे," वह बोला "तब से मैं तुम्हें हमेशा प्यार करता आया हूँ। मेरे अपने पुत्र के पश्चात् मैंने तुम्हें ही प्यार किया है। मुझे आशा थी कि किसी दिन तुम मेरे ही पुत्र बन जाओगे, क्योंकि मैंने देखा था तुम मेरी पुत्री मातुल से प्यार करते थे। किन्तु अब मातुल हया के साथ चली गई है। हमें नहीं मालूम कि यह किस प्रकार हुआ, किन्तु कोर की पुत्री रा कहती है कि वह अपनी इच्छा से गई है।"

उसने आगे और कुछ नहीं कहा।

"यह झूठ है," नानू का पुत्र काकू चिल्लाया। "मातुल हया या किसी अन्य के साथ स्वेच्छा से कभी नहीं जायगी। वे कब गये थे? वे किस ओर गये थे? मुझे बताओ, मैं पीछा कर मातुल को वापिस ले आऊंगा, और फिर उसके ही अधरों से यह स्पष्ट हो जायगा, कि रा झूठ बोलती है। यदि वह अभी तक जीवित है, तो मैं उसे अवश्य वापिस ले आऊंगा। किन्तु जब तक हया से वह छुटकारा नहीं पा लेगी है, तब तक वह मृत है, क्योंकि वह काकू के अतिरिक्त किसी अन्य से प्रेम नहीं करती है। मुझे अब कुछ नहीं कहना है। वे किस ओर गये थे?"

कोई कुछ भी नहीं बता सका। उन सब को केवल इतना ही मालूम था कि जब जाति अपने पुराने घरों को छोड़ कर चली थी, तब हया और मातुल नज़र नहीं आये थे। इस पर रा ने आगे बढ़कर कहा था कि वे दोनों साथ गये हैं। जब उसने रा से इस बारे में प्रश्न किया तो वह कुछ और अधिक नहीं ज्ञान प्राप्त कर सका। बल्कि रा अपनी बात पर दृढ़तापूर्वक जमी रही कि मातुल अपनी इच्छा से गई है।

"और क्या नानू का पुत्र, काकू उस औरत का पीछा कर, जिसने किसी दूसरे को अपना साथी चुन लिया है, अपनी मूर्खता का परिचय देगा, जबकि जाति में उस जैसी सुन्दर कई अन्य लड़कियां हैं, जिनमें से किसी को भी, नानू का पुत्र काकू अपने लिये चुन सकता है," रा ने कहा।

उसके शब्दों को सुन कर युवक काकू को उसके कथन के पीछे छिपी

प्रेरणा का ज्ञान हो गया, और अब उसे इस बात का और भी दृढ़ निश्चय हो चला कि रा ने किंचित् भी सत्य नहीं कहा है। उसके शब्दों के पीछे भूत काल की अनेक छोटी छोटी घटनायें स्पष्ट उभर आईं जिन्हें उस समय काकू ने अनदेखा ही छोड़ दिया था, क्योंकि उसका मस्तिष्क मातुल के कारण पूर्णतः अपने होश हवास खो चुका था। यह इस बात का सजीव प्रमाण था, कि रा काकू को अपना सहवासी बनाना चाहती है।

युवक अपने पिता के निकट लौट आया।

"मैं जाता हूँ," वह बोला, "सत्य जान लेने के पूर्व लौट कर नहीं आऊंगा।"

"जाओ, मेरे पुत्र," वह बोला, "तुम्हारे पिता का हृदय तुम्हारे साथ है।"

अभंग शान्ति में नानू का पुत्र, काकू पुनः अपने कदमों के नये चिह्न डालता हुआ दक्षिण में स्थित पर्वत श्रेणी की ओर बढ़ चला। वह सीधा अपने पुराने निवासस्थान पर पहुँच कर हुथा और मातुल की गन्ध खोज निकाल लेना चाहता था। उसके हृदय में हुथा के इस अशिष्ट कार्य के प्रति एक महान् घृणा का प्रतिपादन हो चुका था। काकू की जाति जानवरों की श्रेणी से काफी आगे बढ़ चुकी थी। उन्होंने कुछ मानवीय अधिकारों को मान लिया था, जिनमें से मुख्य मनुष्य का अपने जीवन साथी पर अचल अधिकार था, और इससे भी एक कदम आगे, नारी को अपना साथी चुनने का स्वयं अधिकार था। मातुल ने अपना सहवासी हुथा को चुना है, एक क्षण के लिये भी काकू को इस पर विश्वास नहीं हो पाता था। वह मातुल की साहसिक प्रकृति से भली भाँति परिचित था, और यह जानते हुये, वह समझ गया कि यदि मातुल स्वेच्छा से हुथा को अपना सहवासी चुनती, तो वह निश्चय ही जाति की प्रथा के अनुसार इस बात को सबके सामने स्वीकार कर लेती। नहीं, मातुल कदापि किसी मनुष्य के साथ नहीं भागेगी, समय पड़ने पर स्वयं उसके साथ भी नहीं।

चट्टानों को जब वह आधी पार कर चुका, तो उसे क्षीण कराहट सुनाई

दी, जो स्पष्टत: उसकी दाईं ओर की गुहा से आ रही थी। उसके पास ऐसी व्यर्थ की बातों में खोने के लिये समय नहीं था, किन्तु उस सुनाई पड़ने वाली कराहट में मानवीय आवाज़ की झलक थी, अतः वह अकस्मात् ही अधिक सावधानी से कान लगा कर उसे सुनने लगा। एक क्षण बाद वह पुनः सुनाई पड़ी। नहीं, इसमें कोई सन्देह नहीं हो सकता, कि वह आवाज़ केवल मनुष्य के गले से ही निकली हुई है। सचेष्ट हो काकू निःशब्द पगों से गुहा के मुँह की ओर बढ़ा, जिसमें से कराहट आने का अनुमान था। प्रवेश द्वार से उसने जो कुछ देखा, उसे देख वह एकाएक ठिठक कर रुक गया।

वहाँ, गुहा के द्वार से आने वाले धुन्धले प्रकाश में उसने देखा—हया रुधिर से लथपथ पड़ा है, उसकी साँस मन्द-मन्द चलती पड़ चुकी है। काकू ने उसे उसका नाम ले कर पुकारा। हया ने अपनी आँखें खोल दीं। जब उसने देखा कि उसके निकट कौन खड़ा है, तो उसने अपने कन्धे उचकाये और शान्त ही पड़ा रहा मानो कहना चाहता हो, मेरे किये की मुझे सबसे कठोर सज़ा मिल चुकी है— अब तुम और सज़ा नहीं दे सकोगे।

“मानुल कहाँ है?” काकू ने पूछा।

हया ने अपना सिर हिला दिया। उसके सिर को अपने हाथों में उठा, काकू उसके निकट घुटनों के सहारे बैठ गया।

“दोस्त, मानुल कहाँ है,” मरते हुये युवक को हिलाकर, उसने चिल्लाकर पूछा। “मरने से पहले मुझे बताते जाओ। मैं तुमसे यह नहीं पूछता कि क्या वह तुम्हारे साथ स्वेच्छा से आई थी। क्योंकि मैं जानता हूँ, वह स्वेच्छा से नहीं आई थी। ...... मैं तुमसे केवल यही पूछना चाहता हूँ कि तुमने उसके साथ क्या किया, क्या वह जीवित है और यदि वह जीवित है, तो कहाँ है?”

हया ने बोलने का प्रयत्न किया। प्रयास उसे महँगा पड़ा। किन्तु, अन्त में वह कुछ शब्द बुदबुदाने में समर्थ हो सका।

“उसने ही ...... ऐसा ...... किया ...... है,” अन्तिम [illegible] उसने

रणा का ज्ञान हो गया, और अब उसे इस बात का और भी दृढ़ निश्चय हो
ला कि रा ने किंचित् भी सत्य नहीं कहा है। उसके शब्दों के पीछे भूत काल
ी अनेक छोटी छोटी घटनायें स्पष्ट उभर आईं जिन्हें उस समय काकू ने
नदेखा ही छोड़ दिया था, क्योंकि उसका मस्तिष्क मातुल के कारण पूर्णतः
अपने होश हवास खो चुका था। यह इस बात का सजीव प्रमाण था, कि रा
काकू को अपना सहवासी बनाना चाहती है।

युवक अपने पिता के निकट लौट आया।

"मैं जाता हूँ," वह बोला, "सत्य जान लेने के पूर्व लौट कर नहीं आऊंगा।"

"जाओ, मेरे पुत्र," वह बोला, "तुम्हारे पिता का हृदय तुम्हारे साथ है।"

अभंग शान्ति में नानू का पुत्र, काकू पुनः अपने कदमों के नये चिह्न डालता हुआ दक्षिण में स्थित पर्वत श्रेणी की ओर बढ़ चला। वह सीधा अपने पुराने निवासस्थान पर पहुँच कर हथा और मातुल की गन्ध खोज निकाल लेना चाहता था। उसके हृदय में हथा के इस अशिष्ट कार्य के प्रति एक महान् घृणा का प्रतिपादन हो चुका था। काकू की जाति जानवरों की श्रेणी से काफी आगे बढ़ चुकी थी। उन्होंने कुछ मानवीय अधिकारों को मान लिया था, जिनमें से मुख्य मनुष्य का अपने जीवन साथी पर अचल अधिकार था, और इससे भी एक कदम आगे, नारी को अपना साथी चुनने का स्वयं अधिकार था। मातुल ने अपना सहवासी हथा को चुना है, एक क्षण के लिये भी काकू को इस पर विश्वास नहीं हो पाता था। वह मातुल की साहसिक प्रकृति से भली भाँति परिचित था, और यह जानते हुये, वह समझ गया कि यदि मातुल स्वेच्छा से हथा को अपना सहवासी चुनती, तो व निश्चय ही जाति की प्रथा के अनुसार इस बात को सबके सामने स्वीकार क लेती। नहीं, मातुल कदापि किसी मनुष्य के साथ नहीं भागेगी, समय पड़ पर स्वयं उसके साथ भी नहीं।

चट्टानों को जब वह आधी पार कर चुका, तो उसे क्षीण कराहट सुन

ी, जो स्पष्टतः उसकी दाईं ओर की गुहा से आ रही थी। उसके पास ऐसी व्यर्थ की बातों में खोने के लिये समय नहीं था, किन्तु उस सुनाई पड़ने वाली कराहट में मानवीय आवाज की झलक थी, अतः वह अकस्मात् ही अधिक सावधानी से कान लगा कर उसे सुनने लगा। एक क्षण बाद वह पुनः सुनाई पड़ी। नहीं, इसमें कोई सन्देह नहीं हो सकता, कि वह आवाज केवल मनुष्य के गले से ही निकली हुई है। सचेष्ट हो काकू निःशब्द पगों से गुहा के मुँह की ओर बढ़ा, जिसमें से कराहट आने का अनुमान था। प्रवेश द्वार से उसने जो कुछ देखा, उसे देख वह यकायक ठिठक कर रुक गया।

वहाँ, गुहा के द्वार से आने वाले धुन्धले प्रकाश में उसने देखा— हया रुधिर से लथपथ पड़ा है, उसकी साँस अत्यन्त क्षीण पड़ चुकी है। काकू ने उसे उसका नाम ले कर पुकारा। हया ने अपनी आँखें खोल दीं। जब उसने देखा कि उसके निकट कौन खड़ा है, तो उसने अपने कन्धे उचकाये और शान्त ही पड़ा रहा मानो कहना चाहता हो, मेरे किये की मुझे सबसे कठोर सज़ा मिल चुकी है— अब तुम और सज़ा नहीं दे सकोगे।

"मातुल कहाँ है?" काकू ने पूछा।

हया ने अपना सिर हिला दिया। उसके सिर को अपने हाथों में उठा, काकू उसके निकट घुटनों के सहारे बैठ गया।

"दोस्त, मातुल कहाँ है," मरते हुये युवक को हिलाकर, उसने चिल्लाकर पूछा। "मरने से पहले मुझे बताते जाओ। मैं तुमसे यह नहीं पूछता कि क्या वह तुम्हारे साथ स्वेच्छा से आई थी। क्योंकि मैं जानता हूँ, वह स्वेच्छा से नहीं आई थी। ...... मैं तुमसे केवल यही पूछना चाहता हूँ कि तुमने उसके साथ क्या किया, क्या वह जीवित है और यदि वह जीवित है, तो कहाँ है?"

हया ने बोलने का प्रयत्न किया। प्रयास उसे महँगा पड़ा। किन्तु, अन्त में वह कुछ शब्द बुदबुदाने में समर्थ हो सका।

"उसने ही ...... ऐसा ...... किया ...... है," असीम वेदना से उसने

कहा। "फिर .... वह ...... चली ...... गई। मुझे ...... नहीं ...... मालूम ......" वह कराहा और चिर निद्रा में सो गया।

काकू ने पुनः उसे गुहा के पथरीले फर्श पर लिटा दिया और तेज़ी से गुहा के बाहर निकल आया। उसने चट्टान का चप्पा-चप्पा छान मारा। एक एक गुहा को खोजा और नाक से मातुल की गंध सूंघने का प्रयत्न किया। आधा घण्टा पश्चात् चट्टान और गुहाओं को कई बार तलाश कर लेने पर वह ब्रह्मपुत्र की कल कल करती हुई विशाल जलधारा के किनारे पर पहुँचा।

यहां, उसे मातुल के छोटे से सैन्डल के अनेक स्पष्ट पदचिह्न मिले, जो किनारे की गीली मुलायम रेत पर उभर आये थे। पदचिह्न दक्षिण की ओर चले जा रहे थे, और काकू भी दक्षिण की ओर तेजी से बढ़ चला। पदचिह्न सीधे उसे उनके पुराने निवासस्थान पर ले गये। वहां, काकू को इस बात का प्रमाण मिल गया कि मातुल ने उस गुहा के ऊपर वाली गुहा में रात व्यतीत की थी जिसमें उसने रात बिताई थी। गुहा में घास का बिछौना लगा हुआ था, और वहां प्रफुल्लदायिनी गन्ध भी वर्तमान थी, जो काकू के लिये असाधारण रूप से परिचित थी।

जब उसे इस बात का ज्ञान हुआ कि मातुल उसके इतनी निकट थी, और उसने अपनी अदूरदर्शिता से उसे आगे जाने दिया— जहां कोई भी नहीं जाता— विभिन्न खतरों में डूब जाने के लिये, तो उसका हृदय अपने प्रति ग्लानि से भर उठा।

चट्टान की तलहटी में पहुंचने पर उसे पुनः मातुल के पदचिह्न मिल गये। पुनः वह किनारे के साथ साथ दक्षिण की ओर बढ़ रहे थे। तेज़ी से वह उनके सहारे आगे बढ़ता गया, अन्त में वे एक ऊँचे स्थान की चोटी पर उगी एक झाड़ी के पीछे जाकर खत्म हो गये। उसके पूर्व कि काकू यह समझे, पदचिह्नों की दक्षिणी सीमा यहीं तक है, मातुल की भांति उसने भी उस ऊँचाई के पीछे मनुष्यों को विचित्र व्यापार में व्यस्त देखा। वह समझ गया कि अब से कुछ घण्टे पूर्व इसी दृश्य ने ही मातुल को यहां रुकने के लिये विवश किया होगा।

और तब ही उसने वह स्थान देखा जहाँ पेट के सहारे नेटी मानुल उन्हें गौर से देख रही थी— जिस प्रकार वह उन्हें देख रहा है। कुछ क्षणों तक वह लेटा हुआ कार्य में व्यस्त मनुष्यों को देखता रहा, और खालों के झुण्ड और लकड़ी के टुकड़ों से बने घरों के बीच में मानुल के वहाँ बन्दी होने के चिह्नों को खोजता रहा।

काकू ने नौका कभी नहीं देखी थी, और न ही कभी अनुमान लगाया था कि वैसी कोई चीज़ हो भी सकती है। उसकी जाति के लोग न जाने कितने समय से शिकार करते आये थे। वे मध्य एशिया के पहाड़ों से उतर कर कुछ पीढ़ियों पूर्व यहाँ आये थे। तब उनके पूर्वजों ने, प्रथम बार विशाल जल-राशि वाली नदी के दर्शन किये थे। फिर उन्हें अभी तक नदी के पानी में तैरने की कोई आवश्यकता भी तो नहीं पड़ी थी, न ही सुदूर दक्षिण में नदी के डेल्टा पर रहने वाले नौका-निर्माताओं से उनकी मुलाकात हो पाई थी।

जीवन में आज प्रथम बार काकू ने नौका और नौका-निर्माताओं को देखा था। उसने प्रथम बार नकली घरों को देखा था, और काकू को ये सनातन गुफाओं की तुलना में अरक्षित एवं ऐश्वर्यहीन लगे। नौका-निर्माता अपने इस नये शिविर के निर्माण में कई दिनों से लगे हुये थे। किस कारणवश उन्हें अपने पुरातन निवास को छोड़कर दूर उत्तर में आना पड़ा, इसका अनुमान कौन लगा सकता है? सम्भवतः आपसी युद्ध इसका कारण रहा हो; अथवा किसी नई शक्ति की उत्पत्ति ने उन्हें खदेड़ दिया हो, और उनकी जाति समय की समाप्ति तक दुनियाँ की कठिनाइयों के बीच असान्त हो घूम रही हो।

काकू ने देखा उन सब काम करने वालों में से एक लम्बा-तगड़ा दैत्याकार युवक अधिक तेज़ी से काम कर रहा था। उसकी शीघ्रता में उत्साह का अधिक सामन्जस्य था। काकू नहीं समझ सका कि गिरे हुये पेड़ के तने के साथ इतनी मेहनत करने का क्या अर्थ हो सकता है। काकू को इस प्रकार का काम पसन्द नहीं था। यह सत्य था कि आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त उसने कभी कोई और शारीरिक परिश्रम नहीं किया था, किन्तु

भी वह समझ गया था कि यह उसे पसन्द नहीं। वह शिकारी था, बहादुर था तो भी उसके अविकसित एवं असभ्य मस्तिष्क में कठिन काम के प्रति असन्तोष था। अन्त में, देखते देखते थक जाने पर, उसने पुनः उन पदचिह्नों की ओर अपने आपको केन्द्रित किया, जिनका वह पीछा करता चला आ रहा था। इन झाड़ियों के पीछे लेटे रहने के पश्चात् मातुल कहाँ गई?

काकू उठा और तब ही उसे मातुल के उछलने और तेज़ी से भागने के चिह्न मिल गये। उसके फौरन बाद ही उसे पीछे-पीछे शूर के पदचिह्न मिले। काकू का खून खौलने लगा। दिल की धड़कनें बढ़ गईं और कानों से टकराने लगीं— मातुल, उसकी मातुल, खतरे में है।

उसने देखा कि कहाँ मातुल ने उस आगन्तुक को धोखा दिया था। उसने रेत पर उभरे पीछा करने के लिये, शूर के तेज़ी से घूमने के स्पष्ट चिह्नों को देखा। उसने पाया कि दो मनुष्य किनारे के साथ-साथ उत्तर की ओर तेज़ी से दौड़ते हुये गये हैं— पुरुष नारी का पीछा कर रहा था, और तब ही उसके आश्चर्य की सीमा नहीं रही, जब उसने देखा कि मनुष्य अकस्मात् रुक गया है, और फिर कुछ क़दम आगे उठाये हैं, कुछ समय तक नदी की ओर देखता हुआ खड़ा रहा है और तब घूम कर, अमानुषिक तेज़ी के साथ दौड़ता हुआ विचित्र शिविर को लौट गया है।

और लड़की के पदचिह्न उत्तर की ओर, शायद उस स्थान से जहाँ वह आदमी रुका था, सौ क़दम की दूरी तक आगे बढ़ते गये। काकू आसानी से उनका पीछा करता रहा, क्योंकि वे सफ़ेद चमकीले रेत पर एकदम ताज़े थे।

और अकस्मात् वे खत्म हो गये— एक आश्चर्यजनक रूप से। पदचिह्न असम्बद्ध रूप से जंगल और नदी के किनारे के मध्य में पहुँच कर खत्म हो गये थे। उनके निकट, इधर-उधर, विशाल, विस्तृत, अदलित रेत था। वे नदी की ओर नहीं गये थे। वे जंगल की ओर नहीं पहुँचे थे। वे रुक गये थे मानों किनारे के किसी विशाल खड्ड ने मातुल को निगल लिया हो। किन्तु वहाँ तो कोई भी खड्ड नहीं था। काकू रुक गया और प्रत्येक दिशा में गौर से देखता

रहा। वहाँ किसी भी जीवित वस्तु के पदचिह्न नहीं थे। मातुल कहाँ गई--उसका क्या हुआ ?

अपरिपक्व एवं अशुभ विचारों में डूबा काकू कुछ समय तक खड़ा रहा और फिर नौका-निर्माताओं के गाँव की ओर बढ़ चला। काकू प्रकृतिविरुद्ध बातों को कुछ समझता था, और इसलिये वह पहले मातुल के अदृश्य होने के सबसे निकटस्थ, प्रत्यक्ष एवं वास्तविक कारण की ओर मुड़ा— वह व्यक्ति जो उसका पीछा कर रहा था। और वह आदमी उन अपरिचितों के गाँव को लौट गया है, जो गिरे हुये पेड़ के तने के हृदय को अतुल परिश्रम के साथ जलाकर खोखला कर रहे थे।

काकू गाँव की समीपवर्ती उसी झाड़ी के पीछे गया, जहाँ से वह पहले लेट कर देख रहा था। वहाँ वह पुनः लेट गया और देखने लगा। उसे इस बात का कुछ-कुछ निश्चय हो चुका था, कि वे व्यक्ति ही मातुल के अदृश्य हो जाने के लिये उत्तरदायी हैं। वे जानते हैं, कि मातुल कहाँ है। काकू जानता था कि मातुल का पीछा करने वाला व्यर्थ ही उसका पीछा नहीं कर रहा था, बल्कि वह उसे अपनी सहवासिनी बना लेना चाहता था। काकू ने अपरिचितों की स्त्रियाँ देखी थीं ······ उनकी मातुल के सामने वे बन्दरियाँ सी लगती थीं। न जाने क्यों बार-बार काकू को यह लगने लगता था, कि मातुल के पीछे दौड़ने वाला वही व्यक्ति है, जो उस समय बड़े उत्साह के साथ उसके सामने, अपनी जाति के लोगों के बीच काम करने में व्यस्त है, इसलिये काकू उसकी हरकतों को गौर से देख रहा था।

अन्त में धूर की नाव तैयार हो ही गई। नाव तैयार हो जाने पर उसने अन्य आदमियों को बुलाया और उन लोगों ने मिलकर नाव को पानी में उतार दिया। इसके पश्चात् धूर कूदकर नाव पर चढ़ गया, तब एक औरत ने आगे बढ़कर बाँस के समान दो लट्ठे धूर को पकड़ा दिये, जो नीचे से चौड़े और ऊपर से पतले थे। ये चप्पू थे। चप्पू के सहारे धूर अपनी प्र[illegible] नौका को लेकर नदी की गर्जना करती हुई धारा के विपरीत ꞊

काकू आंखें फैलाये उसे देखता रहा। उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहा। किन्तु वह आदमी जा कहाँ रहा है। तब ही काकू ने देखा वह नदी के उस किनारे पर जा रहा है, जो उसके लिये रहस्य का एक विपय है। उसकी पहुँच की दुनियां से वाहर है। उस वहादुर की बुद्धिमानी से उसने कुछ सीखा, समझा, मनुष्य की बुद्धि और परिश्रम सब कुछ कर सकता है। काकू चाहता था कि वह उस पार के रहस्य में जा सके ...... वचपन से ही उसकी यह साध थी। इन मनुष्यों ने उसका उपाय निकाल लिया है। काकू ने कुछ सीख लिया है--- एक वायुयान भी उसे इतना अधिक चकित नहीं कर सकता था, जितना कि भद्दे प्रकार से किये गये खोखले ने कर दिया था।

कुछ देर तक नदी के वक्ष को चीरकर जाने वाले मनुष्य को वह देखता रहा। इसके पश्चात् उसने पुनः अपने ध्यान को उन काम करने वालों पर केन्द्रित किया। उसने देखा कि वे लोग भी तेज़ी से अपनी नावें तैयार करने में व्यस्त थे। वे आपस में भूत-भविष्य की वातें कर रहे थे, और कभी-कभी ज़ोर से भी वोल उठते थे, क्योंकि वे लोग काफी दूर तक फैले हुये थे। यदा-कदा काकू के कान में भी उनके शब्द पड़ जाते थे। उनकी भापा उसकी भापा के ही समान थी। शीघ्र ही काकू को पता लग गया कि वे लोग उसी व्यक्ति के वारे में वातें कर रहे हैं, जो अभी-अभी नाव पर सवार हो कर गया है। साथ ही वह उसके वहादुरी के कारनामों का भी वयान कर रहे थे। कांकू ने कुछ अधिक सुनने की इच्छा की। वह सावधानी के साथ रेंगता हुआ अपने दायीं ओर जंगल के अन्दर वढ़ा, जो अजनवियों के शिविर को घेरे हुये था। कुछ ही क्षणों में वह उन लोगों के शिविर के पिछले भाग में पहुँच गया। तब वह जंगल से निकल कर ऊँची घास के मैदान के निकट छिपता हुआ वहाँ पहुँच गया, जहां अजनवियों ने अपने घर वनाये हुये थे। जब उसने घास के पीछे से झांक कर देखा, तो उसे शिविर का नजारा साफ़ दिखाई पड़ने लगा। उसने सम्पूर्ण शिविर के चारों ओर राख का घेरा देखा जो रात के समय शिकारी जन्तुओं से सुरक्षा-पंक्ति का काम देनी वाली अग्नि का अवशेप था। उसने प्रत्येक झोंपड़ी के आगे खाना पकता हुआ पाया। उसने मिट्टी के वर्तन

देखे जो उसके लिये एकदम नई चीज़ थे। उसने बच्चों, औरतों और मर्दों को देखा। उनमें और उसकी जाति के लोगों में कोई विशेष अन्तर नहीं था, किन्तु उनका पहनावा एवं अस्त्र-शस्त्र अवश्य भिन्न थे। अब वह उनकी प्रत्येक बातचीत सुन सकता था।

"वह अवश्य ही सुन्दर रही होगी", एक आदमी कह रहा था, "अन्यथा घूर कभी भी इस अपरिचित नदी के पार वाले उस विचित्र भू-भाग पर, उसकी खोज में कभी नहीं जाता।" वह ज़ोर से हँसा, एक युवा स्त्री की ओर देखा, जो उसके निकट बैठी बच्चों को दूध पिला रही थी।

युवा स्त्री ने उसकी ओर मुँह बना दिया।

"उसे वापिस तो ले आने दो," वह चिल्लाकर बोली। "वह कदापि इतनी सुन्दर नहीं रह सकेगी। मैं उसके चेहरे के साथ प्यार करूंगी।" और वह अपनी खाल को नोंच कर दिखाने लगी।

"जब वह उसे उठाकर ले गया, तो घूर अत्यन्त कुपित हुआ," पुरुष ने अपना कथन जारी रखा। "वह उसके ऊपर लगभग अपना हाथ रख चुका था। किन्तु वह उसे ढूंढ निकालेगा, यद्यपि यह कहना कठिन है, कि उसे वापिस लेने के लिये उस औरत नाम की कोई चीज़ बची है अथवा नहीं। मैं स्वयं ही इस बात से शंकित हूँ, और समझता हूँ कि घूर का इस प्रकार समय बरबाद करना मूर्खता से कुछ अधिक नहीं है।"

काडू आश्चर्य-सागर में गोते खाने लगा। क्या यह सम्भव है कि वह आदमी, जिसे ये लोग घूर कह रहे हैं, उस किनारे पर मातुल का पीछा करने गया है? मातुल वहाँ किस प्रकार पहुँच सकी होगी? यह एकदम असम्भव है। तब ही उनकी अगली बातचीत से उसका रहा-सहा संशय भी मिट गया, उसके सचेत कानों ने सुना कि वह आदमी किसी औरत का पानी के पार वाले विचित्र प्रदेश में पीछा करने गया है। उस औरत का, जिसने उसे चकाचौंध कर दिया था, और जो उसे धोखा देकर भाग निकली थी। मातुल के अतिरिक्त वह और कौन हो सकती थी।

काकू आंखें फैलाये उसे देखता रहा। उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना ीं रहा। किन्तु वह आदमी जा कहाँ रहा है। तब ही काकू ने देखा वह नदी उस किनारे पर जा रहा है, जो उसके लिये रहस्य का एक विषय है। सकी पहुँच की दुनियां से वाहर है। उस वहादुर की वुद्धिमानी से उसने कुछ ीखा, समझा, मनुष्य की वुद्धि और परिश्रम सब कुछ कर सकता है। काकू चाहता था कि वह उस पार के रहस्य में जा सके ...... वचपन से ही उसकी यह साध थी। इन मनुष्यों ने उसका उपाय निकाल लिया है। काकू ने कुछ सीख लिया है— एक वायुयान भी उसे इतना अधिक चकित नहीं कर सकता था, जितना कि भद्दे प्रकार से किये गये खोखले ने कर दिया था।

कुछ देर तक नदी के वक्ष को चीरकर जाने वाले मनुष्य को वह देखता रहा। इसके पश्चात् उसने पुनः अपने ध्यान को उन काम करने वालों पर केन्द्रित किया। उसने देखा कि वे लोग भी तेज़ी से अपनी नावें तैयार करने में व्यस्त थे। वे आपस में भूत-भविष्य की वातें कर रहे थे, और कभी-कभी ज़ोर से भी वोल उठते थे, क्योंकि वे लोग काफी दूर तक फैले हुये थे। यदा-कदा काकू के कान में भी उनके शब्द पड़ जाते थे। उनकी भाषा उसकी भाषा के ही समान थी। शीघ्र ही काकू को पता लग गया कि वे लोग उसी व्यक्ति के वारे में वातें कर रहे हैं, जो अभी-अभी नाव पर सवार हो कर गया है। साथ ही वह उसके वहादुरी के कारनामों का भी वयान कर रहे थे। काकू ने कुछ अधिक सुनने की इच्छा की। वह सावधानी के साथ रेंगता हुआ अपने दायीं ओर जंगल के अन्दर वढ़ा, जो अजनवियों के शिविर को घेरे हुये था। कुछ ही क्षणों में वह उन लोगों के शिविर के पिछले भाग में पहुँच गया। तव वह जंगल से निकल कर ऊँची घास के मैदान के निकट छिपता हुआ वहाँ पहुँच गया, जहां अजनवियों ने अपने घर वनाये हुये थे। जव उसने घास के पीछे से झांक कर देखा, तो उसे शिविर का नज़ारा साफ़ दिखाई पड़ने लगा। उस सम्पूर्ण शिविर के चारों ओर राख का घेरा देखा जो रात के सम शिकारी जन्तुओं से सुरक्षा-पंक्ति का काम देनी वाली अग्नि का अवशेष था उसने प्रत्येक झोंपड़ी के आगे खाना पकता हुआ पाया। उसने मिट्टी के व

देखे जो उसके लिये एकदम नई चीज़ थे। उसने बच्चों, औरतों और मर्दों को देखा। उनमें और उसकी जाति के लोगों में कोई विशेष अन्तर नहीं था, किन्तु उनका पहनावा एवं अस्त्र-शस्त्र अवश्य भिन्न थे। अब वह उनकी प्रत्येक बातचीत सुन सकता था।

"वह अवश्य ही सुन्दर रही होगी", एक आदमी कह रहा था, "अन्यथा घूर कभी भी इस अपरिचित नदी के पार वाले उस विचित्र भू-भाग पर, उसकी खोज में कभी नहीं जाता।" वह ज़ोर से हँसा, एक युवा स्त्री की ओर देखा, जो उसके निकट बैठी बच्चों को दूध पिला रही थी।

युवा स्त्री ने उसकी ओर मुँह बना दिया।

"उसे वापिस तो ले आने दो," वह चिल्लाकर बोली। "वह कदापि इतनी सुन्दर नहीं रह सकेगी। मैं उसके चेहरे के साथ प्यार करूंगी।" और वह अपनी खाल को नोच कर दिखाने लगी।

"जब वह उसे उठाकर ले गया, तो घूर अत्यन्त कुपित हुआ," पुरुष ने अपना कथन जारी रखा। "वह उसके ऊपर लगभग अपना हाथ रख चुका था। किन्तु वह उसे ढूंढ निकालेगा, यद्यपि यह कहना कठिन है, कि उसे वापिस ले आने के लिये उस औरत नाम की कोई चीज़ बची है अथवा नहीं। मैं स्वयं ही इस बात से शंकित हूँ, और समझता हूँ कि घूर का इस प्रकार समय बरबाद करना मूर्खता से कुछ अधिक नहीं है।"

काफ़ू आश्चर्य-सागर में गोते खाने लगा। क्या यह सम्भव है कि वह आदमी, जिसे वे लोग घूर कह रहे हैं, उस किनारे पर मातुल का पीछा करने गया है? मातुल वहाँ किस प्रकार पहुँच सकी होगी? यह एकदम असम्भव है। तब ही उनकी अगली बातचीत से उसका रहा-सहा संशय भी मिट गया, उसके सचेत कानों ने सुना कि वह आदमी किसी औरत को पानी के पार वाले विचित्र प्रदेश में पीछा करने गया है। उस औरत का, जिसने उसे चकाचौंध कर दिया था, और जो उसे धोखा देकर भाग निकली थी। मातुल के अतिरिक्त वह और कौन हो सकती थी।

सब नावें तैयार हो चुकी थीं और आदमी एक-एक कर घसीट कर उन्हें ानी के निकट ले जा रहे थे। नावों में उन्होंने अपने-अपने चप्पू, कुल्हाड़े और ाले रख लिये, जैसा कि जाने के पूर्व शूर ने किया था। काकू उनकी हलचलों को बड़े मनोयोग से देखता रहा। अन्त में सब नौकाओं में बैठकर, चप्पुओं के सहारे नदी के उस पार अवर्णनीय तेज़ी से चल पड़े। अकस्मात् काकू ने देखा कि एक नाव का एक बहादुर उठ खड़ा हुआ, और उसने अपना भाला पूर्ण शक्ति एवं शीघ्रता से पानी के अन्दर फेंका। फौरन ही नाव और नाव के नीचे के पानी में जोर की हलचल उत्पन्न हुई। प्रत्येक नाव में तीन-तीन आदमी थे। जस नाव को काकू देख रहा था, उसके शेष दो आदमी भीषण शीघ्रता के साथ नाव को नदी में भयानक हलचल पैदा करने वाली चीज़ से दूर ले जाने का प्रयत्न कर रहे थे। काकू ने अनुमान लगाया कि क्या हुआ होगा। भाला फेंकने वाले ने अपना भाला नदी के किसी विकराल जन्तु में गड़ा दिया था, और उससे युद्ध चल रहा था। वे लोग काकू से बहुत दूर थे, जिसकी वजह से वह आक्रमणकारी जन्तु को नहीं देख सका, किन्तु उसने देखा कि नाव घायल हुए जन्तु द्वारा एक ओर को तेजी से खिची चली जा रही है .... जैसे ही वह नदी के खुले भाग की ओर भागा, उसने देखा कि नाव जीव के निकट खिच आई है, और तब ही एक दूसरे भाले का वार उस तैरने वाले जीव पर हुआ। अब काकू की समझ में आ गया कि क्यों इन लोगों ने अपने भालों को रस्सी के साथ बांधा हुआ है। उसने देखा कि अकस्मात् ही पानी में पुनः ज़ोर से हलचल हुई और शिकार शिकारी पर चढ़ बैठा। उसने शक्तिशाली जन्तु के तेज प्रहार को देखा, वह पानी से निकलकर उछला और मृत्यु की भयानकता के साथ नौका के ऊपर जा गिरा। उसने देखा कि अन्य नौकायें भी युद्धस्थल की

ओर बढ़ रही थी। किन्तु इससे पूर्व कि अन्य नौकायें वहाँ पहुँच पातीं, सब कुछ शान्त हो चुका था। पेड़ के तने की बनी नाव दो टुकड़ों में विभाजित हो गई, और उसमें से बुलबुले उठ रहे थे। एक आदमी उनमें से एक टुकड़े के साथ चिपका हुआ था। कुछ मिनटों पश्चात् उस आदमी को दूसरी नाव पर चढ़ा लिया गया, और बेड़ा पुनः शिकार की तलाश में इधर उधर बिखर गया।

शीघ्र ही वे नजरों से ओझल हो गये, केवल उस अकेली नाव को छोड़ कर, जो गांव के सामने ही मछलियां पकड़ने में व्यस्त थी। वे व्यक्ति शेष की तुलना में कम भयानक खेल में संलग्न थे, और काकू देख पा रहा था कि वे नदी के अक्षय भंडार से, गजब की फुर्ती से अपने अस्त्रों का प्रहार कर, बड़ी बड़ी मछलियों का शिकार कर रहे थे। शीघ्र ही नाव पूरी भर गई और वे व्यक्ति अपने साथ के भारी वजन को धीरे धीरे खेते हुए किनारे की ओर बढ़ने लगे।

जैसे ही वे किनारे पर पहुंचे, अकस्मात् एक विचार काकू के दिमाग में कौंध सा गया। पानी के ऊपर उस भयंकर खेल ने उसके हृदय में उन अजनबियों के बराबर होने की इच्छा भर दी थी, किन्तु उससे भी अधिक दृढ़ एक अन्य विचार उसके मस्तिष्क में आ जमा।

जैसे ही वे नाव से उतरे और नाव को किनारे पर खींचा, औरतें एकदम उठकर आई और अपने साथ बैल के चमड़े के बड़े बड़े थैले लाईं, जो बैल की आंतों से ही सिये गये थे। इन थैलों में उन्होंने मछलियों को भर लिया और अपने अपने बोझे को अपने अपने घर की ओर ढोकर ले चलीं।

स्पष्ट था कि इन तीनों व्यक्तियों का दिन का काम समाप्त हो चुका था, अतः वे पेड़ की छांव के नीचे जा, सो रहे। यही समय है— काकू चोरों की भांति घुटनों के बल आगे बढ़ा। वह अपने लम्बे भाले और पत्थर के कुल्हाड़े को मजबूती से अपने हाथ में पकड़े हुये था। नाव नदी के खुले किनारे पर पड़ी हुई थी। इस तक पहुँचने का ऐसा कोई मार्ग नहीं था, जिससे वह औरतों की नजरों से बचा रह सके। काकू की लड़ाका प्रकृति ने इसका उपाय खोज निकाला। सीधे गांव के बीच से गुजरने के अतिरिक्त अन्य और कोई उपाय था ही नहीं।

वह अपने पांवों के सहारे खड़ा हो गया और हलके कदम रखता हुआ घरों आगे से गुज़रा। उसके देखे जाने से पूर्व, चेतावनी देने की कोई आवश्यकता हीं थी। वह ठीक उस औरत के पीछे था, जो जंगली वैल की खाल काट रही थी। वह उसके हलके कदमों को नहीं सुन सकी। वच्चा उसके निकट वैठा वैल की पूंछ से खेल रहा था। उसने अपने निकट आये आगन्तुक को ग़ौर से देखा। वह अपनी मां से विचित्र सी ध्वनि करता हुआ चिपट गया। क्षण भर में सम्पूर्ण शिविर कोलाहल का प्रतिरूप वन गया। अव छिपने की कोई आवश्यकता नहीं थी। अपने शक्तिशाली फेफड़ों से युद्ध गर्जना करता हुआ काकू भयभीत स्त्रियों और चकित पुरुषों के सामने, जो अकस्मात् ही कच्ची नींद में उठ वैठे थे, गांव के वीच से गुज़रने लगा।

काकू सीधा नाव की ओर दौड़ा और उसके पीछे पीछे वे तीनों मछेरे लड़ाका भी दौड़ें। एक मछेरा उसके निकट दूसरी ओर से आ रहा था। वह अत्यन्त निकट था, इतना निकट कि उसी क्षण वह काकू पर टूट पड़ा, जव वह नाव के निकट पहुँचने वाला ही था। दोनों आपस में अपने कुल्हाड़े लिये गुथ गये, किन्तु नानू का पुत्र काकू अदम्य वहादुर था। उसने मछेरे के वार को अकारथ कर दिया, और इससे पहले कि मछेरा दूसरा वार करने का समय पा सके, काकू की कुल्हाड़ी उसकी खोपड़ी पर पड़ी और खोपड़ी अन्डे के समान फूट निकली।

फौरन काकू ने नाव को अजनवियों की भांति घसीटकर पानी में उतार दिया। अभी कठिनाई से वह उसे दस वारह कदम ही ले जा पाया था, कि शेष वहादुरों से अपनी सुरक्षा करने के लिये उसे घूम जाना पड़ा। भयानक हुंकारें भरते हुये वे उस पर टूट पड़े। उनकी औरतें किनारे पर खड़ी हुई पी से जंगली आवाज़ों में उनका साहस वढ़ा रहीं थीं और शत्रु के उत्साह ठंडा करने का प्रयत्न कर रहीं थीं। काकू ने नाव को छोड़ दिया और अ प्रतिद्वन्दियों की ओर झपटा। उसका लम्वा भाला उसकी शक्तिशाली भुजा का अपूर्व वल पा तेजी के साथ मछेरे के शरीर से पार हो गया, जो समय अपनी वर्छी से काकू पर वार करने जा रहा था। मछेरा लड़खड़

गिर पड़ा। औरतें जोर जोर से चीखने-चिल्लाने लगीं। अब तीसरा वीर मधु से भिड़ने आगे आया। इस समय वे एक दूसरे के इतने निकट थे कि भाले का प्रहार करना नामुमकिन था, इसलिये मछेरे ने अपनी बर्छी फेंक दी और पत्थर का चाकू ले काकू पर टूट पड़ा। दोनों व्यक्ति घुटनों पानी में गुत्थमगुत्था में व्यस्त हो गये। एक दूसरे पर चाकू के घातक प्रहार करने लगे और मौत के घाट उतार देने के लिये व्याकुल हो उठे। एक शक्तिशाली लहर ने उन्हें किनारे पर ला पटका, तो भी वे लड़ते रहे। लहर के वापिस जाने पर एक लाश पड़ी नजर आई, जिसकी बालों से भरी चौड़ी छाती स्थान-स्थान पर नातू के पुत्र काकू के चाकू से बिंध गई थी।

गुहा निवासी उठा, और पुनः नदी की ओर लौट पड़ा। लहर नौका को अपने साथ बहाकर काफी दूर ले गई थी। औरतें अपने तीन शूरवीरों की आकस्मिक मृत्यु से भयंकर हो उठी थी, वे विजेता को खदेड़ने के लिये क्रोध से फुंकारती हुई आगे बढ़ीं। वे जंगली औरतें पुरुषों से किसी भी दशा में कम नहीं थीं। उनके लम्बे बाल हवा में लहरा रहे थे। उनके चेहरे क्रोध एवं घृणा से विकृत हो उठे थे। वे जोर जोर से चिल्लाईं और काकू को लड़ने की चेतावनी देने लगीं, किन्तु काकू ने उनसे युद्ध करने की इच्छा प्रकट नहीं की। वह पानी में गोता लगा गया और नाव की ओर बढ़ चला। उसका भाला तो चुका था, किन्तु उसे अपने कुल्हाड़े का विश्वास था। उसका चाकू उसकी कमर में तांत की पेटी में लटक रहा था।

औरतों ने गर्दन पानी तक उसका पीछा किया; किन्तु काकू उनकी पहुँच के बाहर हो चुका था। अगले ही क्षण नाव उसकी पकड़ में आ गई और वह उस पर सवार होकर आगे बढ़ चला। यद्यपि उसे चढ़ने में परेशानी तो अवश्य हुई, किन्तु क्या कभी मानवीय प्रयत्नों के सम्मुख कोई विफलता ठहर सकी है? सुरक्षित सवार हो जाने पर उसने चप्पू उठाये और उन्हें पानी में डालकर ठीक उसी प्रकार चलाने लगा जैसा कि उसने पहले मछेरों को चलाते देखा था। धीरे धीरे उसकी नाव किनारे से दूर होती चली गई।

ज्वार और हवा ने उसे सहायता दी। किन्तु शीघ्र ही उसने नौका खेना अच्छी तरह सीख लिया। सर्वप्रथम उसे इस बात का ज्ञान हुआ कि भाले वाली ओर से चप्पू चलाया जाता है, तो नाव विपरीत दिशा में घूम जाती है। अतः वह समझ गये कि मछेरे किस लिये दोनों चप्पुओं को एक साथ आगे पीछे चला रहे थे। उसने इस प्रकार किया तो नाव सीधी उसकी मनवांछित दिशा की ओर चल पड़ी— रहस्य के दूरवर्ती प्रदेश की ओर।

जब काकू जलधारा के मध्य में पहुँचा, तो अकस्मात् एक दानवीय आकृति नौका के निकट दिखाई पड़ी। विकराल मुख से सुसज्जित लम्बी गर्दन धरातल पर उभर आई। उसके विशाल जवाड़े नौका खेने वाले को निगल जाने के लिये खुले हुये थे। उसकी लोलुप दृष्टि उसे घूर रही थी, और फिर उसने आक्रमण किया। काकू एकदम एक ओर हो गया और अपने चाकू से उस पर प्रतिघात किया, एक सरसराहट एवं भीषण गर्जना करता हुआ, वह जन्तु पानी के अन्दर डुबकी लगा गया और फिर अगले ही क्षण नाव की दूसरी ओर प्रकट हुआ। चाकू के प्रहार से उसकी गर्दन घायल हो गई थी, जिससे रक्तधार चालू थी। उसने पुनः मुंह बाये काकू पर आक्रमण किया। पहले की भांति ही काकू ने घूमकर पुनः चाकू का प्रहार किया। एक बार फिर जन्तु ने डुबकी लगाई, और उसी क्षण एक शक्तिशाली पूंछ पानी से बाहर निकल काकू के सिर पर आ गई। काकू ने तेजी से चप्पू मारकर नाव आगे बढ़ा ली। उसी समय मृत्यु की भयानकता लिये एक जोरदार आवाज करती हुई पूंछ उस जगह पर गिरी, जिसे अभी नाव छोड़कर गई थी। कुछ मिनटों के लिये नदी के पानी में हलचल पैदा हुई और फिर सतह पर जन्तु के खून के धब्बे नजर आये। वह जन्तु अनावश्यक भय के साथ भाग खड़ा हुआ था।

दुहरी शक्ति के साथ नाव को अपने लक्ष्य की ओर खेता हुआ काकू बढ़ता चला गया। अपनी यात्रा के समाप्त होने पर उसे क्या मिलने वाला था, यह तो विधाता ही जानता था। उसे विश्वास नहीं था कि मातुल वहां होगी। किन्तु फिर भी वह क्या चीज थी, जो विकराल जलराशि के पार अनेक खतरों के बीच से जाने के लिये उसे खींचे लिये जा रही थी। वह

आदमी, दूर, इस ओर ही आया था। वह वही था, जिसने मातुल का पीछा किया था। क्या वह अब भी उसी का ही पीछा कर रहा था? काकू को गाँव वालों की बातचीत से इस बात का दृढ़ निश्चय हो गया था, कि वह किसी औरत का पीछा कर रहा है; और यद्यपि वह इस पर विश्वास करने का प्रयत्न भी कर रहा था, किन्तु फिर भी वह इसके अतिरिक्त कोई निर्णय नहीं कर सका, कि सम्भवतः किसी अंश तक वास्तव में वह मातुल ही हो सकती है, जिसे वह व्यक्ति इस किनारे पर पाने की आशा कर रहा है।

काकू की इस साहसिक यात्रा का प्रारम्भ होने के पश्चात् हवा काफी तेज हो चुकी थी। फेन के साथ ऊँची ऊँची लहरें उठ रही थीं। काकू के लिये नदी शिकारी दैत्यों से जीवित सी थी। पग पग पर उसे अपने शत्रुओं से युद्ध करना पड़ रहा था, जिस प्रकार अभी जल राक्षस से निबटना पड़ा था।

असंख्य खतरों के बीच से गुजरती हुई लकड़ी के खोखले से बनी वह नाव उस पार के किनारे के भूरे रेत से आ लगी। जब उसने अपनी नाव से कुछ दूरी पर एक दूसरी नाव तट पर खड़ी देखी, तो उसने भी अपनी नाव को लहरों से निकालकर बालुकामय तट पर चढ़ा दी। उसे इसमें किंचित् भी सन्देह नहीं था कि वह नाव उस मनुष्य, दूर, की ही थी। उसने अपने कुल्हाड़े को संभाला और फिर मजबूती से अपने हाथ में पकड़कर पहले वाले व्यक्ति के पदचिन्हों पर चलना शुरु कर दिया, चाहे वे उसे जहां ले जायें।

पदचिन्ह उसे एक पठारी अन्तरीप के गहरे, और सँकरे अन्धकारमय भाग में ले गये, जहां की ऊंची चट्टानों के पीछे नदी गर्जना करती हुई प्रवाहित हो रही थी। अन्त में उसे आगे के पदचिन्ह तलाश करने के लिये चट्टान पर चढ़ना पड़ा। आगे चलकर पदचिन्ह अकस्मात् ही पश्चिम की ओर एक दूसरे दर्रे के मुहाने की ओर घूम गये थे। जिस असम्बद्धता से काकू का पथप्रदर्शन करने वाले चिन्ह दाईं ओर घूम गये थे उससे काकू ने अनुमान लगाया कि कोई ऐसी बात अवश्य हुई थी, जिसने उस आदमी को उस ओर आकर्षित कर लिया था, और वह उसका पता लगाने के लिये [illegible] दौड़ खड़ा हुआ। क्या उसने उस औरत को देख लिया था, जि[illegible]

वह यहां आया था। क्या वह इस समय भी मातुल का पीछा कर रहा था। यदि ऐसा था, तो क्या वह वास्तव में वहीं थी। क्या अब इस समय वह उसके अधिकार में है।

काकू भी पश्चिम की ओर घूम गया और उन स्पष्ट पदचिन्हों पर तेजी से दौड़ चला। जब से वह शूर के पदचिन्हों का पीछा कर रहा था, तब से ही उस नौका-निर्माता से काकू की गति कहीं अधिक तीव्र थी। इस बात को उसकी नाव ने भी सिद्ध कर दिया था। इसलिये वह समझ गया था कि वह उस मनुष्य के निकटतम पहुँचता जा रहा है, जो अभी तक अपना पीछा किये जाने से बेखबर था।

दर्रे के ढलवाँ भाग से शूर बड़ी कठिनाई से नीचे उतर पाया होगा। ऊंचाई के नीचे घना वन था, जिसके बीच से गुज़रकर पदचिन्ह पुनः नदी की ओर चले गये थे, किन्तु बीच-बीच उसने ऊंचाई को पार करने के अनेक अस-फल प्रयत्न किये थे।

उसने ऐसा क्या देखा या सुना था, जिससे उसने ऐसी कठिन चढ़ाई के असफल प्रयास करने की प्रेरणा पाई थी। क्या काकू उसका पीछा दर्रे के नीचे की ओर से करे, अथवा सुविधाजनक स्थान पर चढ़ जाये, जिस पर वह दूसरा नहीं चढ़ सका था।

एक क्षण तक काकू के हृदय में द्वन्द्व चलता रहा। फिर वह चट्टान की ओर घूम गया, और अपने पहाड़ चढ़ने के पुराने एवं लम्बे अनुभव के सहारे शीघ्रता से ऊपर चढ़ने लगा। इस दौरान में चट्टान का एक हिस्सा टूटकर नीचे लुढ़का। उससे बचने के लिये अपनी शक्तिशाली बाहुओं एवं सुदृढ़ पैरों के बल हो वह एक ओर को हट गया और चट्टान में लगे एक वृक्ष की जड़ पकड़कर लटक गया। कुछ ऊपर उसे एक पेड़ की जड़ नज़र आई वह उसके सहारे ऊपर चढ़ आया। फिर मुलायम घास से भरी धरती पर चलता हुआ आगे बढ़ा।

सचेत दृष्टि से उसने चारों ओर देखा ··· उसे स्त्री अथवा पुरुष न किसी वस्तु का कोई चिन्ह नहीं मिला। उसने घूम फिरकर अपनी

आँखों से पदचिन्हों की तलाश की, किन्तु कोई फल नहीं निकला।

वह पुनः वापिस दर्रे की तलहटी में उतरकर, शूर के पदचिन्हों का पीछा करने का निश्चय कर चुका था, कि उसी समय पश्चिम की ओर से आती हुई, मुसीबत में फसी नारी के कण्ठ से निकली, एक स्पष्ट एवं तीव्र चीख उसके कानों से टकराई।

जैसे ही चीख का पहला स्वर नानू के पुत्र काकू के कान में पड़ा, वैसे ही वह पूर्ण उन्मादी बन, आवाज की दिशा की ओर दौड़ पड़ा।

६

नौका-निर्माताओं के गांव के समीप, घूर की उपस्थिति से चकित एवं भयभीत उत्तर की ओर किनारे के साथ-साथ दौड़ती हुई मातुल को अपने पीछा करने वाले से बच निकलने की आशा बिल्कुल कम रह गई थी। किन्तु वह जारी रखने के अतिरिक्त कुछ और नहीं कर सकी। केवल आशा के विपरीत उसे आशा थी कि कोई आकस्मिक कारण उसे इस परेशानी से बचा सकता है।

उसका मस्तिष्क तेजी से बचने का उपाय सोच रहा था। उससे चौथाई मील की दूरी पर जंगल नदी के किनारे एकदम निकट जा लगा था। वह जंगल में ले जाकर उसे धोखा देना चाहती थी। वहां वह अपना पीछा छुटा लेगी और उन गुहाओं की ओर बढ़ चलेगी, जो वहां से कुछ ही दूरी पर थीं। एक बार वहां पहुंचने के पश्चात्, रात्रि होने तक, वह अपने आपको उससे बचाये रक्खेगी, अथवा वह पत्थर मार-मार कर उसे भगा देगी। फिर वह पुनः उत्तर की ओर बढ़ चलेगी, क्योंकि उसे यह स्पष्ट हो गया था कि उसकी जाति इस दिशा में नहीं आई है।

जंगल उसके निकट आ पहुंचा था, किन्तु, दूसरी ओर, वह मनुष्य भी उसके निकट पहुंचता जा रहा था। क्या वह अपने गन्तव्य स्थान तक पहुंच सकेगी, इससे पहले कि वह उसे आकर पकड़े और अपने साथ ले जाये? वह प्रयास करने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सकती थी?

अचानक ठीक उसके सिर के ऊपर विशाल पंखों की फड़फड़ाहट की जोरदार आवाज आई। उसके इर्द-गिर्द रेत पर काली छाया फैल गई। उसने ऊपर की ओर देखा, और उसकी नजर में जो कुछ आया उसे देख उसकी हृदय-गति भय से रुकती जान पड़ी। वहां, अपने शक्तिशाली पंजों से उसे जकड़ लेने के लिये एक विकराल उड़ने वाला रेपटाइल (जो मातुल के समय में ही प्रायः लोप हो चुके थे) अपने को हवा में साध रहा था— चूहे की शक्ल वाला,

विशाल जबड़ों वाला विकराल पक्षी, जिसके विशाल पंख अपने छोटे-छोटे पैरों से मिले हुये होते थे।

उसका पीछा करने वाला उसे सचेत करने के लिये चिल्लाया।

उसने अपना नोकदार भाला उस विकराल पक्षी की ओर फेंका, जो उसकी लम्बी और मांस भरी पूंछ में जा गड़ा। वेदना एवं घृणा से भरी सीटी जैसी चीख पैदा करता हुआ वह विशालकाय पक्षी अपने नीचे खड़ी लड़की पर झपटा। मातुल को महसूस हुआ कि उसके विशाल पञ्जे उसके शरीर पर कसते जा रहे हैं। अपने शिकार को अपने पञ्जों में दबोचे वह विकराल पक्षी तेजी से उड़ चला। मातुल अपने शरीर पर जो खाल ओढ़े हुये थी, वह उसके पंजों को उसके मांस में गड़ने से रोके हुई थी।

एक क्षण के लिये मातुल ने स्वतन्त्र होने के लिये हाथ पाँव फेंके किन्तु अगले ही क्षण उसे अपने तुच्छ प्रयासों की असफलताओं का आभास हो गया। इस असहाय दशा में उसकी सहायता करने में गुहा-निवासी और नौका-निर्माता दोनों ही असमर्थ थे। इस समय वह संकुचित एवं शक्तिहीन हो अपना अंत होने की प्रतीक्षा में लटक रही थी। वह अपना पत्थर का चाकू भी नहीं निकाल पा रही थी, क्योंकि पक्षी का एक पंजा उस स्थान को कसकर पकड़े हुए था जहाँ चाकू खाल के साथ लगा हुआ था।

अपने नीचे वह गर्जन करती हुई विशाल जलराशि को देख रही थी। उसे पकड़कर ले जाने वाला रेपटाइल-पक्षी किनारे से काफी दूर निकल आया था। उसके विशाल पँख मातुल के ऊपर जोरदार फड़फड़ की आवाज कर रहे थे। लम्बी गर्दन और संकुचित हो जाने वाला सिर खुलकर काफी आगे तक फैल गया था, वह विशाल पक्षी हवा में बहुत ऊँचे एक सीधी रेखा में उड़ा जा रहा था।

उसी समय मातुल ने सामने पृथ्वी देखी। उसका हृदय भय की लहर में प्रवाहित हो उठा, जब उसे इस बात का ज्ञान हुआ कि उसे दबोच कर ले आने वाला विशाल दानवीय पक्षी उस रहस्यमय प्रदेश का है, जो विशाल समुद्र के उस पार स्थित था। वह स्वप्नों में उस रहस्यपूर्ण एवं अगम्य प्रदेश को देखा करती थी। अपनी जाति के लोगों के मुख से उस पा

एवं विकराल जन्तुओं के विषय में उसने सुना था। कभी कभी उसके हृदय में उस अज्ञात प्रदेश को देखने की लालसा उठा करती थी, किन्तु सदैव ही वह अपने साथ अपनी सुरक्षा के लिये कोई प्राणों पर खेल जाने वाला शूरवीर ले जाना चाहती थी। उस भयानक एवं विकराल जन्तु के पंजों में दबे हुए अकेले जाना, उसने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था। उसका मस्तिष्क विधि के इस वार से अर्द्ध-चेतन हो गया था।

विशाल पक्षी इस समय उस पार की धरती पर पहुँच चुका था। पहाड़ी अपनी नोकीली चोटी इस प्रकार लिये खड़ी थी मानों अपनी तर्जनी अंगुली से सीधी हवा की ओर संकेत कर रही हो। उस पहाड़ी की ही ओर वह पक्षी अपने शिकार को लिये उड़ा चला जा रहा था। जैसे ही वह उस नोकीली एवं पथरीली चोटी के निकट पहुँचा, मातुल ने भय से नीचे की ओर झांका। उसके ठीक नीचे उसकी भयभीत आंखों ने उस स्थान को देखा, जहाँ उसका शिकारी तेजी से पंख फड़फड़ाता हुआ उतर रहा था, जहां क्रूर एवं करुणाहीन दुर्भाग्य उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

तीन वैसे ही छोटे विकराल रैपटाइल घास मिली मिट्टी से बने प्याले जैसी गर्दनों को ऊपर उठाये हुये, अवर्णनीय प्रफुल्लता के साथ किलकारी भरते हुये, आगे की ओर रेंगे— उनकी मां उनके लिये भोजन लेकर लौट आई थी।

विकराल मां पक्षी ने कई बार अपनी सन्तान के ऊपर चक्कर लगाये और हर चक्कर में वह नीची, अधिक नीची, अपने घोंसले की ओर झुकती चली गई। अन्त में उनसे कुछ फुट की ऊंचाई पर उसने चक्कर लगाना बन्द कर दिया, और अपने पंजों की पकड़ को मातुल के इर्द-गिर्द ढीला कर दिया। मातुल को अपने विशाल जबाड़ों वाले बच्चों के बीच में डाल वह स्वयं एकदम घूमकर अपने बच्चों से दूर, अपने भोजन की तलाश में चल पड़ी।

जैसे ही मातुल घोंसले में गिरी, वे तीनों दांत वाले पक्षी मुंह बाये एक साथ उसे देखते रहे। पक्षी काफी छोटे थे, किन्तु फिर भी वे अपने अनगिनत दांतों, तेज़ पंजों और अपनी मजबूत पूंछों से युक्त भयंकर शत्रु ही थे।

लिया। वहां सोच समझने की कोई समय और स्थान नहीं था। मृत्यु असोचनीय रूप में, भयंकर हो उसके सिर पर सवार थी। उसके बच निकलने की आशा धूमिल हो थी, तो भी उसमें आत्म-रक्षा की भावना अत्यन्त प्रबल थी। मातुल बहादुरी से लड़ी।

उसके जीवन की प्रतिरक्षा केवल एक उसी चाकू के प्रहारों में निहित थी। वह इस बात को जानती थी और इसलिये उसने ऐसा ही किया। तीनों सिर पुनः इकट्ठे हो, अपनी मां द्वारा लाये हुए नये एवं स्वाद गोश्त को निगल जाने के लिये, लोलुप दृष्टि से देखने लगे। एक क्षण के लिये मातुल ने उन बदसूरत छोटे पक्षियों के चमकते हुये जबाड़ों को हटाने का प्रयत्न किया, और फिर जैसे ही वे तीनों सिर एक साथ उसे पकड़ने के लिये तेजी से झपटे, उसने अपने चाकू के फल से उनमें से दो की लम्बी मुलायम गर्दनों में घाव बना डाला। फौरन ही घायल हुए उन जन्तुओं ने सीटी के साथ अपनी वेदना व्यक्त करनी शुरु कर दी। उनके प्रतिभाहीन मस्तिष्क ने उन्हें केवल इतनी ही चेतना दी कि उन्हें चोट लग गई है, और फिर भयानक भय से वे एक दूसरे से चिपट गये, प्रत्येक अपनी पीड़ा को दूसरे को देना चाह रहा था। फौरन शीघ्र ही घोंसला पंखों की फड़फड़ाहट, पूंछ पटकने, एवं दांत खटखटाने की आवाज से गड़गड़ा उठा। जो दो घायल हो गए थे, वे एक दूसरे को चिपटे हुए थे, और शेष तीसरा भी मातुल को भूलकर, रोमांचकारी भय से पीड़ित हो उन दोनों से जा चिपटा।

उनकी इस घबड़ाहट का लाभ उठा, मातुल तेजी से एकदम घोंसले की एक ओर चढ़ गई। उसके सौ फुट नीचे कठोर नोकीली चोटियां समय से जूझती हुई, उन्मत्त गर्व से सिर उठाये खड़ी हुई थी। इन सौ फुटों को पार करने का कोई सम्भव उपाय नहीं था। किन्तु घोंसले में रहने से विकराल मृत्यु अवश्यम्भावी थी, नीचे फिर भी जीने की कुछ क्षीण आशा अवश्य थी।

घोंसले से बाहर निकल कर मातुल ने अपने शरीर को उस चिकनी चट्टान से नीचे की ओर लटकाना शुरु किया। अन्त में उसके पांव किसी सुई जैसी जगह पर जा टिके। धीरे-धीरे उसने अपने शरीर का बोझ उस पर डाला,

श्रीर फिर एक दूसरे उठे हुये स्थान को पकड़कर पुनः उतरने का उपक्रम करने लगी। क्षरण-प्रतिक्षरण ऐसा महसूस होता था कि मानों वह श्रभी फिसली, श्रभी गिरी— नीचे के विशाल खड्ड में लुढ़क कर श्रपनी देहलीला समाप्त कर लेगी। दो बार उसने पैर रख नीचे उतरने के लिये नये स्थान को खोजा, तो प्रत्येक बार, जब श्राशा निराशा बन चुकी थी, उसे कोई दुर्बल वस्तु श्रवश्य मिल गई जिसके सहारे वह नीचे उतरती चली आई श्रीर मृत्यु की विभीषिका, उस घोंसले, से दूर होती चली गई।

इस प्रकार श्रन्त में वह उस विशाल, सीधी, चिकनी चट्टान के नीचे उतर श्राई, किन्तु यहां भी उसके लिये श्राराम नहीं था। किसी भी क्षरण वह विशाल मादा पक्षी लौटकर श्रा सकता था श्रीर उसे श्रपने शक्तिशाली पंजों में दबोच, पुनः ऊपर वाले उस जीवित नर्क— घोंसले— में डाल सकता था।

नीचे की शेष चट्टान की उतराई, मीनारनुमा उस चट्टान से कहीं अधिक श्रासान थी, यद्यपि स्थान स्थान पर कुछ रुकावटें श्रवश्य थीं। किन्तु श्रन्त में वह भी समाप्त हो गई श्रीर मातुल ने श्रपने श्राप को चौड़ी घाटी में खड़े पाया जहां घना जंगल था। वहां वह घास पर श्राराम करने के लिये लेट गई क्योंकि अधिक श्रम करने से वह बिल्कुल क्लान्त हो चुकी थी। उसे इस बात का किंचित् भी ज्ञान नहीं था कि श्रभी कितने श्रीर खतरों का उसे सामना करना है। वह कुछ क्षणों के लिये श्राने वाले खतरों को भूल गई श्रीर श्रपनी बांह का तकिया बना, गहन निद्रा में निमग्न हो गई।

उसके चारों श्रोर असंख्य श्रावाजें हो रही थीं, जो जंगल में रहने वाले छोटे-छोटे पशु, चिड़ियों के बोलने श्रीर टहनियों के हिलने से उत्पन्न हो रही थीं। उनसे उसकी निद्रा नहीं टूटी, बल्कि उसे ऐसा लगा मानों वे उसके लिये लोरियां गा रही थीं। हवा नदी की श्रोर से आ, घाटी पर फैल, उसके रक्तिम कपोलों को छू रही थी, उसके मुलायम सुन्दर बालों को उड़ा रही थी जो उसके कन्धों पर बिखर कर फैल गये थे। वह उसे श्रानन्द एवं श्राराम दे रही थी, किन्तु उसने उसके कानों में नहीं फुसफुसाया कि उसके ऊपर वाले पेड़ से दो विकट श्रांखें उसे घूर रही हैं। उसने उस विकट जबाड़े की, बेहूदा श्रीर भद्दे

ऊपरी होठ की, बालों से भरे सीने की, जिसके अन्दर एक अमानुषिक हृदय उसकी छोटी-छोटी आँखों की मातुल के सुगठित शरीर पर पड़ने वाली दृष्टि के साथ जोर जोर से धड़क रहा है, कोई चेतावनी नहीं दी। हवा ने तो यह नहीं बताया, किन्तु उस अज्ञात के पैर के नीचे आने से टूट जाने वाली एक टहनी ने उसे सचेत कर दिया।

मनुष्य के प्रारम्भिक जीवन में निद्रा को छोड़ झट जग जाना एक मामूली बात थी। जैसे ही टहनी टूटने की आवाज हुई, वैसे ही मातुल एकदम चौंक कर उठ खड़ी हुई। उसकी उस नये खतरे पर नजर पड़ी, जो इस समय उसे घेरे हुआ था। उसने देखा कि एक विशाल मनुष्याकार दबे पावों उसकी ओर बढ़ता आ रहा है। उस विशाल दैत्य के समस्त अङ्ग बड़े-बड़े लाल बालों से ढंके हुए थे। उसने उसकी सूग्रर की सी आँखें और भेड़िये जैसे दाँत, विशाल, भद्दे शरीर की टेढ़ी और छोटी टाँगो की बेहूदी चाल को देखा। एक दृष्टि-पात में यह सब देखकर वह एकदम घूमी और तेजी से उस चट्टान की ओर दौड़ चली जिससे वह अभी कुछ देर पूर्व उतरकर आई थी।

जैसे ही तेजी से वह उस कठिन चढ़ाई पर चढ़ने लगी, उसका पीछा करने वाला जन्तु भी उसके निकटतर आता गया। उस पशु के पीछे-पीछे उस जैसे ही छः अन्य जन्तु भी चले आ रहे थे। मातुल ने उन्हें पेड़ों पर रहने वाले बालों वाले मनुष्यों की संज्ञा दी। वे उन विशाल रूपों से अत्यधिक भिन्न थे, जो उस मनहूस की ही भाँति पृथ्वी पर दोनों पाँवों से चलते थे। वह जानती थी कि उन दुष्टों के हाथ में पड़ जाना कितना भयावह है— उस दुर्भाग्य से भी अधिक बुरा जो उसे उस नारकीय घोंसले में डाल आया था।

उस सीधी पथरीली चट्टान पर सौ फीट चढ़ने के पश्चात्, मातुल ने पीछे मुड़कर देखा। उससे बारह गज की दूरी पर वह बालों वाला दैत्य था। मातुल ने कुछ परिश्रम के पश्चात्-एक पत्थर के अपने स्थान से हटा, नीचे उसकी ओर लुढ़का दिया। पत्थर के आघात से उसके मुख से एक वेदनायुक्त चीत्कार निकल पड़ी। किन्तु फिर भी उसने पीछा करना जारी रखा। वह ... और चढ़ गई। पुनः उसने मुड़कर नीचे की ओर देखा। पेड़ पर

वाला दैत्य उसके बीच की दूरी को निरन्तर जीतता चला जा रहा था। उस एक पत्थर को अपने स्थान से हटा, नीचे उस दैत्य की ओर लुढ़का दिया। नीचे छः अन्य दैत्य चले आ रहे थे। लुढ़कते हुये पत्थर ने उनका पीछा करने अगुआ पर आघात किया। एक क्षण के लिये वह लुढ़क गया और पीछे ने वाले अपने साथियों के ऊपर जा गिरा। एक उसके हाथ के नीचे वाले त्थर के लुढ़क जाने के कारण जख्मी हो गया, और दो भयानक रूप से लुढ़कते हुये उस पथरीली चट्टान के नीचे की कठोर एवं नुकीली धरती पर जा गिरे।

अपने होठों पर एक प्रसन्नता भरी मुस्कान ला, मातुल ने अपना ऊपर चढ़ना चालू रक्खा। अब वह चोटी के अत्यन्त निकट पहुँच चुकी थी। वहां, पहाड़ी अधिक खड़ी नहीं थी। अब उसे ऊपर चढ़ने में हाथ का सहारा कभी-कभी ही लेना पड़ेगा। बीच में पहुँचकर, उसका पैर एक गोल पत्थर के लुढ़क जाने से फिसल गया। जैसे ही पत्थर लुढ़का, उसने दूसरी वस्तु का सहारा लेने का प्रयत्न किया, किन्तु वह तेजी से पृथ्वी की ओर लुढ़कने लगी। जिन पत्थरों का उसने सहारा लेना चाहा, वे भी उसके भार से नीचे की ओर ढलक गये। भया-वह रफ्तार से लुढ़कती हुई, वह चट्टान की पथरीली तलहटी की ओर बढ़ती चली गई— भीषण एवं दारुण मृत्यु की ओर, उन दो शरीरों के निकट, जो उसकी ही भांति लुढ़ककर मृत्यु की भीषणता में खो चुके थे, जिन्होंने उसे इस दशा में ला पटका था।

दरार के निकट शेष पीछा करने वालों का अगुआ निकलता हुआ दिखाई दिया। वह सीधा उसी ओर बढ़ रहा था, जिधर से मातुल का तेजी से लुढ़कता हुआ शरीर चला आ रहा था। मातुल का शरीर उसके बालों से भरे विशाल बदन से आ टकराया जिसके धक्के से लुढ़कता हुआ वह सीधा नीचे मृत्यु-कराल गाल में जा गिरा। दैत्य के शरीर ने मातुल का बड़ा उपकार किया उसने मातुल के लुढ़कने की भयावह गति को कम कर दिया था, इसलिये वह धीरे-धीरे चट्टान के ऊपर लुढ़क रही थी। लुढ़कते हुये उसने रुकने के सहारा लेने की चेष्टा की और इस प्रकार उसकी गति और भी कम पड़ती

चोटी के ठीक नीचे, पहाड़ का उभरा हुआ एक संकरा भाग था। उस पर पहुँचकर मातुल की गति बिल्कुल धीमी पड़ गई थी। किन्तु उसे वहां कोई भी ऐसी चीज नहीं मिल सकी, जिसको पकड़कर वह सहारा ले सके। वह धीरे-धीरे चट्टान के किनारे से नीचे लुढ़क गई— सीधे एक दूसरे वनमानुष के हाथों में।

उस वनमानुष के बिल्कुल निकट उसका एक और साथी था, और उसके कुछ नीचे तीसरा खड़ा था। उन दुष्टों में से ये तीन ही दांव बचे थे। निकट वाले वनमानुष ने मातुल को, पहले के हाथ से खींचकर निकालने के लिये, पकड़ा और फिर दांत फाड़कर, भीषण गर्जना करते हुये, उसने झटका दे मातुल को खींचा। किन्तु पहले वाले ने इसका विरोध किया। स्पष्ट था, उसकी इच्छा थी कि वही शिकार का अधिक-से-अधिक आनन्द ले जिसने उसे प्राप्त किया है। वह निकट आ गया। जिस दरार पर वे खड़े हुये थे, एकदम संकरी थी। वहां युद्ध होने का अर्थ तीनो की मृत्यु ही था।

बिल्ली की सी छलांग भर वह वनमानुष, जो मातुल को पकड़े हुये था, एक ओर को उछला, घूमा, फिर अमानुषिक शक्ति एवं साहस को समेट कर, चट्टान की ढलवाँ चोटी से छलाग भर, कूद पड़ा। उसके रास्ते में शेष वृक्ष-मानव खड़ा हुआ था। ऊपर वाले के इस आक्रमण के प्रत्युत्तर में वहीं खड़ा रहने का अर्थ था दर्रे में गिर कर मौत। चतुराई के साथ, वनमानुष एक ओर को हटकर खड़ा हो गया। किन्तु जैसे ही पहला वाला वनमानुष मातुल के लिये वहां से गुजरा, वैसे ही वह भी उनके पीछे लग गया। उन दोनों के पीछे वह चला आ रहा था, जिसे मातुल के पकड़ने वाले ने धोखे से पीछे छोड़ दिया था।

ये तीनों एक दूसरे का पीछा बड़ी भीषणता से कर रहे थे, जिसके कारण कभी-कभी *उस निडर गुहा-निवासिनी लड़की के कपोलों पर भय की कालिमा* छा जाती थी। चट्टान के आधार से छलांग मारकर, वनमानुष चारों ओर फैले विस्तृत जंगल के पेड़ों के नीचे से गुजरने लगा। पेड़ों की झुकी हुई डालों की चिन्ता किये बिना ही वह अबाध गति से आगे बढ़ता रहा। वह लगभग उड़ रहा था, क्योंकि वह उस दुर्गम एवं कंटकीर्ण जङ्गल को अत्यन्त शीघ्रता से पार

कर पीछे छोड़ आया था।

ठीक उसके पीछे, चीखते-चिल्लाते और गर्जना करते हुये उसके दो साथी चले आ रहे थे। मानों वे उस पर अपना शिकार चुरा लाने का आरोप लगा रहे थे। वह मातुल को अपने एक कंधे पर लटकाये, अपने दानवीय हाथ की सुदृढ़ पकड़ में कैद किये हुए था। मातुल स्पष्ट रूप से अपने पीछे आने वाले वनमानुषों को देख रही थी। वे दोनों भार ढोकर ले जाने वाले अपने साथी के निकटतर आते जा रहे थे। आगे वाला तो लगभग लड़की को झपट्टा मार कर छुड़ा लेने के लिये, अत्यन्त निकट आ पहुँचा था। मातुल वाले वनमानुष ने तेजी से एक नज़र पीछे की ओर मुड़कर अपना पीछा करने वाले निकटतर साथी की ओर घृणा एवं चेतावनीपूर्ण दृष्टि से दृग्पात किया, जो दाँत फाड़े, भयानक गर्जना करता हुआ उसके आक्रमण से बचने के लिये पीछे की ओर हट गया। तब वनमानुष ने पुनः अपनी उड़ान शुरू कर दी ताकि वह शीघ्र ही अपने दोनों रक्त-सम्बन्धी साथियों की पहुँच से दूर हो सके।

जंगल के चढ़ाव-उतार पर वे तीनों असभ्य जन्तु एक-दूसरे के पीछे दौड़ते गये। दो बार उन्होंने, दो ऊँचाई के बीच के दर्रों को छलाँग लगाकर पार किया। पीछा करने वालों की हठ निरन्तर बढ़ती गई। प्रायः पकड़ने वाले को बलात् अपने पुरस्कार के साथ रुक जाना पड़ता था और फिर पहिले उनमें से एक से लड़ना पड़ता था और फिर दूसरे से। अन्त में जंगल के किनारे के निकट एक संकरी एवं पथरीली घाटी के मुहाने पर पहुँचकर, वह वनमानुष क्रोध से उन्मत्त हो उठा। मातुल को जोर से जमीन पर पटक, वह एकदम अपना पीछा करने वालों की ओर घूम गया और गर्जना करता, मुंह से झाग उगलता हुआ उन पर टूट पड़ा।

वे इधर उधर दौड़ने लगे। उनके साथी के आघात-प्रत्याघात इतनी तेज़ी तथा भयंकरता से हो रहे थे कि वे उसे छकाने का कोई भी उपाय नहीं निकाल सके। उसके विशाल हाथों ने उन्हें पकड़ लिया और फिर वे तीनों, एक-दूसरे को नोचते-कचोटते, अपने भयानक, नोकीले दाँतों को एक दूसरे के गले और छाती में घुसेड़ते हुए, धरती पर गिर पड़े और इस दौरान में दिल हिला देने

मानो गुर्राहटें एवं गर्जना करते रहे।

सावधानी के साथ मातुल अपने पाँवों और हाथों के सहारे उतर देखने लगी। उसकी आँखें उन तीनों अमानुषिक जन्तुओं पर लगी हुई थीं। उन्होंने मातुल पर कोई ध्यान नहीं दिया। यह इस बात का प्रमाण था कि उनके शरीर की सम्पूर्ण शक्ति जीवन एवं मरण के संघर्ष में लगी हुई थी, जिसमें वे प्रविष्ट हो चुके थे। मातुल एकदम उठ खड़ी हुई, और पुन. पीछे देखे बिना ही, वह संकरी घाटी में, लड़ते पशुओं को अपने पीछे छोड़, सीधी दौड़ पड़ी। वह अपने और उन युद्ध-रत भयानक पशुओं के बीच में, जो उसे पाने के लिये युद्ध में लगे हुए थे, अधिक से अधिक फासला छोड़ देने के लिये, अपनी सम्पूर्ण शक्ति से दौड़ी चली जा रही थी। सकरी घाटी उसे कहाँ ले जायगी, इसका उसे कोई अनुमान नहीं था। उसके अन्त में कौन से खतरे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे, इसकी भी उसे कोई कल्पना नहीं थी। वह केवल इतना ही जानती थी कि आशा की पतवार कठिनाइयों की झंझा में उसके हाथ से छूट चुकी है। वह कभी फिर मनुष्य समाज के बीच पहुँच सकेगी, इसकी उसे धुंधली सी भी आशा नहीं थी। उसकी जाति के लोग उसकी सहायता कर सकेंगे, यह बात तो दूर रही, वे उसका पता भी पा सकेंगे, यह बात ही स्वयं दुष्कर का पुल थी। वह इस रहस्यपूर्ण देश के खतरों के मध्य में अधिक दिन जीवित रह सकेगी, इस बात का सदेह भी उसे हो चला था। शस्त्रों से सुसज्जित एक शक्तिशाली बहादुर भी खतरों के इस साम्राज्य में अपने जीवन की आशा छोड़ देता, और फिर उस लड़की का तो कहना ही क्या, जिसके पास शस्त्र के नाम पर केवल एक चाकू ही था।

उसे इसका किंचित् भी सन्देह नहीं था कि काडू उसे तलाश कर रहा होगा। किन्तु इतने लम्बे अर्से के दौरान में कई बार ज्वार आया होगा, जिसने किनारे के रेत पर बने उसके पदचिह्नों को धो डाला होगा। वह उसे कहाँ खोजेगा? और यदि उसने उसके पदचिह्नों का, ज्वार द्वारा मिटाये जाने से पूर्व, पीछा किया हो तो भी वह इस बात का अनुमान कैसे [illegible] सकेगा कि उसके ऊपर क्या गुजरी है, या किनारे के मध्य में पहुँच कर [illegible] सके

पदचिह्न कैसे समाप्त हो गये हैं ?

उस अजनबी ने उड़ने वाले रेगटादल को उस पर झपटते और उठाकर ले जाते हुए देखा था; किन्तु यदि काफू उस अजनबी के पास पहुँच भी जाता है तो उसे सत्य का ज्ञान किस प्रकार होगा ? और जिस ही क्षण वे एक दूसरे से मिले होंगे वैसे ही वे दोनों एक दूसरे के शत्रु बन एक दूसरे पर टूट पड़े होंगे क्योंकि उन दिनों आगन्तुकों से मिलने का यही ढंग था।

अथवा, यदि किसी प्रकार काफू इस बात को जान ले कि वह इस रहस्य-पूर्ण देश में लाई गई है, तो वह किस प्रकार पीछा करेगा ? यद्यपि प्रत्येक सम्भावना के विपरीत उसे यह यकीन होगा कि वह अभी तक जीवित है।

नहीं, मातुल के मस्तिष्क के क्षितिज के ऊपर अथवा नीचे कहीं कोई उम्मीद नजर नहीं आई। उसके लिये कुछ भी शेष नहीं था— केवल अपनी बुद्धि एवं साहस को संजो, अमानुषिक जन्तुओं की शक्ति एवं बुद्धि से, जो उसके जीवन के अन्त तक उसे चारों ओर से घेरे खड़े रहेंगे, अपनी जीवन रक्षा के लिये जूझने के अतिरिक्त— और वह अन्त अधिक दूर नहीं है।

घाटी के घुमाव और नीचे के उतराव ने पीछे से आती हुई भयानक, घृणापूर्ण एवं क्रोधित गर्जनाओं को पर्याप्त मद्धिम कर दिया था, यद्यपि फिर भी कभी-कभी कोई आकस्मिक गर्जन अथवा असीम वेदनायुक्त चीत्कार उसके कानों में अवश्य गूंज उठती थी। उसे विश्वास था कि वे अपने जीवन के अन्त तक अवश्य लड़ते रहेंगे तथा मृत्यु से बचा हुआ जीव उसका पीछा करना अवश्य जारी रखेगा।

एक बार वह यह जानने के लिये रुकी कि वे तीनों अभी तक युद्धरत हैं अथवा नहीं; उसने पीछे की ओर घूमकर घाटी के ऊपर दृष्टि डाली। उस समय वह यह नहीं देख सकी कि वह उस संकरी घाटी के अन्त पर पहुँच गई है और उसके सामने विस्तृत नदी एवं उसका रेतीला किनारा फैला हुआ है। वह यह भी नहीं देख सकी कि दर्रे के मुहाने पर एक मनुष्य छाया अकस्मात् उसी समय ठिठककर खड़ी हो गई, जैसे ही उस आकृति की दृष्टि मातुल पर पड़ी; न ही वह उसके उस आकस्मिक प्रयास को देख सकी जिससे वह पानी

की टक्करों से चिकने हुये एक शिला-खंड के पीछे छिप गया।

सन्तुष्ट हो कि अभी उसका पीछा नहीं किया जा रहा है, मातुल उस पथरीले मार्ग पर अपने अस्पष्ट पदचिन्ह छोड़ती हुई पुनः आगे बढ़ने के लिये उद्यत हुई। अगले क्षण जैसे ही वह घूमी, उसने अपने सामने विशाल जल-राशि, और सुदूर पार के किनारे को देखा। वह तेज़ी से किनारे की ओर बढ़ चली, ताकि वह उस स्थान के अधिक निकट पहुंच सके जो उसके प्रिय प्रदेश से कम से कम दूर हो।

जैसे ही वह उस शिलाखंड के निकट से गुजरी, जिसके पीछे वह आदमी छिपा हुआ था, उसका ध्यान एक पत्थर के हिलने की आवाज़ से उस ओर आकर्षित हो गया। वह एकदम उस ओर घूम गई। वह उसके बहुत समीप होने के कारण कूदकर उसके सामने आ खड़ा हुआ था। एक मांसल और पुष्ट हाथ ने उसके उड़ते हुये बालों को पकड़ लिया और दूसरे ने उठे हुये हाथ की कलाई को पकड़ लिया जिसमें लड़की ने अपना चाकू पकड़ा हुआ था और जिसमें अवर्णनीय शीघ्रता के साथ उसने उस पर प्रहार करना चाहा था।

उसके भावों को देखकर वह हँसा— यह वही अजनबी था जिसने उस पार की भूमि पर उसका पीछा किया था — और तब उसने उसे पकड़कर भींच लिया। मातुल शेरनी की भांति लड़ती रही और एक बार वह चीत्कार कर बैठी।

१०

शूर, मातुल को खींचता हुआ नाव की ओर ले चला, मातुल अभी तक उसके पंजे से मुक्त होने का प्रयास कर रही थी। जिस नाव में काकू सवार होकर वहाँ पहुँचा था, उस नाव पर पहिली बार उसकी दृष्टि गई, जो उसकी नाव के निकट ही किनारे पर लगी हुई थी। दूसरी नाव की उपस्थिति से वह अत्यन्त चकित था। नाव पर आने वाला कौन हो सकता है? नाव का भली भांति निरीक्षण किया जाने पर उसे यह स्पष्ट हो गया कि वह ठीक उसी ढंग पर बनी हुई थी, जैसी उसके कबीले में बनाई जाती थीं। जाति के कुछ लोग उसके पीछे अवश्य आये हैं। अपनी नाव के निकट घुटनों घुटनों पानी में खड़े होकर— वह मातुल को दृढ़ता से पकड़े हुए था— उसने एक ज़ोरदार ललकार लगाई।

तब ही उस चट्टान से, जो नदी के किनारे की ओर थी, पत्थरों के लुढ़कने की आवाज़ ने शूर और मातुल के ध्यान को उस ओर आकर्षित कर लिया। पहाड़ी के बीच से उतरती हुई एक मानव-आकृति दिखाई दी, जो उनकी ओर लपकती चली आ रही थी। उसके कन्धे गुहा-सिंह की खाल से ढके हुये थे। उसके घने काले बालों के बीच में एक लंबा पंख निकला हुआ था जो मानो दैत्यों के विनाश पर विजय की हुंकार भर रहा हो।

एक नज़र में शूर को इसका अनुमान हो चला कि उनकी ओर बढ़ने वाला उसके कबीले का व्यक्ति नहीं है। वह एक अजनबी है और इसलिये वह शत्रु है। मातुल, काकू को एकदम पहचान गई। उसे देखते ही उसके मुख से प्रसन्नता भरी एक हल्की सी चीख निकल पड़ी और उस चीख का उत्तर काकू ने एक उत्साह भरी हुंकार से दिया। शूर ने लड़की को निर्दयता से नाव के बीच फेंक दिया। मातुल को वह अपने एक हाथ से पकड़े रहा यद्यपि उसने मु

पाने के लिये अपनी समस्त शक्ति लगा डाली थी। दूसरे हाथ से उसने सर्वप्रथम अपनी नाव को पानी में खींचा और फिर काकू की नाव को गहरे पानी में लाया।

यद्यपि घूर को असुविधा हो रही थी, किन्तु फिर भी वह तेजी से काम करता रहा, क्योंकि पानी उसके घर के ही समान था, और फिर वह अपनी जाति द्वारा निर्मित उस बेहूदी नाव को बुरी से बुरी परिस्थितियों के बीच खेने में भी आश्चर्यजनक रूप से माहिर था। अन्त में वह काकू की नाव को लौटती हुई विशाल लहर के हवाले करने में समर्थ हो ही गया जो तेजी से किनारे पर लगी नाव को अपने साथ बहा ले गई। उसी समय अपनी नाव को भी उसने उसी लौटती लहर पर छोड़ दिया और कूदकर अपने कैदी के निकट सवार हो गया।

मातुल अपने घुटनों से उस पर प्रहार करती रही, साथ ही काकू को जोर जोर से पुकारती रही, और नाव से कूद जाने की अपने प्राणपण से चेष्टा करती रही, किन्तु घूर की पकड़ उस पर मजबूत होती चली गयी। वह एक हाथ से नाव खे रहा था, और जब काकू किनारे पर पहुँचा, तो उनकी नाव उसकी पहुँच से बहुत दूर निकल चुकी थी। काकू का पेड़ का घोंसला भी इसी प्रकार उससे दूर हो चुका था। उसके और मातुल के दरम्यान अनेक [illegible] एवं विकराल जन्तुओं को लिये उन्मत्त ब्रह्मपुत्र थी। प्रत्येक क्षण उन दोनों को दूर किये चला जा रहा था। गुहा-निवासी ने इस दूरी को समाप्त [illegible] लिये चेष्टा प्रारम्भ कर दी। अमानुषिक तीव्रता से उसने अपनी [illegible] उतार दी और पत्थर के कुल्हाड़े को फेंक दिया, और फिर वह [illegible] प्रदेश ढके हुये, और केवल एक चाकू लिये, कलकल करती हुई [illegible] लहरों वाली भयानक नदी में कूद पड़ा।

जैसे ही मातुल ने उसे नदी में कूदते हुये देखा, उसने पुनः [illegible] साथ घूर से बच निकलने के लिये हाथापाई शुरु कर दी। [illegible] सरक-सरक कर, उसने अपनी दोनों बाँहें घूर के गले में [illegible] उसकी गर्दन को दबाकर अपनी ओर इस प्रकार खींचा

चप्पू नहीं चला सका। शूर ने उसकी पकड़ से निकलने का प्रयत्न किया। वह अपने बन्दी को मारना अथवा घायल करना नहीं चाहता था— वह इतनी अधिक खूबसूरत थी कि उसे मारना अथवा घायल करना साहस से बाहर की बात थी— वह उसे एकदम पूर्ण रूप से शारीरिक स्वस्थ चाहता था जैसा कि वह इस समय थी।

धीरे-धीरे काकू निकट आता जा रहा था। दो बार छोटे जल-जन्तुओं के आक्रमण का उसे सामना करना पड़ा। एक बार वह विजयी हुआ और अगली बार जिन दो जन्तुओं ने उसे घेर लिया था, वे अपने शिकार को भूलकर आपस में ही भिड़ गये। अन्त में, शूर की नाव उसकी पहुँच में आ ही गयी। मातुल घृणा के साथ शूर से जूझ रही थी। वह अपनी शरीर की शक्ति के प्रत्येक इंच को शूर की हरकतों को रोकने में खर्च कर रही थी। वह बार-बार उसकी बाँहों को पकड़-पकड़ कर खींच रही थी। शूर कुछ भी नहीं कर सका, और काकू इस बीच में नाव के निकट पहुँचकर उसके एक छोर को पकड़ चुका था और एक टाँग रख ऊपर चढ़ने ही वाला था।

एक शक्तिशाली आकस्मिक झटके से शूर ने अपना दायाँ हाथ स्वतंत्र कर लिया। मातुल ने पुनः उसे पकड़ने का प्रयत्न किया, किन्तु तब ही सशक्त मुक्का उसके मुंह की ओर तन गया। अमानुषिक शक्ति लिये हुए वह मुक्का ठीक उसके सिर पर पड़ा। अकस्मात् उसकी आँखों के सामने अन्धकार छा गया और उसकी पकड़ शूर के प्रति ढीली पड़ गई। वह मूर्छित हो नाव की तली में लुढ़क गयी।

उसी क्षण शूर ने अपना चप्पू उठा लिया और अपने पाँवों पर खड़ा हो दनादन काकू के सिर और हाथों पर प्रहार करने लगा। काकू साहस एवं वीरता के साथ, इस भयानक दण्ड के बावजूद भी, नाव में सवार होने के लिये प्रयत्नशील रहा, किन्तु यह अत्यन्त असाध्य था, और अन्त में, अर्द्ध-मूर्छित, वह पानी में लुढ़क गया। शूर ने पुनः चप्पू चलाने शुरु कर दिये और वह भद्दी सी नाव उस पार की धरती की ओर बढ़ चली।

जब मातुल होश में आई तब उसने अपने आपको हरिणी की मुलायम

बालों वाली खाल पर एक बदशक्ल, पत्तों और घासों से बने झोंपड़े में लेटा हुआ पाया। उसके हाथ और पाँव मजबूती के साथ बैल की सख्त अंतड़ियों से बंधे हुए थे। जब उसने उनसे मुक्ति पाने के लिये हाथ पाँव फेंके, तो वे बंधन उसकी मुलायम खाल में घुस कर नृशंसतापूर्वक जख्म कर बैठे। अन्त में वह शान्त हो पड़ रही और सीधी टोप के समान उठी हुई झोंपड़ी की छत को घूरती रही।

वह जानती थी कि वह कहां है। यह उन लोगों की विचित्र गुफाओं में से एक थी, जिन्हें उसने पेड़ के तनों को खोखला करने में रत देखा था। वे ऐसा किस लिये कर रहे थे, अब वह यह भी जान चुकी थी। उसने प्रवेश द्वार की ओर अपना सिर घुमाया। दरवाजे के बाहर आदमी और औरतें छोटे-छोटे आग के ढेरों के चारों ओर बैठ, खा-पी रहे थे। रात का आगमन हो चुका था। इन सब के पीछे आग का एक बड़ा और ऊंचा सा घेरा था, जो इस छोटे से शिविर की सुरक्षा पंक्ति का कार्य सम्पन्न कर रहा था।

और आग के इस बाह्य घेरे के पीछे, अन्धकार के भयावह साम्राज्य से शिकारी जन्तुओं की गर्जन और दहाड़ने, गुर्राने और हुंकारने की अनेक आवाजें आ रही थीं, जो बस्ती के आगे-पीछे, चारों ओर से, उन पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के खून की प्यास लिये (जो सुरक्षा करने वाले आग के घेरे में सुरक्षित थे) उठ रही थीं।

कभी-कभी कोई छोटा लड़का, जलती हुई लकड़ी को उठाकर, रात्रि में कोलाहल करने वाले जन्तुओं के मध्य में फेंक देता था। फिर हल्के स्वरों में क्रोध भरी चीत्कारें और गड़गड़ाहट भरी गुर्राहटों का सम्मिलित सहगान शुरू हो जाता था और साथ ही एक क्षण के लिये वे इधर-उधर बिखर जाते थे। फिर रोशनी समाप्त हो जाती थी और अन्धकार के विपुल सागर में पुनः जलते हुये गोले उभर आते थे, जो उन हिंसक पशुओं की चमकती हुई आँखें थीं।

एक बार एक गुहा-सिंह, जो आदि काल के मनुष्यों की प... [illegible] पंक्ति से भिन्न था, लपटें उठती हुई अग्नि के घेरे को पार कर अन्दर

वह एक छोटे कुटुम्ब की अग्नि के निकट आकर रुका तथा एक बूढ़े आदमी को पकड़ कर ले जाने लगा। उसी क्षण पचास से अधिक बहादुरों ने अपने भाले संभाल लिये, और जैसे ही सिंह अपने शिकार को ले, लौटने लगा, और पुनः कूद, अग्नि के घेरे को पारकर अन्धकार में जाने लगा, उसी क्षण पचास से अधिक भालों ने उसे वायु के बीच में ही छेद डाला।

चीड़ की लकड़ी के लपट उठते हुये एक ढेर पर वह, अपने साथ बूढ़े को लिये हुये, आ गिरा। बहादुर अपने कुल्हाड़ों को हवा में घुमाते हुये एक-दम आगे की ओर बढ़े। बूढ़ा व्यक्ति यदि उन दर्जन से अधिक प्रहारों से टुकड़े-टुकड़े हो गया हो, जो उसे ले जाने वाले हिंसक को लक्ष्य कर छोड़े गये थे, तो क्या हुआ? वे उछले और अमानवीय प्रसन्नता के साथ ज़ोर-ज़ोर विजय हुँकार भरने लगे, क्योंकि एक भी कुल्हाड़े का वार किये जाने के पूर्व ही सिंह मर चुका था। बूढ़ा भी अपनी अन्तिम सांसें गिन चुका था। उसे उन्होंने जानवरों के खाने के लिये लपटों से बाहर फेंक दिया, फिर खाल उतारने के पश्चात् सिंह को भी उसी का साथी बना दिया।

यह सब कुछ उन नौका-निर्माताओं के लिये, जो उत्तर में नई मछलियों को पकड़ने के लिये आये थे और ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे जंगल के निकट, डेरा डाले हुये थे, दिल हिला देने वाला था; किन्तु मातुल के लिये वह किंचित् भी रोमांचकारी नहीं था। ऐसे अनेक लोमहर्षक दृश्यों को वह अपनी शैशवावस्था से देखती चली आ रही थी। वास्तव में, उसकी जाति के लोगों के लिये, रात्रि में हिंसक एवं जंगली जन्तुओं के आक्रमण का भय काफी कम था, क्योंकि उसकी जाति गुहाओं में रहती थी, जिनके मुंह को चतुष्पदीय शत्रुओं से सुरक्षा के लिये आसानी से बन्द किया जा सकता था। किन्तु वह इस प्रकार की अग्नि के घेरे से भी परिचित थी, जो जाति की सभा अथवा दावत के दौरान में चट्टान के नीचे एकत्रित होने पर, जलाई जाती थी, और वह उन हिंसक पशुओं के इस आकस्मिक आक्रमण से भी भली-भांति भिज्ञ थी, जो रात के समय ही मनुष्य के खून से अपनी प्यास बुझाने निकला करते थे।

अन्त में लोग अपने-अपने झोंपड़ों को लौट गये। बाहर केवल दो लड़कियाँ

हो रह गई, जिनका काम यही था कि वे रात भर आग के गोले को मद्धिम न पड़ने दें। मातुन इस नीति से भी परिचित थी, और वह ऐसा करने के उपयोगी अभिप्राय को भी जानती थी। स्त्रियां एक कबीले की सबसे कम मूल्यवान वस्तुयें होती थीं। रात्रि में भयावह आकस्मिक आक्रमण से मुक्ति पाने के लिये स्त्रियों का बलिदान कोई मूल्यवान नहीं था— युवा पुरुषों की सुरक्षा अति आवश्यक थी, क्योंकि वे शीघ्र ही लड़ाका बन जायेंगे। एक अकेली लड़की की मृत्यु की कोई गणना नहीं है—उसका अभिप्राय उसी समय पूर्ण हो जाता है, जब उसके और उसकी साथिन की चीत्कार बहादुरों को जगा देती हैं।

किन्तु बूढ़ी और बेकार स्त्रियाँ इन युवा लड़कियों के स्थान पर काम क्यों नहीं लाई जायें? इसका केवल एक यही कारण हो सकता है, कि बूढ़ों के मुकाबिले युवाओं में आत्मरक्षा की भावना अधिक बलशाली होती है। एक बूढ़ी स्त्री एक युवा नारी की तुलना में अपने जीवन के प्रति कम सचेत रहेगी, और इसलिये वह सो सकती है, और आग को बुझ जाने दे सकती है;— वह अधिक से अधिक कुछ वर्ष या कुछ दिन ही जीवित रहेगी, और फिर उन प्रारम्भिक दिनों में तो जीवन के अगले क्षण की भी कोई आशा नहीं रहती थी।

इसकी अपेक्षाकृत, युवा स्त्री अपनी सुरक्षा के लिये आग को अपनी अभिलाषा से कभी भी नहीं बुझने देगी, और इस प्रकार वह जाति के लिये भी अधिक सुरक्षा रख सकती है। इस प्रकार हीं, सम्भवतः इस पवित्र प्रथा का प्रचलन हुआ है कि कुमारी लड़कियों को विवाह के पूर्व मन्दिरों में अनन्त एवं पावन अग्नि की साक्षी दिलाई जाती है।

तब ही उस समय प्रवेश द्वार पर उभरी एक मनुष्य आकृति से उस झोंपड़े में अंधकार छा गया, जिसमें मातुन को बाँधकर डाला हुआ था— आने वाला पूर था। मातुन उसे एकदम पहचान गई। वह उसके निकट आया और घुटनों के सहारे बैठ गया।

"मैंने औरतों को तुमसे दूर रखा है," वह बोला। "शायद तुम्हारे टुकड़े-

टुकड़े कर डालती और अन्य स्त्रियाँ इस काम में उसका हाथ अवश्य बँटाती। किन्तु तुम्हें उनसे भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं। मुझे वचन दो कि तुम विरोध, अथवा भागने का प्रयत्न नहीं करोगी, तो मैं हमेशा के लिये इन समस्त बन्धनों से तुम्हें मुक्त कर दूंगा। अन्यथा जब मैं कहीं जाऊँगा तो मुझे तुम्हें बाँधकर डालना पड़ेगा, और तब फिर गीथा तुम्हारे साथ क्या सलूक करेगी, इसकी कल्पना ही भयंकर है, क्योंकि तुम असहाय एवं विवश हो बंधी हुई पड़ी होगी और मैं उसे दूर रखने के लिये यहाँ रहूँगा नहीं। कहो, क्या कहती हो।"

"मैं तो केवल यही कहती हूँ कि जिस क्षण मेरे हाथ स्वतंत्र होंगे, तब ही मैं लड़ना शुरू कर दूंगी, और उस समय तक लड़ती रहूंगी, जब तक कि मैं स्वयं न मर जाऊं अथवा मार न डाली जाऊं," मातुल ने उत्तर दिया, "और जब मेरे पांव स्वतंत्र हो जायेंगे, तब मैं अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा भाग खड़ी हूँगी।"

थूर ने कंधों को उचकाया।

"ठीक है", वह बोला। "इससे तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा, किन्तु, हां, हमेशा इस सुविधाजनक दशा में बंधे पड़े रहने का आनन्द अवश्य मिलता रहेगा।"

वह झुककर गांठें खोलने में व्यस्त हो गया, जो मातुल के पांव और टखनों को बांधे हुये थीं। झोंपड़ी के बाहर, अन्धकार में कोई दबे कदमों से आगे बढ़ रहा था। थूर उस जन्तु के निरन्तर आगे बढ़ने वाले हलके पदचापों की क्षीण आवाज को नहीं सुन सका। जब वह झुककर बैल की खाल से बनी रस्सी में लगी सख्त गाँठों को खोलने में व्यस्त था, तो उसकी पीठ झोंपड़ी के प्रवेश द्वार की ओर थी। अब तक वह टखनों की रस्सी खोल चुका था, और अब घुटनों पर बंधी रस्सी को खोलने में अपने ध्यान को केन्द्रित किये हुये था। मातुल शान्त भाव से लेटी हुई थी। उसकी आंखें द्वार के बाहर फैले धुन्धले अन्धकार की ओर लगी हुई थीं। जब तक वह बन्धन-मुक्त नहीं हो जाती है, तब तक उसे धैर्य रख प्रतीक्षा करनी होगी, और फिर वह उस समय तक

लड़ती रहेगी, जब तक कि वह पुरुष उसे मार ही न डाले।

अकस्मात्, प्रवेश द्वार पर छाने वाले अन्धकार के धब्बे से वह सचेत हो उठी। वह किसी की परछाईं थी। जन्तु हिंसक जीव से अधिक बड़ा नहीं था, यद्यपि वह लकड़बग्घा अथवा जंगली कुत्ता भी हो सकता था। मातुल पुरुष को सचेत करने वाली थी, कि जब ही उसे इस बात का ध्यान हो आया कि सचेत न करने से शीघ्र उसको अभिलषित मृत्यु ही नहीं हो जायगी, बल्कि उसी क्षण वह अपने शत्रु से भी बदला ले लेगी।

उस क्षण तक वह बिल्कुल शान्त लेटी रही जब तक धूर ने उसकी अन्तिम गांठ भी नहीं खोल डाली। धूर के बिल्कुल पीछे रात्रि में चोरी से घुसने वाला हिंसक धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। मातुल उसके चमकते दाँतों और लार टपकती दाढ़ों का अनुमान लगा पा रही थी। अगले ही क्षण एक हिंसक एवं अमानवीय गुर्राहट होगी, जैसे ही वह जन्तु तेज़ी से छलांग भर अपने शिकार पर टूट पड़ेगा।

या वह छलांग मार आदमी को पारकर उसके अरक्षित गले पर आ पड़ेगा। मातुल की साँसें उस अज्ञात भय से फँस गई। एकबारगी वह काँप गई, मानो मृत्यु उसके अतीव निकट हो। धूर की अंगुलियों ने अन्तिम गाँठ खोल डाली। उसने मातुल के घुटनों से रस्सी की लपेट को खोला, और फिर सन्तुष्टि से हल्का सांस छोड़ा।

और तब ही मातुल ने देखा कि आदमी के पीछे वाली वस्तु अपने पिछले पाँवों पर खड़ी होकर सम्पूर्ण शक्ति से उसकी पीठ पर टूट पड़ी। कोई अमानवीय गुर्राहट नहीं हुई, न ही कोई आवाज़ हुई। आक्रमण की निस्तब्धता, हिंसक गर्जना एवं गुर्राहटों की तुलना में, जो पशुओं की एक आदत सी है, निश्चयात्मक रूप से अधिक भयानक हो उठी थी।

धूर अपने प्रतिपक्षी से जूझने के लिये एक ओर को मुड़क गया। एक ही क्षण में वे एक दूसरे पर भयंकर आघात-प्रतिघात करने में व्यस्त हो गये। मातुल एकदम उठकर खड़ी हो गई। उसके हाथ अभी तक बँधे हुए थे, किन्तु

उसके पाँव मुक्त हो चुके थे। अवसर ने उसका दरवाजा खटखटाया था, रक्त-पिपासित प्राणियों के ऊपर से छलांग भर, मातुल झोंपड़ी से बाहर निकल आई, और निकटवर्ती जंगल में प्रविष्ट हो गई।

११

नानू का पुत्र काफ़ू, दूर के चप्पू के प्रतिघातों से अर्द्ध-मूर्छित हो, अभी तक तैरने का प्रयत्न किये जा रहा था। अन्त में उसे कुछ कुछ होश आ चला। तब उस नाव के पीछे जिसमें मानुल को उस किनारे पर ले जाया जा रहा था, दौड़ने की निरर्थकता का विचार कर, वह उलटे किनारे की ओर बढ़ चला। कुछ क्षणों तक आराम करने के लिये, वह किनारे के गरम रेत पर लेट रहा। दूर उस पार के किनारे की ओर, एक छोटे से धब्बे को बढ़ता हुआ वह देख रहा था। यह वही नाव होगी, जिसमें मानुल को उससे छुड़ाकर ले जाया जा रहा था। काफ़ू ने धब्बे की ओर संकेत किया—दूर अवस्थित एक पहाड़ी अपनी काली चोटी को उठाये दूसरे किनारे के होने का संकेत कर रही थी।

काफ़ू का ध्यान अकस्मात् ही उस नाव की ओर गया जो उसे किनारे पर लाई थी। उसने नदी के विशाल वक्ष पर अपनी नजर दौड़ाई, किन्तु वह उसे कहीं भी नजर नहीं आई। वह किनारे के साथ-साथ चलने लगा। पानी से चिकने हुए पत्थरों के ढेर के पीछे, उसे अपनी मनोवांछित वस्तु मिल गई। वह अपनी पूरी ताकत से विजय-नाद कर उठा, मानों सारे आकाश को अपने हर्ष से गुंजा देना चाहता था। उसके सम्मुख, नाव पत्थरों के बीच पड़ी हुई थी। उसके अन्दर चप्पू भी पड़े हुए थे। तब वह उस स्थान की ओर दौड़ उठा, जहाँ वह अपनी पोशाक और कुल्हाड़े को छोड़ आया था। उन्हें उठाने के पश्चात् वह उसी स्थान पर लौट आया।

एक क्षण के लिये उसने लहराती हुई नदी के विस्तृत वक्ष पर अपनी नजर डाली। वह कूदकर नाव पर चढ़ गया, चप्पू पकड़ जोर जोर से पानी में मार दूरवर्ती तट की ओर बढ़ चला। चप्पू, कुल्हाड़े और पत्थर के चाकू के सहारे वह नदी के विशाल एवं विकराल जन्तुओं से लड़ता रहा। यात्रा के दौरान में

उसे अनेक द्वन्द्व एवं युद्ध करने पड़े, जिन्होंने उसकी गति में महान् अवरोध उत्पन्न कर दिया था। किन्तु वह निरुत्साहित नहीं हुआ। इसके अतिरिक्त वह और कर ही क्या सकता था? यही उसका जीवन था, जैसे कि पृथ्वी के जीवन के आरम्भ में उन असंख्य प्राणियों का था, जो पृथ्वी पर घूमते थे अथवा जल के अन्दर शिकार करते थे।

उस समय पूर्ण अन्धकार छा चुका था, जबकि लहरों की टकराने की आवाज़ ने काकू को किनारे के समीप आ जाने की सूचना दी। अतः वह अपनी नाव का रुख उसी ओर छोड़ बढ़ चला। अब उसकी नाव दौड़ती हुई शिविर के उत्तर में सौ गज़ की दूरी पर रुक कर, रेत पर चढ़ गई। काकू कूद कर उतर पड़ा और नाव को वहीं उसी दशा में छोड़ गया। उसे सन्देह था कि अब उसे उसका पुनः भी प्रयोग करना पड़ेगा या नहीं। किन्तु उसने अपने मन में ठान लिया कि जैसे ही वह अपनी जाति के लोगों में पहुँचेगा, वैसे ही उसी प्रकार की नाव बनाने में ज़रा सी भी देरी नहीं करेगा; जिससे वह अपने पिता की जाति के लोगों की प्रसन्नता एवं प्रशंसा प्राप्त करेगा।

नौका-निर्माताओं के कैम्प के निकट पहुँचकर काकू ने कैम्प को हिंसक जंगली पशुओं से घिरे हुए पाया जिसकी पहले ही से उसे आशा थी। जब तक वह कैम्प से विपरीत दिशा में जंगल की ओर नहीं पहुँच गया, तब तक वह मनुष्य-रक्त के उन लोभियों से घिरा रहा, और उनके बीच से अछूता बचकर नहीं निकल सका। एक बार वह एक विकराल गुहा-रीछ से बड़ी कठिनाई से बच पाया, जो शिकार की तलाश में कैम्प की ओर दृष्टि लगाये बैठा हुआ था। और दूसरी बार वह एक विशाल गैण्डे से लगभग टकरा ही गया होता जो जंगल के बाहिरी ओर के मैदान की लम्बी घास में छिपा हुआ था। किन्तु जंगल में एक बार प्रविष्ट हो जाने पर वह पेड़ों पर चढ़ इनके सहारे आगे बढ़ने लगा, क्योंकि उनकी शाखाओं पर हिंस्र जन्तुओं का ऐसा कोई विशेष डर नहीं था जो उसके लिये चिन्ता का कारण हो। एक चीता पेड़ की नीची शाखाओं पर चढ़ आया किन्तु यद्यपि वह बीसवीं शताब्दी के चीते की तुलना में कहीं अधिक शक्तिशाली था तो भी काकू ने उसकी ओर उपेक्षा भरी

दृष्टि से देखा और अच्छी प्रकार घुमाकर चलाये गये कुल्हाड़े से, यदि वह मरा नहीं तो, उसे भागने के लिये मजबूर कर दिया। रेंगने वाले जन्तु जंगल के उन यात्रियों के लिये अतीव भय का कारण थे जो पेड़ों की शाखाओं के सहारे सफर करते थे, क्योंकि प्रायः पेड़ों के कोटरों में बड़े-बड़े भयानक अजगर कुंडली मारे बैठे रहते थे जिनकी भयावह लपेट में आ जाने पर शक्तिशाली एवं चतुर शिकारी भी असहाय बच्चे की भाँति रह जाते थे।

गाँव के पिछली ओर काकू पेड़ों की सहायता से बढ़ता गया। वह अंधकार में एक मजबूत शाखा से दूसरी पर कूदता हुआ आगे बढ़ता चला जा रहा था। जब दो पेड़ के बीच का फासला इतना अधिक हो जाता था कि उसे एक ही छलांग में पार नहीं किया जा सकता था, तो काकू जमीन पर उतर आता था और मध्य के फासले को हरिण की चौकड़ियों के समान उछल कर तेजी से पार करता था। अन्त में वह कैम्प के समीप वाली जंगल की सीमा तक पहुँच गया। *अग्नि का घेरा उस पेड़ के नीचे बिल्कुल ही समीप था जिस पर वह छिपा* हुआ था। वह देख पा रहा था कि लड़कियाँ आग को प्रज्वलित रख रही हैं और दूर अन्दर की ओर जाति के शेष लोग छोटे छोटे अग्निकुण्डों को घेरे हुये बैठे हैं और हड्डियों को चूस रहे हैं, अथवा उन पर चढ़े माँस को नोच-नोच कर साफ कर रहे हैं।

उसने कैम्प के पिछली ओर से अग्नि कूद कर आने वाले शेर को देखा। उसने उसे बूढ़े को उठाकर ले जाते हुए देखा। उसने बहादुरों को झपट कर उठते हुए और शेर की ओर लपकते हुये भी देखा। उसने देखा कि कबीले के *प्रत्येक व्यक्ति का ध्यान और आँखें* उसी घटना की ओर लगी हुई है, जो काकू से काफी दूर पर घट रही थी। वह लड़कियाँ भी जो उसके पेड़ के नीचे आग को प्रज्वलित रखने में संलग्न थीं, दौड़ कर उस हिंसक शिकारी के शिकार हो जाने की घटना को अपनी आँखों से देखने के लिये घटना-स्थल पर पहुँच गई।

विधि की इस आकस्मिक घटना का लाभ उठा, काकू शीघ्रता से धरती पर कूद पड़ा और झोंपड़ियों की परछाईं की ओर दौड़ा जो एक बड़ाकार गोल घेरे के रूप में अग्नि की बाह्य सुरक्षा पंक्ति की ओर बनी हुई थी। उनमें

छाया में अपने को अधिक सुरक्षित रूप से छिपाने में सफल हो सकता था। इसलिये वहीं के सब से अन्धकारमय भाग में पहुँच कर वह पेट के बल लेट गया। कुछ समय तक वह निश्चेष्ट हो ध्यान से सुनता और हवा को सूंघता हुआ लेटा रहा। यहाँ अपनी खोज का कुछ भी परिणाम न पा, वह सावधानी से उठा और चारों हाथ पैरों की सहायता से झोंपड़ियों के साये में कुछ फीट आगे की ओर रेंग गया। वह पुनः सुनने और सूंघने के लिये रुक गया। आधे घण्टे तक हाथ पाँव के सहारे वह धीरे-धीरे झोंपड़ियों के पीछे आन्तरिक दायरे में प्रविष्ट होता गया। कैम्प का प्रत्येक व्यक्ति निद्रा की गोदी में विलीन हो चुका था। केवल अग्नि को प्रज्वलित रखने वाली लड़कियाँ जागती रहीं।

अन्त में, काकू ने एक झोंपड़ी के अन्दर से आती हुई धीमी आवाज़ों को सुना जिसके पीछे वह अभी-अभी सरक कर आया था। वह एकदम शांति से लेट गया और उसने नाक को खाल और पत्तों से बनी झोंपड़ी की तली से कुछ इंचों की दूरी पर लगा दी। तब ही उसके शक्तिशाली नथुनों में उसकी मनो-वांछित गन्ध ने प्रवेश किया जो इस बात का प्रमाण थी कि मातुल वहाँ उस झोंपड़ी में है। किन्तु उसके साथ कोई अन्य भी अवश्य है।

प्रत्येक सावधानी के साथ काकू झोंपड़ी के प्रवेश द्वार की ओर सरक चला। वहाँ भी घना अन्धकार था क्योंकि लड़कियों ने वहाँ की आग को दहकते हुए शोलों के रूप में रह जाने दिया था। प्रवेश द्वार के सम्मुख उसने मातुल की आवाज़ को स्पष्ट रूप से सुना और एक मानव आकृति को उस पर झुके हुए पाया। क्रोध और घृणा से उसका खून खौल उठा। एक शिकारी जन्तु की भाँति अपने चारों हाथ-पैर के सहारे निश्शब्द चलता हुआ वह, अशंकित शूर के ठीक पीछे, झोंपड़ी में प्रविष्ट हो गया। फिर आवाज़ किये बिना ही पाँव के सहारे खड़ा हो अपनी पूरी शक्ति से अजनबी की पीठ पर टूट पड़ा।

उसने अपना चाकू हाथ में पकड़ा हुआ था और उसके दाँत क्रोध से खुले हुए थे। दोनों एक-दूसरे को नोचते-कचोटते झोंपड़ी के फर्श पर एक ओर को लुढ़क गये। अन्त में शूर ने सहायता के लिये पुकार लगाई क्योंकि युद्धकला में

काकू उससे कहीं अधिक कुशल एवं प्रवीण था। उसका लम्बा चाकू अभी तक कोई सफल प्रहार नहीं कर पाया था क्योंकि धूर भी एक अनुभवी लड़ाका था। धूर ने काकू के अनेक बलशाली एवं भयावह प्रहारों को नाकाम कर दिया था, किन्तु फिर भी उसके कई घाव हो गये थे जिनसे खून बह रहा था और उसका गला एवं सीना काकू के दांतों से कई स्थानों पर बुरी तरह से कट गया था।

उसकी पुकार के प्रत्युत्तर में सारा गाव चीखता चिल्लाता जाग गया और प्रत्येक झोंपड़े से हाथ में छोटे बरछे लिये लड़ाका निकल पड़े। स्त्रियाँ और बच्चे भी झोंपड़ियों से निकल आये। मोंगा, धूर की पत्नी, वहां पहुँचने वालों में सर्वप्रथम थी। उसने अपने पति की आवाज़ पहचान ली थी और इस बात का अनुमान लगा लिया कि वह मुसीबत में फंसा हुआ वहां हो सकता है। एक क्रोधित चीती के समान वह उस झोंपड़ी की ओर झपटी, जिसमें उस सुन्दर अपरिचिता को कैद किया हुआ था। उसके पीछे-पीछे लड़ाका भी आ पहुँचे। एक के हाथ में जलती हुई लकड़ी थी, जिसे वह निकट जलती हुई आग से उठा लाया था। उसने इस बात की परवा किये बिना ही कि वह कहाँ जाकर गिरेगी, उसे झोंपड़ी में फेंक दिया। भाग्य से वह उन दोनों युद्धरत व्यक्तियों के पीछे झोंपड़ी की दीवार के निकट जा गिरी। उसी समय सूखे पत्तों ने, जो खालों के नीचे से झाक रहे थे, आग पकड़ ली और झोंपड़ी का आन्तरिक भाग अकस्मात् फूट उठने वाली लपटों के तीव्र प्रकाश से प्रदीप्त हो उठा।

जब बचाव के लिये एकत्र हुये लोगों ने देखा कि उनके साथी से कोई अजनबी अकेला ही भिड़ा हुआ है तो वे उन दोनों पर टूट पड़े। यद्यपि काकू बड़ी बहादुरी से उनका सामना करता रहा है, फिर भी वह उनकी पकड़ में आ गया। अब तक सारी झोंपड़ी अग्नि के ताण्डव का दूसरा रूप बन चुकी थी, इसलिये उसके विपक्षी उसे ज़बरदस्ती वहाँ से बाहर निकाल लाये। बाहर उन्होंने उसके हाथ और पाँवों को कस कर बाँध डाला, और फिर अग्नि के नृत्य से गांव को सुरक्षित रखने में प्रयत्नशील हो गये। उन्होंने अपने भालों के प्रहारों से सुलगती हुई झोंपड़ी को ढा दिया और भालों की [illegible] ताज़ी खाल से पीट-पीट कर बुझाना शुरू कर दिया।

युद्ध की उत्तेजना में भी, काकू एक क्षण के लिये मातुल को नहीं भूल
ा। जब जलती हुई लकड़ी ने झोंपड़ी के अन्तर को प्रकाशमान कर दिया
उसने असफल दृष्टि से चारों ओर मातुल की खोज की थी, पर मातुल
प्त हो चुकी थी।

उसे आश्चर्य हो रहा था कि मातुल का क्या हुआ? झोंपड़ी के फर्श पर
पड़ी रहने की उसकी दशा से उसे यह स्पष्ट हो गया था कि वह मज़बूती से
बंधी पड़ी हुई है, अन्यथा वह अपने प्रतिपक्षी के विरुद्ध दाँतों और नाखूनों से
जिहाद बोल चुकी होती। इस स्थान से, जहाँ पर वह जली हुई झोंपड़ी के अव-
शेषों के सम्मुख पड़ा हुआ था, उसने उसे खोजने के लिये दृष्टि इधर उधर
दौड़ाई। उसकी नज़र इस बार भी असफल रही, किन्तु उसने एक दूसरी औरत
को अवश्य देखा— एक युवा औरत, जिसे सुन्दर तथा मोहक कहा जा सकता
था, किन्तु जिसकी आंखों में हिंसक पशु के भाव भरे हुए थे। उसके मुख की
प्रत्येक मुद्रा में घृणा, ईर्षा एवं क्रोध स्पष्ट झलक रहा था। वह गीगा थी। वह
उसके निकट आई।

"तुम कौन हो?" वह चिल्लाई।

"मैं नानू का पुत्र काकू हूं," काकू ने उत्तर दिया।

"क्या तुम उसी लड़की की जाति के हो, जिसकी झोंपड़ी में तुमने मेरे
पति को पाया था?" उसने आगे पूछा।

काकू ने सिर हिला कर स्वीकार कर लिया।

"वह मेरी सहवासिनी बनने वाली थी," काकू बोला। "वह कहाँ है?"

गीगा को अब पहली बार उस सुन्दर क़ैदी की अनुपस्थिति का भान हुआ
वह शूर की ओर घूम गई।

"औरत कहाँ है?" उसने कर्कशता से पूछा। "तुमने औरत को कहीं छि
दिया है। अब तुम उसे मेरे पंजे से दूर नहीं रख सकते। इस बार मैं उस
दिल अवश्य चीर डालूंगी और उसका खून पीऊंगी।"

शूर उद्वेग से देखता रहा।

"औरत कहां है?" उसने वीरों से पुकार कर पूछा। किन्तु मालूम पड़ता था कि किसी को कुछ भी ज्ञान नहीं था।

फौरन ही गांव में छान-बीन आरम्भ हो गई। लड़ाकू वीर इधर-उधर झोंपड़ियों में और उनके पीछे तलाश करने लगे। काबू लेटा हुआ इस परिणाम की उत्सुकता से प्रतीक्षा करता रहा। जैसे ही यह स्पष्ट हो गया कि मानुन बच कर भाग निकली है, उसका हृदय खुशी से उछलने लगा। अन्त में खोजने के लिये जब कोई भी स्थान शेष नहीं रहा, तो छान-बीन करने वाले एक स्थान पर इकट्ठे हो गये।

गोगा काबू की ओर मुड़ी।

"तुम्हारी औरत मुझ से बच निकली है," वह चिल्लाई, "किन्तु उसका बदला मैं तुम से लूंगी"; और वह उस निहत्थे विवश लेटे मनुष्य पर चण्डिका की भांति चढ़ गई।

यदि एक लम्बे वीर ने आगे बढ़कर उसे रोक नहीं लिया होता, तो वह अपने अन्धे क्रोध में काबू की आंखें बाहर निकाल लेती। उस बहादुर ने उसके बालों को पकड़ लिया, और उसे बड़ी निर्दयता से झटका देकर शिकार से दूर कर दिया। फिर बालों के सहारे ही निर्दयतापूर्वक खींचकर उसे धराशायी कर दिया।

"अपनी औरत को यहां से ले जाओ," उसने शूर से कहा। "क्या एक औरत मेरी जाति पर राज्य करेगी? इसे ले जाओ और इसे मारो, ताकि यह समझ जाय कि पुरुषों के कार्यों में हस्तक्षेप करना औरतों को शोभा नहीं देता है। फिर तुम अपने लिये कोई दूसरी औरत चुन लेना, ताकि ये औरतें भी इसके काम से कुछ सबक ले सकें।"

शूर अभागिनी औरत पर टूट पड़ा और उसे अपनी झोंपड़ी की ओर घसीटता हुआ ले गया। बाद में वहां से शरीर के मांस में भाला गड़ने की आवाजें और एक औरत के गले से निकली चीत्कारों और कराहटों की आवाजें

आती हुई सुनाई पड़ीं।

काकू का मन घृणा से भर उठा। उसकी जाति में औरतों के प्रति ऐसा व्यवहार नहीं किया जाता था। उसने सरदार के हृष्ट-पुष्ट शरीर की ओर देखा जो उसके सिर के ऊपर खड़ा हुआ था। ठीक है, वे उसे मार क्यों नहीं डालते ? पुरुष वन्दी के साथ इसके अतिरिक्त और कौन सा सलूक हो सकता है? भाग्य ने जिस दशा में काकू को ला फेंका था, उस दशा में किसी अन्य को उसके अपने कवीले में भी ठीक दिल पर किये गये भाले के प्रहार से सदा के लिये शान्त कर दिया गया होता। उसे अभी तक यही सोच था कि मातुल किधर चली गई। सुरक्षित वच निकलने पर क्या वह उसे जीवित पा सकेगा? उसके दिल में इच्छा थी कि वह मातुल को खोजने तक अवश्य जीवित रहे और उसे अपने पिता की गुहा में सुरक्षित देख ले।

सरदार उसकी ओर अभिलाषा से घूरे चला जा रहा था किन्तु उसने उसे समाप्त करने के लिये कोई हरकत नहीं की और न ही कोई आदेश दिया।

"तुम कौन हो ?" अन्त में उसने पूछा।

"मैं नानू का पुत्र काकू हूँ", वन्दी ने उत्तर दिया।

"तुम कहाँ से आये हो?"

काकू ने उत्तर की ओर सिर घुमाया।

"हिमालय पर्वतमालाओं के निकट से," उसने उत्तर दिया। "और यदि तुम उस ओर गये तो तुम नारी-हन्ताओं को मेरे पिता की जाति सदा के लिये मिटा देगी।"

"बातें तो बड़ी-बड़ी करते हो," सरदार ने कहा।

"मैं सच कह रहा हूं," काकू ने विरोध किया। "मेरे पिता की जाति तुम जैसे आदमियों पर हँसेगी— जो गाय की खाल पहनते हैं। इससे यही स्पष्ट हो जाता है कि तुम लोग किस स्वभाव के हो। मेरे पिता के वहादुर अर, जोर और ऊ की खालों को पहनते हैं और उनके पैरों में ता और घू की खालों के

गॅन्डन होते हैं। वे मनुष्य हैं। वे हंसेंगे, जब वे अपनी औरतों और बच्चों को तुम्हें लाठियों से भगा देने के लिये भेजेंगे।"

यह घोर भयानक अपमान था, नौका-निर्माताओं का सरदार क्रोध से कांपने लगा।

"तुम्हें मानना ही पड़ेगा," वह चिल्लाया, "कि हम लोग भी आदमी हैं। और तुम्हारे मौन के ढंग से यह स्पष्ट हो जायगा कि तुम वास्तव में क्या इतने ही बहादुर हो जैसा कि तुमने बयान किया है। कल तुम अन्तिम बार सूर्यास्त देख सकोगे— जब दिन छिप जायगा, और रात्रि की आग प्रज्वलित कर दी जायगी तो तुम्हारी मौत का तमाशा शुरू हो जायगा। किन्तु अपनी मृत्यु से पहले ही नहीं, बल्कि आखिरी सांस तक, तुम उस औरत के लिये चिल्लाते रहोगे जिसे तुम सहवासिनी स्वीकार कर चुके हो और हमसे अपने को इस दुर्गति से निकाल देने के लिये प्रति क्षण याचना करोगे।"

काडू उसकी ओर देखकर हंसा। उसने उन दुरस्थ व्यक्तियों के बारे में सुना था जो अपने कैदी को दारुण यातनायें देते थे। इसलिये उसने अनुमान लगा लिया कि सरदार का क्या अभिप्राय है। ठीक है, वह उन्हें दिखा देगा कि मानू का पुत्र किस प्रकार मरेगा।

उसी समय सरदार ने कुछ लड़ाकों को, काडू को निकटस्थ झोंपड़ी में घसीट ले जाने का आदेश दिया। दरवाजे के सामने पहरेदार खड़ा कर दिया गया, क्योंकि मानुन के हवा हो जाने से उन्हें सचेत कर दिया था।

लम्बी रात्रि, धीरे-धीरे चलने वाली बैलगाड़ी की भाँति सुबह की अपनी मंजिल पर पहुँच गई। बाल-रवि समस्त व्योम को रक्तिम बनाता हुआ, ब्रह्मपुत्र नदी के दूरस्थ किनारे से उदित होता दिखाई पड़ा। गाँव वाले भी जाग कर अपनी-अपनी दिनचर्या में लग गये। काडू की नाक में भोजन पकने की सुगन्ध प्रविष्ट हो रही थी। वह अत्यन्त क्षुधित था, किन्तु उन्होंने उसे एक भी टुकड़ा नहीं दिया। वह प्यासा था, किन्तु उसके लिये कोई एक घूट पानी भी नहीं लाया। और वह इतना गर्वीला था कि उसने इसके लिये [illegible]

सकता था।

यद्यपि वह जानता था कि सन्ध्या का धुंधलापन उसकी यातनाओं के प्रारम्भ का संकेत होगा, जो उसे मिटा देने के लिये दी जायेंगी, तो भी उसने डूबते सूर्य की प्रथम धुंधली छाया का हँस कर स्वागत किया।

वे चाहे उसे कैसी भी कितनी कठोर यातनायें क्यों न दे, किन्तु वे स्थायी तो होंगी नहीं। जल्दी या देरी से उसकी सांसें छूटनी हैं ही, और केवल एक इसी धुंधली आशा के साथ नानू का पुत्र काकू अपने जीवन की सांध्य की प्रतीक्षा में लग गया।

मछेरे अपने शिकार से लौट आये। आग की बाह्य सुरक्षा पंक्ति प्रज्वलित कर दी गई और उसके साथ-साथ ही अन्दर भी छोटी-छोटी अग्नियाँ प्रदीप्त हो उठीं। लोग घुटनों के बल बैठ, आग को चारों ओर से घेर कर, जानवरों की भाँति अपने भोजन पर टूट पड़े। अन्त में वे अपने शाम के खाने से निवृत्त हो गये। कुछ आदमी मिलकर लकड़ी का एक बड़ा सा लट्ठा उठा लाये, और बाह्य अग्नि पंक्ति एवं झोंपड़ियों के बीच की जगह में अपने भालों से गड्ढा बना कर उसे गाड़ दिया।

फिर दो लड़ाका उस झोंपड़ी में आये जहाँ काकू लेटा हुआ था। उन्होंने उसकी टाँगें पकड़ लीं और पीठ और कन्धों के सहारे उसे सम्पूर्ण गाँव में घसीटते हुए फिरे। औरतों और बच्चों ने नुकीली वस्तुओं से उस पर प्रहार किया, उस पर पत्थर फेंके और थूका। नानू के पुत्र काकू ने कोई भी प्रबोध वचन नहीं कहा। इतना ही नहीं इसके विरोध में उसके मुख के भावों में भी कोई कठोरता नहीं आई। किन्तु उन प्रहारों एवं यातनाओं से उत्पन्न हुई वेदनाओं ने उसके चेहरे पर कष्ट का एक हल्का आवरण अवश्य चढ़ा दिया।

अन्त में उसके प्रहरी लट्ठे के समीप पहुँचकर रुक गये जो इस समय तक ज़मीन की पकड़ में काफ़ी मजबूत हो चुका था। उन्होंने झटका देकर काकू को खड़ा कर दिया और उस लट्ठे के सहारे मज़बूती से बाँध दिया। उसके चारों ओर सूखी लकड़ियों का ढेर लगा दिया गया। वह जानता था कि उसे धीरे-

धीरे भूना जायगा क्योंकि लकड़ियों का ढेर उससे इतनी दूरी पर था कि केवल लपटें ही उस तक पहुँच सकें। इस प्रकार मृत्यु धीरे-धीरे अपने हाथ बढ़ायगी जो उपस्थित जनों के लिये हर्ष का विषय होगा, विशेषकर जब शिकार अपनी पीड़ा चिल्ला-चिल्ला कर बयान करेगा। किन्तु नानू का पुत्र काकू नौका-निर्माताओं को ऐसी सन्तुष्टि देने की इच्छा से बहुत दूर था। उसने चारों ओर खड़े उत्सुक पाशविक चेहरों की ओर देखा जो अपने हृदय में कभी न तृप्त होने वाली सन्तुष्टि को सजोये हुए थे। काकू उनसे घृणा करता था, इसलिये नहीं कि वे उसे मार डालेंगे— क्योंकि उसे प्रत्येक अपरिचित से ऐसे ही सलूक की आशा थी— किन्तु इसलिये कि वे 'गाय' की खाल पहनते थे, और युद्ध एवं शिकार करने के स्थान पर अपनी सम्पूर्ण शक्ति एवं समय काम करने में लगाते थे।

इन जैसी नावें रखना तो अच्छा था— जिन्हें अपनी जाति में वापिस लौटने पर काकू बनाने का निश्चय कर चुका था। किन्तु श्रम को व्यापार बना लेना— उह! घृणित था। यदि वह यहां से बच निकला तो अपने पिता के शूरवीरों के साथ नौका-निर्माताओं के गांव में लौट कर आयेगा, और फिर जिन नावों को चाहेगा वह ले जायगा।

उसके भावों के प्रवाह को उन असरारों ने भंग कर दिया, जो उसके चारों ओर हो रहे थे। वे नाच रहे थे और प्रारम्भ काल की भाषा में बेसुरा गा भी रहे थे; और अब बहादुरों में से एक ने उन लकड़ियों को जला दिया जो गट्ठे में बंधे शिकार को चारों ओर से घेरे हुई थीं।

११

जब नानू का पुत्र काकू अपने पिता और अपनी जाति के लोगों से विदा लेकर मातुल और हथा की खोज में निकला, तो सरदार कई मिनटों तक निश्चेष्ट बैठा रहा। उसके निकट मातुल का पिता भू बैठा हुआ था, और उनके इर्द-गिर्द जाति के अन्य लोग घेरा लगाये बैठे थे। सबके चेहरे पर मुर्दनी छाई हुई थी और सब एकदम चुप थे। जाति का सरदार और उसका दायां हाथ भी शोक-सागर में डूबा हुआ था। काकू और मातुल अपनी जाति के बीच सर्वाधिक लोकप्रिय थे। हथा किसी भी प्रकार उन्हें प्रिय नहीं था और उसके प्रति उनका क्रोध घोर रूप धारण करता जा रहा था।

चुप्पी को तोड़ने वाला नानू था।

"हम अपने दो बच्चों को इस प्रकार असहाय छोड़ नये घर की तलाश में नहीं जा सकते," वह बोला।

उसकी बात के श्रोता जानते थे कि उसने हथा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया है— वह हथा, जो जाति को इस शोक में डुबाने का कारण था, अपने कुकर्मों से उनके प्रेम को खो चुका था। वे सन्तुष्ट थे, क्योंकि उसके लिये यही उपयुक्त सज़ा थी। एक युवा लड़ाका उठ खड़ा हुआ। अपने भाले से उसने ज़मीन पर पूर्व से पश्चिम की ओर एक रेखा खींची और उसके सामने दक्षिण की ओर लेट गया।

"नानू का पुत्र काकू मेरे साथ कठिन मुसीबत में भी रहा है— हम दोनों एक ही दिन आदमी और बहादुर भी बने थे। हमने शेर का प्रथम शिकार भी एक साथ ही किया था।" वह कुछ रुका, और फिर उस रेखा की ओर संकेत कर, जो उसने ज़मीन पर खींची थी, कहना शुरू किया, "मैं रेखा को उस

समय तक पार नहीं करूंगा, जब तक कि मैं नानू के पुत्र बापू को न खोज निकालूंगा।"

अपनी बात समाप्त कर वह एकदम उठ कर सीधा खड़ा हो गया, हाथों को अपनी चौड़ी छाती पर रखा और फिर अपने मुंह को सरदार नानू की ओर घुमाया।

उपस्थित लोग एक स्वर हो उसके उत्साह को बढ़ाने लगे। समस्त आंखें नानू की ओर लग गईं। वह क्या करेगा? युवा बहादुर का कार्य विद्रोह से कम नहीं था। अकस्मात् मातुल का भाई था उछल कर साहसी बहादुर की बगल में जा खड़ा हुआ।

उसने कुछ नहीं कहा, किन्तु उसके हाव-भावों ने सब कुछ स्पष्ट कर दिया।

सरदार नानू ने अपनी लटकती भौंहों के पीछे छिपी तेज आंखों से दोनों नवयुवकों को देखा। उत्सुकता से प्रतीक्षा करने वालों को लगभग स्पष्ट हो गया कि उसकी विकट अर्द्ध-मुस्कान भयंकर अनुमोदन कर रही है। वह भी उठ खड़ा हुआ। उस ओर बढ़ा जहां वे दोनों खड़े हुए थे, और उनके निकट पंक्ति में जा खड़ा हुआ।

भू नाटक के इस अंक को समझने वालों में सर्वप्रथम था। जिस क्षण ही वह निर्णय पर पहुंचा, वैसे ही वह उछल कर नानू के निकट आ खड़ा हुआ। फिर शेष की समझ में भी अभिप्राय आ गया और एक क्षण पश्चात् सम्पूर्ण जाति एक के बाद एक कर इस की पंक्ति में दक्षिण की ओर मुंह कर खड़ी हो गई। इस समय वे नाच और गा रहे थे। पुरुष अपने पत्थर के कुल्हाड़े घुमा रहे थे। अपने-अपने भालों को हवा में ऊंचा फेंक रहे थे। औरतें तालियां बजा रही थीं, और छोटे-छोटे बच्चे कूदते हुए दौड़ रहे थे और हरेक का मनोरंजन कर रहे थे।

इसके कुछ मिनट पश्चात् नानू ने दक्षिण की ओर कदम उठाये। कुछ मनुष्यों को उसने औरतों और बच्चों के साथ रहने का आदेश दि[illegible]ओ.

चलकर पुनः अपने पुराने निवासस्थान में पहुँच जायें, और सरदार स्वयं लड़ाकाओं के साथ तेजी से काफ़ू और मातुल के चिह्न तलाश करता हुआ बढ़ चला।

एक पहाड़ की गुहा में सर्वप्रथम उन्हें हृथा का शव मिला। वहां से उन्हें काफ़ू के पदचिह्नों और लड़की के अधमिटे पदचिह्नों का मिलना शुरू हो गया जो इस बात का पता दे रहे थे कि काफ़ू मातुल को उस स्थान पर नहीं पा सका था।

उनके सहारे वे किनारे के साथ-साथ अपने पुराने घरों की ओर बढ़ चले, और हर स्थल पर, उन दोनों में से किसी एक के पद-चिह्न, जिनका वे पीछा कर रहे थे, पर्याप्त स्पष्ट एवं पहचाने जाने योग्य थे। जब वे गुहाओं के निकट पहुँचे, उस समय दिन ढल चुका था। अगले दिन सुबह पद-चिह्नों को पाने में उन्हें दिक्कत का सामना करना पड़ा क्योंकि रात को आये ज्वार-भाटे ने रेत पर बने उन चिह्नों को एकदम नेस्तनाबूद कर दिया था। तब नानू ने अपने बहादुरों को तीन टुकड़ियों में विभाजित कर दिया। एक टुकड़ी जिसका पथ-प्रदर्शन वह स्वयं कर रहा था, किनारे के साथ-साथ दक्षिण की ओर बढ़ चली, दूसरी को जंगल में एक मील तक तलाश करनी होगी और फिर दक्षिण की ओर घूम कर आगे बढ़ना होगा, जबकि तीसरी टुकड़ी को सीधा पश्चिम की ओर के प्रदेश में अपनी तलाश जारी रखनी होगी। इस प्रकार उनमें से एक टुकड़ी उन तक अवश्य पहुँच जायगी, जिनकी तलाश में वे निकली थीं, अथवा उनका कोई चिह्न अवश्य मिल जायगा।

दूसरी टुकड़ी का पथ-प्रदर्शन भू कर रहा था, और चा उसके साथ था दना सरदार नानू के साथ था। किनारे के साथ साथ उनकी खोज ब[illegible] तेज़ी से चल रही थी, और वे किनारे से लेकर जंगल तक में फैल गये ताकि उनकी नजर से कोई भी चिह्न अछूता न रह जाय।

कई बार उन्हें भ्रम हो गया जिससे उन्हें जंगल के अन्दर बेकार

चिह्नों का पीछा करना पड़ा। इस प्रकार उनका अधिकांश समय बेकार हो गया जिसका परिणाम यही निकला कि जिन दो की वे तलाश कर रहे थे सन्ध्या का झुटपुटा हो जाने तक भी उनका कोई चिह्न नहीं पा सके।

जंगल के निकटवर्ती रेत पर उन्होंने अपना डेरा जमाया और अपने इर्द-गिर्द चारों ओर आग का एक दायरा बनाया जिसके सहारे वे अपने को जंगली जानवरों से सुरक्षित रख सकें। फिर वे निद्रा की सुखमय गोद में सो गये, सिवाय दो बहादुरों के जो आग की लपटों को स्थिर रखने एवं पहरा देने के लिये जागते रहे।

दना उन पहरेदारों में से एक था। जैसे जैसे रात्रि का अंधकार बढ़ता गया, वैसे वैसे वह दक्षिण दिशा में होने वाले प्रकाश की ओर अधिक सचेत होता गया। उसने अपने साथी का ध्यान भी उस ओर आकर्षित किया।

"वहाँ उस ओर आदमी अवश्य है," उसने कहा। "यह रोशनी हिंसक पशुओं से सुरक्षित रखने वाली अग्नि-पंक्ति की है। सुनो।"

रोशनी की दिशा से असभ्य मनुष्यों की चीख पुकारें उठती हुई सुनाई पड़ीं। दना नातू को जगाने वाला था कि उसी समय उसकी तीव्र आँखों ने जंगल और कैम्प के बीच सावधानी से बढ़ती हुई किसी चीज को खोज निकाला। स्पष्ट था कि वह अभी-अभी गहन वन से निकल कर बाहर आई थी। साधारणतः दना ने यही सोचा कि वह कोई हिंसक पशु है जो शिकार की खोज में निकला होगा; किन्तु मनुष्यों की बस्ती की निकटता जान लेने पर भी वह आगे बढ़ रहा है, इस कारण उसे अपने विचार पर अधिक विश्वास नहीं हो रहा था।

हो सकता है अन्धकार के फैल जाने पर कोई मनुष्य जंगल के बीच से गुजर रहा हो। किन्तु इस जीव की हरकतें कुछ अजीब थीं। अनुमान होता था कि शायद वह अपने चारों हाथ-पाँव की सहायता से रेंग रहा है।

दना ने कैम्प का चक्कर लगाया। वह प्रत्यक्ष रूप से उस चोरी से आने वाले की उपस्थिति भुलाना चाह रहा था। उसने आग के घेरे से [illegible]

धीरे चलकर पुनः अपने पुराने निवासस्थान में पहुँच जायें, और सरदार स्वयं शेष लड़ाकाओं के साथ तेजी से काकू और मातुल के चिह्न तलाश करता हुआ आगे बढ़ चला।

एक पहाड़ की गुहा में सर्वप्रथम उन्हें हया का शव मिला। वहां से उन्हें काकू के पदचिह्नों और लड़की के अधमिटे पदचिह्नों का मिलना शुरू हो गया जो इस बात का पता दे रहे थे कि काकू मातुल को उस स्थान पर नहीं पा सका था।

उनके सहारे वे किनारे के साथ-साथ अपने पुराने घरों की ओर बढ़ चले, और हर स्थल पर, उन दोनों में से किसी एक के पद-चिह्न, जिनका वे पीछा कर रहे थे, पर्याप्त स्पष्ट एवं पहचाने जाने योग्य थे। जब वे गुहाओं के निकट पहुँचे, उस समय दिन ढल चुका था। अगले दिन सुबह पद-चिह्नों को पाने में उन्हें दिक्कत का सामना करना पड़ा क्योंकि रात को आये ज्वार-भाटे ने रेत पर बने उन चिह्नों को एकदम नेस्तनाबूद कर दिया था। तब नानू ने अपने बहादुरों को तीन टुकड़ियों में विभाजित कर दिया। एक टुकड़ी जिसका पथ-प्रदर्शन वह स्वयं कर रहा था, किनारे के साथ-साथ दक्षिण की ओर बढ़ चली, दूसरी को जंगल में एक मील तक तलाश करनी होगी और फिर दक्षिण की ओर घूम कर आगे बढ़ना होगा, जबकि तीसरी टुकड़ी को सीधा पश्चिम की ओर के प्रदेश में अपनी तलाश जारी रखनी होगी। इस प्रकार उनमें से एक टुकड़ी उन तक अवश्य पहुँच जायगी, जिनकी तलाश में वे निकली थीं, अथवा उनका कोई चिह्न अवश्य मिल जायगा।

दूसरी टुकड़ी का पथ-प्रदर्शन भू कर रहा था, और चा उसके साथ था। दना सरदार नानू के साथ था। किनारे के साथ साथ उनकी खोज बड़ी तेज़ी से चल रही थी, और वे किनारे से लेकर जंगल तक में फैल गये थे, ताकि उनकी नजर से कोई भी चिह्न अछूता न रह जाय।

कई बार उन्हें भ्रम हो गया जिससे उन्हें जंगल के अन्दर बेकार के

चिह्नों का पीछा करना पड़ा। इस प्रकार उनका अधिकांश समय बेकार ही गया जिसका परिणाम यही निकला कि जिन दो की वे तलाश कर रहे थे सन्ध्या का झुटपुटा हो जाने तक भी उनका कोई चिह्न नहीं पा सके।

जगल के निकटवर्ती रेत पर उन्होंने अपना डेरा जमाया और अपने इर्द-गिर्द चारों ओर आग का एक दायरा बनाया जिसके सहारे वे अपने को जगली जानवरों से सुरक्षित रख सकें। फिर वे निद्रा की सुखमय गोद में सो गये, सिवाय दो बहादुरों के जो आग की लपटों को स्थिर रखने एव पहरा देने के लिये जागते रहे।

दना उन पहरेदारों में से एक था। जैसे जैसे रात्रि का अधकार बढता गया, वैसे वैसे वह दक्षिण दिशा में होने वाले प्रकाश की ओर अधिक सचेत होता गया। उसने अपने साथी बा का ध्यान भी उस ओर आकर्षित किया।

"वहाँ उस ओर आदमी अवश्य हैं," उसने कहा। "यह रोशनी हिंसक पशुओं से सुरक्षित रखने वाली अग्नि-पंक्ति की है। सुनो।"

रोशनी की दिशा से असस्य मनुष्यों की चीख पुकारें उठती हुई सुनाई पड़ी। दना नालू को जगाने वाला था कि उसी समय उसकी तीव्र आँखों ने जंगल और कैम्प के बीच सावधानी से बढती हुई किसी चीज को खोज निकाला। स्पष्ट था कि वह अभी-अभी गहन वन से निकल कर बाहर आई थी। साधारणत. दना ने यही सोचा कि वह कोई हिंसक पशु है जो शिकार की खोज में निकला होगा; किन्तु मनुष्यों की बस्ती की निकटता जान लेने पर भी वह आगे बढ रहा है, इस कारण उसे अपने विचार पर अधिक विश्वास नहीं हो रहा था।

हो सकता है अन्धकार के फैल जाने पर कोई मनुष्य जगल के बीच से गुजर रहा हो। किन्तु इस जीव की हरकतें कुछ अजीब थी। अनुमान होता था कि शायद वह अपने चारों हाथ-पाँव की सहायता से रेंग रहा है।

दना ने कैम्प का चक्कर लगाया। वह प्रत्यक्ष रूप से उस चोरी से आने वाले की उपस्थिति भुलाना चाह रहा था। उसने आग के घेरे में - ह

लकड़ियां डाली और उनसे उठते हुए धुएं को घूरा। किन्तु इस बीच भी वह उस चीज़ की हरकतें देखता रहा जो बाहर के अन्धकार से कैम्प की ओर धीरे-धीरे बढ़ती चली आ रही थी।

वह अब उसे अधिक स्पष्ट रूप से देख सकता था और इस बात से सचेत था कि वह चीज़ बार-बार पीछे की ओर गर्दन घुमा कुछ देख रही थी।

क्या उसका कोई साथी अथवा कई साथी हैं? क्या कोई चीज़ उसका पीछा कर रही है? दना ने उस बढ़ती हुई चीज़ के पीछे कालिमा की चादर ओढ़े जंगल में कुछ खोजने का प्रयत्न किया।

"आहः! तो यह बात है!"

एक काली छाया झाड़ियों के पीछे से निकलकर उस जीव के कदमों का अनुसरण कर रही थी जो अब जंगल और कैम्प के बीच की दूरी के मध्य में आ पहुंची थी। दना को नवागन्तुक को पहचानने के लिये उस पर दूसरी नजर डालने की आवश्यकता नहीं पड़ी। लचीला शरीर, एक काली वस्तुओं का समूह-सा, जिस पर सुअर के समान कड़े छोटे बाल थे, ज़मीन से मिली हुई पीली और हरी आग के दो क्रोधित धब्बे— अब कोई सन्देह नहीं। वह ज़ोर (सिंह) था, जो अपने शिकार की ताक लगाये हुए था।

दना अपने साथी से कुछ फुसफुसाया, जो उसकी बगल में खड़ा हुआ था। दोनों खड़े होकर सीधे उस जीव को घूरने लगे, जो उनके अत्यन्त समीप था, और जिसके जानने में अब कोई भ्रम नहीं रह गया था।

"यह तो आदमी है," धीरे से दना के साथी ने कहा।

और तब ही, भयानक गर्जना के साथ ज़ोर ने आक्रमण कर दिया। इससे पूर्व कि पहला जीव अपने दोनों पाँवों के सहारे निकट जलती हुई अग्नि के प्रकाश में आ सके, वातावरण में एक चीख गूंजी, जिससे कैम्प में जाग हो गई। दना आग के दायरे से कूदकर बाहर निकल आया। उसका भाले वाला हाथ पीछे की ओर गया। भाले का पत्थर का सिरा, जिसे परिश्रम के साथ

नुकीला और धारदार बनाया गया था, आक्रमण करते हुये ज़ोर की ओर लपका।

भाला ज़ोर के शिकार के कन्धे में एक हाथ ऊपर निकलता हुआ गुज़र गया, और उस भयानक हिंस्र पशु के सीने में जा धंसा। तभी क्षण दना उछल कर भागने वाली छाया को अपने पीछे कर स्वयं पत्थर के चाकू और कुल्हाड़े के साथ घायल हुए विनाश के देवता के क्रोध की अग्नि से जूझने के लिये ज़ोर के रास्ते में आ गया।

पीछे मुड़कर उसने उससे कहा, जिसे बचाने के लिये उसने छलांग लगाई थी। "मातुम, तेज़ी से दौड़कर अग्नि के घेरे में प्रविष्ट हो जाओ," वह चिल्लाया। "ज़ोर की शेरनी उसकी सहायता को आ रही है।"

वास्तव में, रेत पर हल्के पदचाप करती हुई एक भयानक सिंहनी आ रही थी, जो आकृति-प्रकृति में अपने पति के समान थी।

यह देख दना का साथी बहादुर भी कूदकर घेरे से बाहर निकल आया, और उसके पीछे कैम्प में बचे शेष बहादुर भी निकल पड़े। ज़ोर पिछले पाँव के सहारे खड़ा हो, दना पर प्रहार कर रहा था। दना उसके शक्तिशाली एवं तेज़ पंजों के भयावह आघातों को नाकाम करने के लिये तत्परता से इधर-उधर उछल रहा था, और अपने प्रतिपक्षी जन्तु के सिर पर बार-बार भारी कुल्हाड़े की चोटें कर रहा था।

दूसरा बहादुर (दना का साथी) उस भयानक सिंहनी के आक्रमण को असफल बनाने में लग गया। उसका तेज़, नोकीला भाला सीधा सिंहनी के चौड़े वक्ष में जा धँसा, और इस दौरान में आदमी की अंगुलियाँ चाकू की कड़ी मूठ के इर्द-गिर्द दृढ़ता से कस गईं। जैसे ही विकराल जन्तु पीछे की ओर हटा और पुनः लौट कर अपने पंजे से आक्रमण करने लगा, उसने चाकू को इधर-उधर चलाना शुरू कर दिया।

तभी सरदार मानू और उसके साथी घटनास्थल पर पहुँच गये। ~~~ घातक भाले ज़ोर और उसकी सिंहनी के शरीर में धँस गये। कुल्हाड़े द

सिरों पर पड़ने लगे, और शक्तिशाली नानू केवल अपने पत्थर के चाकू लिये हुये ज़ोर की पीठ पर कूद पड़ा। वह ज़ोर के घने बालों से बुरी तरह चिपट गया और वार-वार अपने छोटे, घातक अस्त्र को उसके शरीर में समय तक ठूंसता रहा, जब तक कि चीखता-चिल्लाता जन्तु हमेशा-हमेशा लिये शान्त हो एक ओर को नहीं लुढ़क गया।

अपने पति के मुकाविले सिंहनी में जीने की अभिलाषा अधिक बलशाली निकली। यद्यपि उसके शरीर को भालों ने छलनी बना डाला था और उसके विपक्षियों के चाकू उसके शरीर को टुकड़े-टुकड़े किये दे रहे थे, तो भी उसने निकट खड़े एक बहादुर पर अकस्मात हमला कर दिया और एक सेकिंड के हज़ारवें अंश की देरी में उसे अपने पंजों में दबोच लिया। उसके बलशाली पंजों ने उसके गर्दन से लेकर पेट तक के भाग को फाड़ डाला। जैसे ही वह धराशायी हुआ वैसे उसके घातक जबड़े दिल हिला देने वाली आवाज़ करते हुये उसकी खोपड़ी में धँस गये।

अपने शिकार पर विजय घोष करती हुई शेरनी सब को भयग्रस्त बनाती हुई खड़ी रही, जबकि असभ्य लड़ाके उसके चारों ओर घेरा बना उछलते-कूदते रहे ताकि उन्हें अपने शहीद साथी की मौत का बदला लेने और आक्रमण करने का अवसर मिल सके।

आग के घेरे के अन्दर खड़ी मातुल आग की लपटों को अक्षुण्ण रखने का प्रयत्न कर रही थी ताकि समस्त घटनास्थल बहादुरों के लिए भली भाँति प्रकाशित रहे। इसे यह सब कुछ जादू का खेल लग रहा था कि अप्रत्याशि रूप से वह अपनी जाति के लोगों से जा मिली थी। उसे शेरों से हो रहे यु की समाप्ति तक विवशतापूर्वक प्रतीक्षा करनी होगी। उसका कार्य अती आवश्यक था जो उसके विचारों की दुनिया में बादल बनकर छाया हुआ थ

किन्तु, अन्त में ज़ोर की सहवासिनी भी शान्त हो गई और जैसे ही सर नानू कैम्प में लौट कर आया मातुल उससे मिलने के लिए उछल कर उ

"शीघ्रता करो!" वह चिल्लाई, "वे लोग तुम्हारे पुत्र काकू को मारे डाल रहे हैं।" उसने दक्षिण दिशा में उस ओर संकेत किया जहां अन्धकार में उठती हुई लपटें स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही थी।

यह सुन नानू ने कोई प्रश्न नहीं किया। उसने बहादुरों को अपने इर्द-गिर्द इकट्ठा किया।

"मातुल का कथन है कि उस ओर वे लोग नानू के पुत्र काकू को मृत्यु के घाट उतार रहे हैं," उसने दूर उठती हुई लपटों की ओर संकेत करते हुए कहा। "आओ!"

जब मातुल उन सबको अपने साथ लिये जंगल से गुजर कर किनारे के साथ साथ आगे बढ़ी तो उसने सरदार को वह सब घटनाएं कह सुनाईं जो हया द्वारा चुरा कर ले जाये जाने के पश्चात् उस पर गुजरी थी। उसने अपना भ्रमण सुनाया। कैसे नौका-निर्माताओं में से एक उसके पीछे लग गया और किस प्रकार एक विकराल एवं भयानक जन्तु उसे अपने पंजों में दबोच कर अपने घोसले में ले गया। उसने उस विचित्र जन्तु के विषय में भी बताया, जो उस झोंपड़ी में रेंगता हुआ घुसा था जहा वह कैद थी और उछल कर शूर की पीठ पर टूट पड़ा था। और किस प्रकार झोंपड़ी से वह उस समय निकल जंगल में भाग आई थी, जब वे दोनों एक-दूसरे पर घात-प्रतिघात कर रहे थे। और जब वह भाग कर आई थी, उसके हाथ बैल की तांत मे बंधे हुए थे। जब वह नानू को नौका-निर्माताओं की अग्नि सुरक्षा पंक्ति से सुरक्षित पेड़ों तक पहुंचने के दौरान में पशुओं के बीच से गुजरने का विवरण सुना रही थी, तो कांप रही थी।

"शेष रात्रि मैंने एक बड़े पेड़ पर बिताई, जो उन अजनबियों के गांव के अत्यन्त समीप था," उसने कहा। "अगले दिन बहुत सुबह ही मैं खाने की तलाश में जान-बूझ कर उत्तर की ओर चल पड़ी, ताकि मैं अपने पुराने निवास-स्थल पर पहुंच सकूं क्योंकि वहां मैं यहां से अधिक सुरक्षित रह सकती थी।

"किन्तु रास्ते भर मैं यही सोचती रही कि गत रात्रि को झोंपड़ी में शूर की

पीठ पर टूट पड़ने वाला कौन हो सकता है, और जितना मैं उस पर सोचती गई उतना ही स्पष्ट होता गया कि आक्रमण करने वाला अवश्य ही कोई मनुष्य था, क्योंकि कौन सा ऐसा पशु है जो नज़र में आये विना ही अग्नि के घेरे को लांघ सकता है।

"पेट भरने के पश्चात्, उत्सुकता ने मेरे भय पर विजय पाई और मैं पुनः पेड़ों के सहारे गांव के किनारे पर पहुँच गई। मैंने वहां के हाल-चाल देखे। तब सूर्य एकदम ठीक मेरे सिर पर था— दिन का आधा भाग अनन्त में विलीन हो चुका था। यदि किसी कारण से मुझे रास्ते में देर हो जाती, तो मैं अंधेरा होने के पहले कभी भी अपनी पुरानी गुहाओं में नहीं पहुँच सकती थी, और किसी भी क्षण कोई अजनवी मेरे पीछे लग सकता था, या मुझे अर या ज़ोर अथवा ऊ के डर से पेड़ों पर चढ़ जाना पड़ता। अतः मैंने गुहा की ओर बढ़ने के लिये अगले दिन पौ फटने का समय चुना, जिसके लिये मुझे रात को वहीं रुककर प्रतीक्षा करनी थी। मेरे दिल में कोई ऐसा विचार था, जो वार-वार मुझे वहीं रुकने के लिए उकसा रहा था। वह क्या था, यह नहीं मालूम; किन्तु ऐसा अवश्य महसूस हो रहा था कि मानों दो मातुलें हो गई हैं। एक तो वह, जो यथा-सम्भव शीघ्रता के साथ अजनवियों के प्रदेश से दूर भागना चाह रही थी, और दूसरी वह जो मजबूर कर रही थी कि वहां रुकना ही उसका कर्तव्य है। अन्त में, मेरे दिल में चलने वाली कशमकश खत्म हो गई। मेरी एक इच्छा ने दूसरी पर विजय पाई। मुझे रुकना चाहिये। इसलिये मैंने उसी पेड़ में एक आरामदायक स्थान खोज निकाला, जो अजनवियों के गाँव के खुले मैदान के निकट उगा हुआ था, और मैं अन्धकार होने के काफी देर वाद तक वहीं वैठी रही।

"तुम्हारे द्वारा प्रज्वलित की गई अग्नि को देखने पर मैं इसी विचार में डूबी हुई थी कि उत्तर से आने वाला कौन हो सकता है। मुझे मालूम था कि समस्त अजनवी दोपहर होने तक लौट आये हैं, अतः वह उनका कोई आदमी नहीं हो सकता था। और मैं यह भी जानती थी कि उत्तर की ओर पहला

वे तुम्हारे बहादुर हो सकते हैं।

"तब ही मैंने देखा कि मेरे नीचे वाले गाँव में कोई विशेष उत्सव होने वाला है। बहादुर एक झोपड़ी के निकट पहुँचे और एक बन्दी को घसीटते हुये बाहर निकाल कर लाये। वे उसे पाँव के सहारे गाँव के चारों ओर इधर-उधर घसीट रहे थे और जब वे ऐसा कर रहे थे तब गाँव की स्त्रियाँ और बच्चे उसे तरह तरह की यातनायें पहुँचा रहे थे और कैदी पर थूक रहे थे।

"पहले तो मैं उनके शिकार को स्पष्टतः नहीं देख सकी। किन्तु अन्त में जब उन्होंने उसे उठाकर खड़ा किया और उसे लट्ठे के साथ बाँध दिया जहाँ वे उसे हल्की आग में जीवित ही भून डालना चाह रहे थे तब मैंने उसके चेहरे को देखा।

"ओह नातू! क्या तुम नहीं अनुमान लगा सकते कि वह कौन था? वह अब तक मेरा पीछा कर रहा था। उसने बड़े-बड़े खतरों का सामना किया था। और वह भयानक पानी के बीच भी मुझे बचाने के लिये लड़ा था।"

"नातू का पुत्र काकू," बूढ़े सरदार ने कहा और उसकी छाती गर्व से फूल उठी।

काकू को बचाने के लिये आगे बढ़ते हुए बहादुरों के दल को पग-पग पर भयानक शिकारी जानवरों का सामना करना पड़ रहा था। दो बार किसी भयानक एवं विकराल पशु ने उन पर आक्रमण किया और उन्हें लड़ने पर विवश किया। किन्तु अन्त में वे जंगल के अन्तिम छोर पर उस गाँव के पीछे पहुँच गये जो उनके कदमों का लक्ष्य था।

वहाँ उनकी आँखों और कानों ने जो कुछ देखा और सुना, उससे उनकी व्यग्रता असमानीय हो उठी। पुरुष और औरतें क्रोधित स्वरों में चिल्लाते हुए इधर उधर दौड़ रहे थे। उनके पीछे झाड़ियों का लपटें उठाता हुआ एक दायरा था। मातुल ने अपने बहादुरों को बताया कि इस दायरे के केन्द्र में नातू का पुत्र काकू मजबूती से एक लट्ठे के साथ बंधा हुआ है। धीरे धीरे मृत्यु उसे भूनती जा रही थी— सम्भवतः अब तक वह मर भी चुका होगा।

नानू ने अपने बहादुरों को इकट्ठा किया। उसने दो को मातुल के पास रहने का आदेश दिया। तब, अपने शेष साथियों को लिये सरदार नानू चुपचाप जंगल से बाहर निकल आया और उत्फुल्ल नौका-निर्माताओं के गाँव की ओर बढ़ चला। उसके गर्वोन्मुख सिर पर सफेद पंख वीरता के साथ हिल रहा था, गुहा-रीछ और अर की बालों से भरी खाल उसके कन्धों को ढकती हुई पीछे की ओर लटक रही थी।

मांसल पुट्ठों वाले केवल चालीस शक्तिशाली मनुष्यों का वह झुण्ड था। अपने मज़बूत हाथों में वे भयंकर भाले और भारी कुल्हाड़ों को दृढ़ता से पकड़े हुये थे। उनकी मृगछालों के साथ उनके पत्थर के चाकू उस समय की प्रतीक्षा में चिपके हुए थे, जब वे इतने निकट आ जायँ कि उन्हें शत्रुओं से द्वन्द्व युद्ध करना पड़े। उनके असभ्य मस्तिष्क में केवल एक ही विचार धारा प्रवाहित हो रही थी— मारो...... मारो...... मारो।

आग के दायरे के बाह्य घेरे तक वे पहुँच गये, किन्तु अभी तक आन्तरिक घेरे वाले उत्फुल्ल मनुष्यों की नज़र उन पर नहीं पड़ी थी। तब ही एक लड़की, जिसे अग्नि प्रज्वलित रखने के अपने कर्तव्य का अकस्मात् ही विचार आ गया था, लकड़ियाँ डालने आई। उसने लपटों के पीछे कुछ सुन्दर असभ्य चेहरों को देखा।

चेतावनी एवं भय मिश्रित चीत्कार करती हुई वह घूम गई और गाँव में भगदड़ मच गई। केवल एक क्षण को समस्त शोर लड़की की चीत्कार सुनकर रुक गया।

तब तक नानू अपने आदमी लिये हुए उनके बीच में पहुँच चुका था। नौका-निर्माता इन बहादुरों के आक्रमण का जवाब देने के लिये आगे बढ़ आये। औरतें और बच्चे आग के घेरे के अन्दर ही एक ओर को हट कर इकट्ठे होने लगे। रोमांचकारी हुंकारों और युद्ध-नादों से समस्त वातावरण गूंज उठा। गुहा-निवासी नौका-निर्माताओं से जूझ पड़े। एक ओर से लम्बे और नुकीले भालों की संख्या हवा में उड़ चली और उसके उत्तर में दूसरी ओर से गांव वालों की छोटी मज़बूत बर्छियाँ तैरती नज़र आईं।

नानू ने अपने बहादुरों को इकट्ठा किया। उसने दो को मातुल के पास रहने का आदेश दिया। तब, अपने शेष साथियों को लिये सरदार नानू चुपचाप जंगल से बाहर निकल आया और उत्फुल्ल नौका-निर्माताओं के गाँव की ओर बढ़ चला। उसके गर्वोन्मुख सिर पर सफेद पंख वीरता के साथ हिल रहा था, गुहा-रीछ और अर की बालों से भरी खाल उसके कन्धों को ढकती हुई पीछे की ओर लटक रही थी।

मांसल पुट्ठों वाले केवल चालीस शक्तिशाली मनुष्यों का वह झुण्ड था। अपने मज़बूत हाथों में वे भयंकर भाले और भारी कुल्हाड़ों को दृढ़ता से पकड़े हुये थे। उनकी मृगछालों के साथ उनके पत्थर के चाकू उस समय की प्रतीक्षा में चिपके हुए थे, जब वे इतने निकट आ जायँ कि उन्हें शत्रुओं से द्वन्द्व युद्ध करना पड़े। उनके असभ्य मस्तिष्क में केवल एक ही विचार धारा प्रवाहित हो रही थी— मारो...... मारो...... मारो।

आग के दायरे के बाह्य घेरे तक वे पहुँच गये, किन्तु अभी तक आन्तरिक घेरे वाले उत्फुल्ल मनुष्यों की नज़र उन पर नहीं पड़ी थी। तब ही एक लड़की, जिसे अग्नि प्रज्वलित रखने के अपने कर्तव्य का अकस्मात् ही विचार आ गया था, लकड़ियाँ डालने आई। उसने लपटों के पीछे कुछ सुन्दर असभ्य चेहरों को देखा।

चेतावनी एवं भय मिश्रित चीत्कार करती हुई वह घूम गई और गाँव में भगदड़ मच गई। केवल एक क्षण को समस्त शोर लड़की की चीत्कार सुनकर रुक गया।

तब तक नानू अपने आदमी लिये हुए उनके बीच में पहुँच चुका था। नौका-निर्माता इन बहादुरों के आक्रमण का जवाब देने के लिये आगे बढ़ आये। औरतें और बच्चे आग के घेरे के अन्दर ही एक ओर को हट कर इकट्ठे होने लगे। रोमांचकारी हुंकारों और युद्ध-नादों से समस्त वातावरण गूंज उठा। गुहा-निवासी नौका-निर्माताओं से जूझ पड़े। एक ओर से लम्बे और नुकीले भालों की संख्या हवा में उड़ चली और उसके उत्तर में दूसरी ओर से गांव वालों की छोटी मजबूत बर्छियाँ तैरती नज़र आईं।

फिर शूरवीर आगे बढ़कर एक दूसरे पर कुल्हाड़े से घात-प्रतिघात करने लगे। आक्रमण के प्रथम क्षण से ही युद्ध का परिणाम निकलने में देर नहीं लगी। नानू की भयानक जाति— शिकारी जानवरों के शिकारी-बहादुरों की जाति— युद्ध के प्रत्येक दाव-पेंच में कुशल थी। वे गाय की खाल पहनने वाली जाति के बहादुरों को निरन्तर पीछे हटाते गये और अन्त में पीछे हटते हुए वे विपक्षी उस घेरे के सम्मुख पहुँचे जहां उनकी औरतें और बच्चे भय के सागर में डूबे नियति के विधान को देख रहे थे और अपने भाग्य का फैसले सुनने की प्रतीक्षा में थे।

अग्नि के आन्तरिक घेरे के निवासियों ने आक्रमणकारियों को आत्मसमर्पण कर दिया और तब ही मातुल अपने बहादुरों के बीच से उछली और बाहर निकल आई। काकू के निकट पहुँचने और उसके बन्धनों को खोलने वालों में वह सर्वप्रथम होना चाहती थी। नौका-निर्माताओं के कुछ व्यक्ति बाहर के अन्धकार में निकल कर चोरी से नदी के किनारे उस ओर बढ़ चले जहां उनकी नावें ज्वार से सुरक्षित स्थान पर बंधी हुई थी।

सरदार नानू मातुल के पीछे-पीछे अग्नि के बीच कूद पड़ा। घेरे के अन्दर की भयानक गर्मी में दोनों एक साथ लट्ठे के पास पहुँचे। लड़की ने काली धुआँ देते हुए लट्ठे की ओर केवल एक ही दृष्टि डाली और इससे पहले कि वह चक्कर खा लट्ठे की निकटवर्ती धरती पर गिर पड़े नानू ने उसे अपनी बाँहों में समाल लिया।

नानू का पुत्र काकू वहां नही था और न ही उसका शव लपटों के घेरे में कहीं पड़ा था।

१३

गीगा शूर द्वारा क्रूरता से सताई जाने पर अत्यन्त क्लान्त हो पड़ी रही। अगले दिन भर वह उठ भी नहीं सकी और विवश हो अपनी झोंपड़ी में लेटी रही। शूर अब उसे और यातनायें नहीं देगा। स्पष्ट था कि वह उसे भूल चुका था। उसके मस्तिष्क में जो विचार आ जमा था उसमें प्रारम्भिक मनुष्य की समस्त असभ्यता एवं ईर्ष्या निहित थीं, और उसके मुकाबिले उन दिनों अन्य कोई दारुण दण्ड नहीं हो सकता था।

पूरे दिन वह पीड़ा से कराहती रही और शूर के प्रति घृणा में डूबती रही। सम्पूर्ण दिन उसने बदला लेने की नई एवं पैशाचिक योजनायें निर्मित करने में गुज़ारा। अपनी छाती के अत्यन्त समीप ही उसने अपने पत्थर के चाकू को कस कर पकड़ लिया। यह शूर के लिये बड़ा अच्छा हुआ कि वह दिन भर गीगा के पास नहीं फटका। जब वह उसे यातना दे रहा था, तब गीगा के हृदय में कोई भयानक विचार उत्पन्न नहीं हुआ था हालांकि चाकू तब भी उसके पास था। किन्तु अब वह समझ चुकी थी कि शूर उसका जीवन बरबाद कर चुका है और बड़ों के कहने पर एक नई पत्नी लेने वाला है। अब तो रह रह कर उसका ध्यान चाकू पर केन्द्रित हो उठता था।

रात्रि घिरने तक उसके मस्तिष्क में द्वन्द्व चलता रहा। अन्त में गीगा खाल और पत्तों की बनी झोंपड़ी से धीरे-धीरे बाहर निकल आई। पिछले चौबीस घन्टों में उसके मुँह में अन्न का एक भी दाना नहीं गया था, तो भी उसे भूख महसूस नहीं हो रही थी। उसकी प्रत्येक चेतना एवं भावना घृणा और ईर्ष्या के विष से आवृत्त हो चुकी थी। गीगा छिपती-छिपाती भीड़ की सीमा से, जो लट्ठे के साथ बंधी आकृति के इधर-उधर इकट्ठी हो रही थी, आगे की ओर बढ़ी।

आह! वे कैदी को दारुण यातनायें देने ही वाले थे। ऐसा करने में उन्हें क्या आनन्द मिलेगा? गीगा अपने पंजों के बल खड़ी होकर एक औरत के कन्धे के ऊपर से देखने लगी। वह औरत घूमी और उसे पहचान कर व्यंगपूर्वक हँसी।

"थ्रूर उस स्त्री के सहवासी की मृत्यु का, जिसे वह तुम्हारा स्थान देने वाला है, पूरा पूरा आनन्द उठायेगा," उसकी सहेली ने व्यंग किया।

गीगा ने कोई उत्तर नहीं दिया। अपने हृदय की भावनाओं को दूसरों को दिखाने का उस युग में कोई रिवाज नहीं था। इस स्त्री को यह पता लग जाने दे कि वह भयकर शोकग्रस्त है, इससे तो वह मरना अधिक पसन्द करती।

"तुमने उसे इस आनन्द से विमुख करने का प्रयत्न किया था," व्यंग करने वाली ने आगे कहा। "यही कारण था कि वह तुम से इतना अधिक क्रोधित हो उठा था।"

इस औरत के शब्दों ने गीगा के मस्तिष्क में एक नई विचारधारा को जन्म दिया। हां, यदि कैदी बचकर निकल भागा, तो थ्रूर अवश्य विक्षिप्त हो उठेगा। सरदार सीमू की भी यही दशा होगी, जिस मूर्ख ने थ्रूर को आदेश दिया था कि वह उसे पीटे और अपने लिये कोई नई सहवासिनी चुन ले।

गीगा पुनः अपने पजों के बल खड़ी हो गई, और लट्ठे से बंधे हुए उस मनुष्य के चेहरे की ओर उत्सुकता और व्यग्रता से देखने लगी। उसके चारों ओर पडे आग के घेरे से उठने वाली लपटों ने उसके शरीर एव प्रत्येक अग को प्रदीप्त कर दिया था। उसके अग उतने ही स्पष्ट चमक रहे थे, जितने कि सूर्य के प्रकाश में। पुरुष बडा ही खूबसूरत था। सीसू की जाति में कोई भी ऐसा पुरुष न था, जो अजनबी के सामने शारीरिक दृढता एव सुन्दरता में एक क्षण भी ठहर सके। गीगा की काली आंखों में प्रशसा की झलक स्पष्ट रूप से उभर आई। उसे यदि केवल ऐसा ही कोई अन्य पुरुष मिल जाता और वह उसके साथ भाग सकती तब वास्तव में वह थ्रूर से अपने अन्याय का बदला ले लेती। काश यही वह आदमी होता! आह! तब, वास्तव में सीसं—ौर थ्रूर

को अपने किये की सज़ा अवश्य मिल जाती। किन्तु यह एकदम असम्भव था— वह आदमी कुछ ही घण्टों में इस दुनिया से कूच करने वाला था।

गीगा गाँव के चक्कर लगाने लगी, क्योंकि एक स्थान पर अधिक देर खड़े रहने से उसकी घृणा बढ़ने लगती थी। क्रोधित शेरनी की भांति वह इधर-उधर घूमती रही। जब-तब जाति की स्त्रियां उस पर व्यंग कस देतीं अथवा उसका तिरस्कार कर देतीं।

ऐसा हमेशा ही होता रहेगा। अब वह उनसे— प्रत्येक से घृणा करने लगी थी। जब बेचैनी के साथ चक्कर लगाती हुई वह अपनी झोंपड़ी के आगे से गुज़री, तो उसने अपने बच्चे के रोने की कातर ध्वनि सुनी। वह लगभग उसे भूल चुकी थी। वह तेज़ी से अन्दर प्रविष्ट हुई और झपट कर बच्चे को घास और लोमड़ी के खाल के बिछौने से उठा लिया।..

यह शूर का बच्चा था— उसके सहवासी की निशानी थी। इसने अभी से अपने पिता के सदृश होना शुरू कर दिया था। शूर को इसका कितना गर्व था। अपने मस्तिष्क के कोप में उठने वाले उस भयानक विचार के आते ही उसने हांपना शुरू कर दिया, जो अत्यन्त निर्दयतापूर्वक उसकी विचार शक्ति को शिथिल किये जा रहा था। उसने बच्चे को अपने से एक हाथ की दूरी पर कर दिया और झोंपड़ी के आन्तरिक अन्धकार में उसके हाथ-पांव मरोड़ने की चेष्टा करने लगी।

शूर को कितना कष्ट पहुँचेगा यदि उसके अन्याय का मूल्य उसके पहले लड़के— उसके इकलौते लड़के को चुकाना पड़े। किन्तु तभी गीगा ने नन्हें से उस मांस-पिण्ड को पुनः खाल के बिछौने पर डाल दिया और चौकड़ी भरती हुई डरी हरिणी की भाँति झोंपड़ी से बाहर निकल आई।

लगभग आधे घण्टे तक वह कैम्प के अन्दर बड़ी बेचैनी से घूमती रही। उसका मस्तिष्क अपराधयुक्त भावनाओं को जन्म देता हुआ तेज़ी से चक्कर लगा रहा था। एक दर्जन बार वह उस मृत्यु की अग्नि के घेरे के निकट पहुँची, जो लट्ठे के साथ बँधे हुये जीवित मनुष्य को धीरे-धीरे भूने जा रही थी। अभी

तक उन्होंने उस पर प्रहार नहीं किया था— किन्तु आने वाली यातनाओं की छोटी सी झलक भर दी थी। बस !

अकस्मात् ही वह शूर के सम्मुख आ गई। अनिच्छा से उसके हाथ पुन-विचार की प्रार्थना के भावों को लिये ऊपर उठ गये। वह सीधी शूर के मार्ग में थी। शूर रुका और एक क्षण उसकी ओर देखा, फिर तिरस्कार के साथ बड़बड़ाते हुए, जो गुर्राहट के अतिरिक्त कुछ नहीं था, उसने अपना हाथ हवा में उठाया और तपाक् से उसके मुँह पर दे मारा।

"गीगा, मेरे रास्ते से हट जा," वह गुर्राया और आगे बढ़ गया।

औरतों के एक छोटे से समूह ने, जो वहीं निकट खड़ा हुआ था, यह सब देखा। वे बड़ी ही असभ्यता एवं व्यंग के साथ अपनी अभागिन बहन की दुर्दशा पर हँस पड़ीं।

गीगा क्रोध से काँपने लगी। उसका शरीर रोष एवं मानहानि से भभक रहा था। उसके मस्तिष्क ने निश्चय— एक अत्यधिक भयानक निश्चय— कर लिया। अकस्मात् वह पागल हो उठी। फौरन उस स्थान से घूम कर वह उस झोंपड़ी की ओर दौड़ी, जिसमें उसका बच्चा लेटा हुआ था। अंधकार की चादर में उसके हाथों में वह नन्हीं वस्तु आ गई। वह शूर का था। शूर उससे प्यार करता था। एक क्षण के लिये उसने उसके मुलायम कपोलों को अपने कपोलों से दबाया। तब उस छोटे से नन्हें गर्म शरीर को कस कर अपने वक्ष से लगा लिया। फिर······ ईश्वर उसे क्षमा करे, क्योंकि वह केवल असभ्य मानवी थी जो क्रोध और घृणा को अपनी आत्मा बेच चुकी थी।

उस करुणामय बंडल को झोंपड़ी के फर्श पर डालकर, गीगा दौड़ कर पुनः खुले मैदान में लौट आई। उसकी आँखों में खून चढ़ा हुआ था। उसके लम्बे, काले बाल बिखर कर उसके मुँह और कंधों पर आ गिरे थे। वह भीड़ को उस बाहिरी हद की ओर दौड़ी, जो उस ज़िद्दी शिकार के शिकार होने के दृश्य को देख रही थी, जिसने उनके द्वारा दी जाने

यातनाओं के विरुद्ध याचना की भीख माँगना अस्वीकार कर दिया था। यद्यपि अब तक लपटों की गर्मी की भीषणता ने उसे पर्याप्त व्याकुल बना दिया था, तो भी आग के घेरे के अन्दर बन्द क़ैदी ने उन असभ्य एवं उत्सुक दर्शकों को अपनी किसी व्याकुलता का प्रदर्शन नहीं होने दिया था।

गीगा एक क्षण तक उसे देखती रही। जब शूर और सीसूं उसके कृत्य को जानेंगे तब उसका भाग्य भी वैसी ही यातनायें पाने का था, क्योंकि उस युग में लड़का एक अमूल्य थाती गिना जाता था।

कुछ पूर्व ही उन औरतों द्वारा कसे गये व्यंगों ने उसके दिमाग में पुनः उथल-पुथल मचानी शुरू कर दी। अपने बदले के इस अन्तिम दौर को वह किस प्रकार पूर्ण करेगी ? व्यवहारिक रूप से यह एकदम असम्भव था। लट्ठा चारों ओर से जाति के उत्सुक लोगों के झुण्ड से घिरा हुआ था।

गीगा घूमी और झोंपड़ियों के पीछे गाँव के दूसरे छोर की ओर दौड़ पड़ी। उस ओर कोई भी नहीं था। अग्नि को प्रज्वलित रखने वाली लड़कियां भी, अपना काम छोड़ कर, बन्दी को दी जाने वाली यातनाओं का आनन्द लेने चली गई थीं। गीगा ने पत्तों से भरी टहनी उठाई, जो वहीं आग के निकट पड़ी हुई थी। वह आग को बुझाने के लिये रखी गई थी। उसने उसकी सहायता से जलती हुई दो लकड़ियों को बुझा दिया और अन्दर आने के लिये एक छोटा सा रास्ता बना दिया जो यह सिद्ध कर सके कि कोई जंगली जानवर शिकार की तलाश में घेरे के अन्दर आया है। फिर वह दौड़ती हुई उस भीड़ की ओर भागी, जो बन्दी को घेरे हुई थी।

जैसे ही वह उन लोगों के निकट पहुँची, वैसे ही दिखाने को भयानक भय से चीत्कार कर उठी। जो उसके निकट खड़े हुए थे, उसके चीत्कारों से चौंक उठे।

'ज़ोर का परिवार !" वह चिल्लाई। "अग्नि बुझ गई थी, और चार शेर कूद कर सुरक्षा पंक्ति में प्रविष्ट हो गये हैं, जहाँ वे हमारे छोटे-छोटे बच्चों को शिकार बना रहे हैं। उस ओर," और उसने सुरक्षा पंक्ति की विपरीत

दिशा में संकेत किया।

उसी क्षण सम्पूर्ण कबीला झोपड़ियों के घेरे की ओर तेजी से बढ़ चला। पहले लडाका आगे बढ़े, फिर बच्चे और स्त्रियां। लट्ठे पर बंधा शिकार अकेला और अनदेखा रह गया। जब जाति के समस्त लोगों की पीठ क़ैदी की ओर हो गई, तब गीगा उस आग के घेरे में कूद गई जो शिकार को चारों ओर से घेरे हुई थी।

काकू ने औरत को देखा और उसे पहचान लिया। उसने उसके हाथ में चाकू देखा। पिछली रात को उसने उसे मार डालने का प्रयत्न किया था और अब वह पुनः उसका काम तमाम करके अपनी प्यास बुझाने वाली थी। ठीक है आग द्वारा धीरे-धीरे सिक कर मरने की तुलना में यह अधिक श्रेयस्कर था।

किन्तु गीगा के चाकू ने उसके शरीर को नहीं छुआ। इसके विपरीत, उसने बेल की उन तांतों को तेजी से काटना शुरू कर दिया, जो उसे मजबूती के साथ लट्ठे से बांधे हुई थीं। जैसे ही अन्तिम बन्धन भी कट गया, औरत ने उसका हाथ पकड कर खींचा।

"आओ" वह चिल्लाई। "जल्दी करो! उनके लौटने के पूर्व ही यहां से निकल चलो। गांव में कोई भी सिंह नहीं आया है।"

काकू उससे प्रश्न करने के लिये नहीं रुका। कुछ कदम तक वह शराबियों की भांति लड़खड़ाता हुआ चला, क्योंकि बन्धनों ने उसके हाथ और पांव के रक्त-प्रवाह में गतिरोध उत्पन्न कर दिया था। किन्तु गीगा उसे आधा सहारा देती हुई, आधे घसीटती हुई लट्ठे के चारों ओर लगी हुई आग से खींच कर बाहर निकाल लाई और तत्पश्चात् सुरक्षा-पंक्ति की अग्नि से बाहर निकाल कर उस गहन अन्धकार में, जो नदी के किनारे को अपनी काली चादर में आवृत्त किये हुए था, ले चली।

जब काकू कदम उठाता हुआ आगे बढ चला तो उन नाड़ियों में रक्त-प्रवाह पुनः प्रारम्भ हो गया, जो कड़े बन्धनों से शिथिल हो गई थी। जिस समय वे नदी के किनारे पहुंचे, उस समय काकू लगभग स्वाभाविक दशा में आ

चुका था।

गीगा उसे नाव के निकट ले गई।

"जल्दी करो," उसने उत्तेजित होकर कहा जब वे दोनों नाव को घसीट कर पानी में उतार रहे थे, "वे लोग शीघ्र ही हम तक पहुंच जायेंगे और हम दोनों मार डाले जायेंगे।"

गांव से आती हुई क्रोधित कण्ठों की आवाजें स्पष्ट रूप से कानों में पड़ रही थीं। और जलती हुई लकड़ियां जो मशालों का काम कर रही थीं, उनकी हलचल और इधर उधर दौड़ने को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित कर रही थीं। वे परेशानी के साथ पागलों की भांति काकू को उस आग में ढूंढ रहे थे जो उस लट्ठे को चारों ओर से घेरे हुए थी। नाव पानी की सतह पर तैर गई थी और लहरों को पीछे छोड़ती हुई आगे बढ़ चली थी। गीगा उसमें सवार हो चुकी थी और काकू नाव के दूसरे छोर पर बैठने के लिये स्थान बना रहा था। उसी समय गांव मे दूसरी प्रकार की आवाजें आती हुई सुनाई पड़ीं। असंख्य मनुष्यों के कण्ठों से भिन्न भिन्न प्रकार की आवाजें निकल रही थीं। अब वहां से युद्ध की हुंकारें आ रही थीं, पहले जहां से क्रोध भरी पुकारें कान के पर्दों को छू रही थीं। जहां वे खड़े हुए थे उतनी दूरी से भी गीगा और काकू नौका-निर्माताओं के गांव में होने वाले प्रचण्ड युद्ध को देख पा रहे थे। इसका मतलब क्या हो सकता है?

"वे एक दूसरे के साथ आपस में ही भिड़ गये हैं," गीगा ने कहा। "और जब तक वे लड़ें तब तक दिन निकलने के पूर्व ही हमें अपने और उनके बीच में यथासाध्य अधिक से अधिक दूरी डाल देनी चाहिये।"

किन्तु काकू वहां से दूर जाने के लिये इतना अधिक उत्सुक नहीं था। वह गांव में चल रहे युद्ध के कारणों से अधिक से अधिक परिचित होना चाहता था। उसे ऐसा कोई भी कारण नजर नहीं आ रहा था जिससे गांव के निवासी इतनी अमानुषिक भीषणता के साथ एक दूसरे पर ही टूट पड़ते। और न जाने काकू को ऐसा क्यों प्रतीत हुआ कि गांव में उसके गांव छोड़ने से पहले की तुलना में अब

अधिक लोग हैं। इस सबका क्या अर्थ हो सकता है ? गुहा-निवासी को न जाने क्यों ऐसा आभास हुआ कि शत्रुओं ने गाँव पर हमला बोल दिया है। उसने उस समय तक रुकने का इरादा किया जब तक वह उन आक्रमणकारियों का परिचय प्राप्त न करले।

किन्तु गीगा प्रतीक्षा में समय नहीं गंवाना चाहती थी। उसने चप्पू उठा लिया और उससे पानी को पीछे धकेल नाव को आगे बढ़ाने लगी।

"रुको" काकू ने उत्साह से कहा। किन्तु गीगा ने इस बात पर ज़ोर दिया कि हमें जल्दी करनी चाहिये अन्यथा फिर मौत का सामना करने के लिये सिर पर कफन बाँध रखना चाहिये।

जब वे आपस में इस प्रकार तर्क-वितर्क कर रहे थे, तब ही गीगा किनारे की ओर संकेत करती हुई आगे को झुक गई।

"देखो," उसने धीरे से कहा।" उन्होंने हमें खोज निकाला है। हमारा पीछा किया जा रहा है।"

गीगा द्वारा संकेत की गई दिशा की ओर काकू ने देखा। उसे अन्धकार में किनारे की ओर भागी चली आने वाली दो धुन्धली आकृतियों से गीगा की बात का पूर्ण विश्वास हो गया। जैसे ही उसने उनकी ओर नजर डाली, उसने देखा कि वे एक नाव को पकड़ कर घसीट रहे हैं और पानी पर उतारने ही वाले हैं। तब उसे एकदम ज्ञात हो आया कि केवल तत्काल नाव खेने में ही सुरक्षा निहित है। उसने भी अपना चप्पू उठा लिया और गीगा की सहायता से शीघ्र ही नाव को नदी के विशाल, खुले वक्ष पर ले आया।

"हम इस समय एक ओर को घूम सकते हैं, और उन्हें सफलता से धोखा दे सकते हैं," गीगा ने मन्द स्वर में कहा।

काकू ने सिर हिला दिया।

"हम लोग उत्तर में स्थिर अपने देश को ओर घूमेंगे," वह बोला।

गीगा ने कोई प्रतिरोध नहीं किया। उसके लिये जैसा दक्षिण था, वैसा

चुका था।

गीगा उसे नाव के निकट ले गई।

"जल्दी करो," उसने उत्तेजित होकर कहा जब वे दोनों नाव को घसीट कर पानी में उतार रहे थे, "वे लोग शीघ्र ही हम तक पहुंच जायेंगे और हम दोनों मार डाले जायेंगे।"

गांव से आती हुई क्रोधित कण्ठों की आवाजें स्पष्ट रूप से कानों में पड़ रही थीं। और जलती हुई लकड़ियाँ जो मशालों का काम कर रही थीं, उनकी हलचल और इधर उधर दौड़ने को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित कर रही थीं। वे परेशानी के साथ पागलों की भाँति काकू को उस आग में ढूंढ रहे थे जो उस लट्ठे को चारों ओर से घेरे हुए थी। नाव पानी की सतह पर तैर गई थी और लहरों को पीछे छोड़ती हुई आगे बढ़ चली थी। गीगा उसमें सवार हो चुकी थी और काकू नाव के दूसरे छोर पर बैठने के लिये स्थान बना रहा था। उसी समय गाँव मे दूसरी प्रकार की आवाज़ें आती हुई सुनाई पड़ीं। असभ्य मनुष्यों के कण्ठों से भिन्न भिन्न प्रकार की आवाजें निकल रही थीं। अब वहाँ से युद्ध की हुंकारें आ रही थीं, पहले जहां से क्रोध भरी पुकारें कान के पर्दों को छू रही थीं। जहां वे खड़े हुए थे उतनी दूरी से भी गीगा और काकू नौका-निर्माताओं के गांव में होने वाले प्रचण्ड युद्ध को देख पा रहे थे। इसका मतलब क्या हो सकता है?

"वे एक दूसरे के साथ आपस में ही भिड़ गये हैं," गीगा ने कहा। "और जब तक वे लड़ें तब तक दिन निकलने के पूर्व ही हमें अपने और उनके बीच में यथासाध्य अधिक से अधिक दूरी डाल देनी चाहिये।"

किन्तु काकू वहां से दूर जाने के लिये इतना अधिक उत्सुक नहीं था। वह गांव में चल रहे युद्ध के कारणों से अधिक से अधिक परिचित होना चाहता था। उसे ऐसा कोई भी कारण नजर नहीं आ रहा था जिससे गांव के निवासी इतनी अमानुषिक भीषणता के साथ एक दूसरे पर ही टूट पड़ते। और न जाने काकू को ऐसा क्यों प्रतीत हुआ कि गांव में उसके गांव छोड़ने से पहले की तुलना में अब

उन्हें अपने और उनके बीच में पर्याप्त दूरी डाल देनी चाहिये ताकि फिर पीछा करने वाले यह न जान सकें कि वे किस ओर मुड गये हैं। इस काम को पूरा करने की सम्भावना भी उन्हें कम ही नजर आई। क्योंकि जब वे पानी में चप्पू मारेंगे तब नीरवता के साम्राज्य में उससे उत्पन्न होने वाली आवाज को कैसे रोक सकेंगे।

रात्रि अपने पूरे यौवन पर थी और धीरे-धीरे उसका यौवन ढल कर, ऊषा की ओर अनन्त में विलीन होने के लिये मचल रहा था। वे जी जान से अपने पीछे लगे शत्रुओं के बीच दूरी की खाई डालने में प्रयत्नशील थे। इसके लिये काकू और गीगा अपनी पूरी शक्ति खर्च किये दे रहे थे। अगले कुछ मिनटों में ही सम्भवतः वे उन्हें धोखा देने में सफल हो सकेंगे। वे जैसे-तैसे कर कठिनाई से नाव को मोड़ने वाले थे कि तब ही लहरों के एक रेले ने उनके सामने तट लाकर खड़ा कर दिया। दोनों एकदम घबरा उठे।

अकस्मात् ही यह क्या हुआ? वे कहा पहुँच गए? कुछ समय तक वे नदी में सीधे ही नाव खेते रहे थे, तो भी पहचानने में गलती नहीं हो सकती— क्योंकि धरती उनके ठीक सामने थी। वापिस लौटने का मतलब था कि वे जान बूझकर अपने आपको शत्रुओं के चंगुल में डाल दें। यदि काकू निहत्था नहीं होता, तो वह नाव पर पीछा करने वाले उन दोनों व्यक्तियों से, जो उनके इतना निकट आ चुके थे, कभी भी इतना भयभीत नहीं होता। लेकिन औरत के केवल एक चाकू और लकड़ी के दो टुकडों के सहारे उनका सामना करना उसे परिणामहीन नजर आ रहा।

अपनी सम्पूर्ण शक्ति व्यय कर उन दोनों ने नाव के मुंह को लहरों के सहारे खे कर नाव को किनारे की रेत पर चढा लिया। फिर वे कूद कर उतर पड़े और नाव रेत में बहुत दूर आगे तक शक्तिशाली लहर की पहुंच के बाहर ले गये।

वे कहां थे? काकू को इस प्रश्न का उत्तर कुछ-कुछ मिल चला था। उसने अनुमान लगाया कि वे उसी द्वीप पर पहुंच गये हैं, जहां से उसने नौका-निर्माताओं द्वारा मातुल को बलात् पकड ले जाते देखा था और जहां से वह स्वयं भी अभी कुछ पूर्व ही बच कर निकला था।

ही उत्तर भी। उसका जीवन समाप्त हो चुका था। अब उसके जीवन में कोई आनन्द शेष नहीं रह गया था। उसकी विचारधारा खाल और पत्तों से बनी झोंपड़ी के अन्धकारमय अन्तर में घूम रही थी, जहां एक करुण बंडल घास और लोमड़ी की खाल से बने बिछौने पर पड़ा हुआ था।

कुछ समय तक किनारे से दूर चप्पू मारते हुए दोनों एकदम चुप रहे। जब-तब वे नदी के काले पानी के ऊपर अपना पीछा करने वाली छोटी नाव के काले धब्बे को ध्यान से देख लेते थे।

"तुम ने मुझे किस लिये बचाया" अन्त में काकू ने पूछा।

"क्योंकि मुझे शूर से घृणा थी," नारी ने उत्तर दिया।

काकू फिर चुप रहा और कुछ सोचने लगा। किन्तु वह गीगा के बारे में नहीं सोच रहा था। उसका मस्तिष्क मातुल के भाग्य की कल्पना में विचर रहा था। नौका-निर्माताओं के गाँव से बच निकल भागने के पश्चात् वह भाग कर किस ओर गई होगी? क्या वह जाति के लोगों तक सुरक्षित पहुँच सकी होगी? क्या वह यह जान चुकी थी कि उस झोंपड़ी में घुसने वाला काकू ही था जहाँ वह लेटी थी, जहाँ उसे शूर के पंजों से उसने बचाया था? उसने अनुमान लगाया कि वह उसे पहचान न सकी थी। क्योंकि यदि वह उसे पहचान लेती तो अवश्य ही वहाँ रुकती और लड़ाई में उसकी सहायता भी करती।

उसी क्षण गीगा ने उसके विचार-प्रवाह को भंग कर दिया। वह नाव के पिछले भाग की ओर संकेत कर रही थी। वहाँ से कोई पचास गज की दूरी पर काकू को एक दूसरी नाव की अस्पष्ट आकृति दिखाई दी जिसमें दो नाव खेने वाले बैठे हुए थे।

"जल्दी करो," गीगा ने धीरे से कहा। "वे हमारे नजदीक आते जा रहे हैं और मेरे इस चाकू के अतिरिक्त हम बिल्कुल निहत्थे हैं।"

काकू अपने चप्पू पर झुक गया जो पानी के अन्दर रहकर छपाछप करता हुआ ऊपर नीचे उठ रहा था। पीछा करने वालों को धोखा देकर उत्तर की ओर नाव का रुख मोड़ देने का अब कोई अवसर नहीं रह गया था। सर्वप्रथम

उन्हें अपने और उनके बीच में पर्याप्त दूरी डाल देनी चाहिये ताकि फिर पीछा करने वाले यह न जान सकें कि वे किस ओर मुड़ गये हैं। इस काम को पूरा करने की सम्भावना भी उन्हें कम ही नजर आई। क्योंकि जब वे पानी में चप्पू मारेंगे तब नीरवता के साम्राज्य में उससे उत्पन्न होने वाली आवाज को कैसे रोक सकेंगे।

रात्रि अपने पूरे यौवन पर थी और धीरे-धीरे उसका यौवन ढल कर, ऊपा की ओर अनन्त में विलीन होने के लिये मचल रहा था। वे जी जान से अपने पीछे लगे शत्रुओं के बीच दूरी की खाई डालने में प्रयत्नशील थे। इसके लिये काकू और गीगा अपनी पूरी शक्ति खर्च किये दे रहे थे। अगले कुछ मिनटों में ही सम्भवतः वे उन्हें धोखा देने में सफल हो सकेंगे। वे जैसे-तैसे कर कठिनाई से नाव को मोड़ने वाले थे कि तब ही लहरों के एक रेले ने उनके सामने तट लाकर खड़ा कर दिया। दोनों एकदम घबरा उठे।

अकस्मात् ही यह क्या हुआ? वे कहां पहुँच गए? कुछ समय तक वे नदी में सीधे ही नाव खेते रहे थे, तो भी पहचानने में गलती नहीं हो सकती— क्योंकि धरती उनके ठीक सामने थी। वापिस लौटने का मतलब था कि वे जान बूझकर अपने आपको शत्रुओं के चंगुल में डाल दें। यदि काकू निहत्था नहीं होता, तो वह नाव पर पीछा करने वाले उन दोनों व्यक्तियों से, जो उनके इतना निकट आ चुके थे, कभी भी इतना भयभीत नहीं होता। लेकिन औरत के केवल एक चाकू और लकड़ी के दो टुकड़ों के सहारे उनका सामना करना उसे परिणामहीन नजर आ रहा।

अपनी सम्पूर्ण शक्ति व्यय कर उन दोनों ने नाव के मुंह को लहरों के सहारे खें कर नाव को किनारे की रेत पर चढ़ा लिया। फिर वे कूद कर उतर पड़े और नाव रेत में बहुत दूर आगे तक शक्तिशाली लहर की पहुँच के बाहर ले गये।

वे कहां थे? काकू को इस प्रश्न का उत्तर कुछ-कुछ मिल चला था। उसने अनुमान लगाया कि वे उसी द्वीप पर पहुंच गये हैं, जहां से उसने नौका-निर्माताओं द्वारा मातुल को बलात् पकड़ ले जाते देखा था और जहां से वह स्वयं भी अभी कुछ पूर्व ही बच कर निकला था।

किन्तु उसका अनुमान एकदम गलत था। रात्रि के अन्धकार में अविराम चप्पू चलाने से उनकी नाव उन्हें निकटवर्ती किनारे के दक्षिण की ओर ले गई थी जिसके पूर्वीय भाग के द्वीप से एक बार काकू का परिचय भी हो चुका था।

किन्तु इस से क्या हुआ? वह भी उतना ही भयावह था, जितना कि द्वीप। दोनों ही प्रदेश उस रहस्यमय देश की थाती थे। वे प्रदेश केवल उड़ने वाले, भयंकर, विकराल, भयावह, विशाल पक्षियों (रेप्टाइल्स) से आवाद ही न थे, वहां उन उपाख्यानों में आये मनुष्यों का निवास था, जो मनुष्य के ऊपर निरन्तर भय की छाया वन कर छाये रहते थे।

और काकू एकदम निहत्था था।

काकू का शरीर भय से एकदम ठंडा पड़ चुका था, किन्तु आशा ने उसका साथ नहीं छोड़ा था। वह यह प्रश्न करता हुआ नारी की ओर नहीं मुड़ा कि 'अव हमें क्या करना चाहिये?' यदि आदि मनुष्य की कोई विशेषता थी तो वह थी आत्म-निर्भरता। वंश-परम्परा, परिस्थितियों एवं प्रकृति के समस्त शक्तिशाली शासनों ने संयुक्त हो उसे ऐसा वना दिया था। अन्यथा वह पृथ्वी के वक्ष से वहुत पूर्व अपनी सन्तति को अपना प्रतिविम्व दिये विना ही लुप्त हो गया होता— उसे जीवित रखने के लिये उसके कोई सन्तति होती ही नहीं। फिर हमारे समान कोई अन्य जीव उसकी दवी हुई हड्डियों को निकालता और उसे किसी जानवर का नाम दे उसकी आदतों, रहन-सहन एवं अन्य वातों का अध्ययन करता, ठीक उसी प्रकार जैसा कि आजकल हम लोग अन्य लुप्त प्राणियों का कर रहे हैं।

नानू का पुत्र काकू उस जाति का सदस्य नहीं था, जिसके भाग्य में नाश होना लिखा था। वह जानता था कि किस समय लड़ना चाहिये और किस समय भाग पड़ना चाहिये। किन्तु इस समय तो किसी से वचकर भागने की वात भी नहीं थी। सर्वप्रथम यह आवश्यक था कि छिपने के लिये कोई सुरक्षित स्थान खोज निकाला जाय। उसने गीगा की कलाई पकड़ कर खींची।

"आओ," वह बोला। "हमें कोई पेड़ अथवा गुहा तलाश कर लेनी चाहिये ताकि अगला दिन निकलने तक हम अपने को उसमें सुरक्षित रख सकें।"

गीगा ने पीछे मुड़कर कंधे के ऊपर से देखा ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार स्त्रियाँ देखा करती हैं।

"देखो," वह धीरे से बोली और लहरों की ओर संकेत किया।

एक उत्तुंग विशाल लहर के थपेड़ों पर काले क्षितिज के आगे काफ़ू ने एक नाव की आकृति को उभरते हुये देखा जिसमें दो मानव छाया बैठी हुई थीं और जो तेज़ी से पानी में अपने चप्पुओं को चला रही थी। उस ओर एक नजर ही पर्याप्त थी। पीछा करने वाले उनके अत्यन्त निकट पहुँच चुके थे। काफ़ू गीगा की कलाई पकड़े किनारे की विपरीत दिशा में अन्धकार से भरी छायाओं की ओर लपका। नारी उसके साथ-साथ तेज़ी से भागी जा रही थी।

काफ़ू को बहुत आश्चर्य था कि एक नारी उसे, एक अजनबी, एक शत्रु को, बचाने के लिये अपनी जाति के लोगों से इस प्रकार भाग सकती है। पुनः उसने प्रश्न किया जिसका गीगा ने बड़ा ही विचित्र उत्तर दिया।

"तुम मुझे अपने ही लोगों के बीच से क्यों निकाल कर लाई हो?" उसने पूछा।

"मैं तुम्हें बचा कर नहीं लाई हूँ," स्त्री ने उत्तर दिया। "मैं तो शूर को पागल बना देना चाहती हूँ। बस! वह सोचेगा कि मैं तुम्हारे साथ, तुम्हें अपना सहवासी बनाने के लिये भाग खड़ी हुई हूँ। उसके मस्तिष्क में यह विचार आये, इतनी ही मेरी आकांक्षा है; तुम मरो चाहे जियो। मैं तुमसे भी घृणा करती हूँ, पर उतनी नहीं जितनी शूर से।"

•

१४

जब काकू, गीगा को साथ लिये हुए, अंधियारी रात में जंगल के गहन अन्धकार के मध्य में बढ़ चला, जो किनारे से अन्दर के प्रदेश की हल्की चढ़ाई को अपने चादर में ढके हुए था, तब वह अपने मस्तिष्क में शूर की बेचैनी एवं अपनी मुक्तिदातृ की निष्कपटता को सोच मुस्करा रहा था।

अब काकू ही संरक्षक था। वह उस औरत को उसके भाग्य पर छोड़ सकता था। उस स्त्री ने यह एकदम स्पष्ट कर दिया था कि वह उसके प्रति किंचित् भी प्रेम नहीं रखती है— एकदम इतना स्पष्ट, जितना कि शब्द विचार को अधिक से अधिक व्यक्त कर सकते थे, "मैं तुम से भी घृणा करती हूँ, किन्तु उतनी नहीं, जितनी कि शूर से।' किन्तु गीगा को हमेशा के लिये अलग कर देने का विचार एक बार भी उसके दिल में नहीं समाया। वह एक नारी थी। उसने काकू की जिन्दगी बचाई थी। उसकी भावना की उपेक्षा करना ही ठीक था।

अन्धकार में काकू को एक विशाल वट वृक्ष मिल गया। निरीक्षण करने के लिये वह पेड़ की चिकनी शाखाओं पर चढ़ गया। वहां कोई भी भयानक शत्रु घात लगाये हुए नहीं बैठा था। अतः वह नीचे उतर आया और गीगा को सहारा देकर ऊपर चढ़ाने लगा। दिन निकलने तक उस पेड़ की शाखाओं पर छिपे रहना उनके लिये अधिक श्रेयस्कर था— रात्रि में बिना आवश्यक कार्य निहत्थे जंगल में घूमना खतरे से खाली नहीं था।

काकू पेड़ों पर सोने का अभ्यस्त था। उसके जाति के लोगों को प्रायः ऐसा करना पड़ता था जब उन्हें एक जगह से दूसरी जगह कूंच करते हुए, या अपने शिकार का पीछा करते हुए अपनी गुफाओं से काफी दूर निकल जाने के कारण वहीं कहीं रात गुजारनी पड़ती थी। किन्तु गीगा जीवन के इस पहलू से

किंचित् भी भिन्न नहीं थी। वह भयभीत हो पेड़ के तने मे चिपट कर बैठ गई जिससे उसकी निद्रा में अवरोध उत्पन्न हो गया।

काकू ने उसे बताया कि पेड़ की डाल पकड़ कर तने के सहारे अपनी पीठ टिका कर किस प्रकार आराम से लेटा जा सकता है; किन्तु फिर भी वह झपकी के दौरान में गिरने के भय से व्याकुल रही। अन्त में काकू ने एक हाथ से उसे सहारा दिये रखने के लिये पकड़ लिया और इस प्रकार वह अपने शत्रु के कंधे का तकिया बनाकर सो गई।

जब उन दोनों सोने वालों की निद्रा टूटी उस समय भुवनभास्कर को उदय हुए पर्याप्त समय बीत चुका था। गीगा की आँखें सर्वप्रथम खुलीं। एक क्षण तक वह अपने चारों ओर के विचित्र वातावरण से भयभीत हो स्तब्ध बैठी रही। वह कहाँ पहुँच गई थी? किस चीज़ के ऊपर उसका सिर टिका हुआ था? उसने अपनी आँखें उठाईं। वे सूर्य के ताप से ताम्र-वर्ण हुए, सम्पूर्ण स्वस्थ शरीर वाले देवता-सम, काकू पर जा टिकीं। धीरे-धीरे उसके विचार, उन्माद की धुंधली चादर से निकलकर पुनः स्वस्थता प्राप्त करने लगे। उसने आदमी की सुदृढ बाहु को अपने चारो ओर कसे हुए पाया जो अभी तक सुरक्षा के लिये उसे कस कर पकडे हुई थी।

-यह उसका शत्रु है, उसकी जाति का शत्रु है। उसने नई आँखों से काकू की ओर दृक्पात किया। इसका यही कारण था कि निकलते हुए दिन ने उसकी आत्मा को भी जागृति प्रदान कर दी थी। मनुष्य अवर्णनीय रूप मे सुन्दर था— एक सुन्दर नर, अंग-अंग सुदृढ़ एवं सुडौल। गीगा ने स्वप्निल हो आँखें मूद ली, और उसका सिर पुनः उसके वक्षवत, सुदृढ एवं ताम्रवर्ण कन्धे पर जा टिका। किन्तु उसी क्षण उसके अर्द्ध-सुषुप्त मस्तिष्क में पूर्ण चेतना का प्रादुर्भाव हुआ। गत भूत की स्मृति-गोद में सोई घटनायें पुनः चित्र बनकर उसके मानस पटल पर छाने लगीं। उसने कारुणिक बण्डल को जो दूरावस्थित झोंपड़ी के फर्श पर लगे लोमड़ी की खाल और घास के बिछौने पर पड़ा हुआ था, देखा।

अकस्मात् ही गहरा साँस लेते हुए, जिसे यदि चीत्कार कहा जाय तो अति-

यथोचित नहीं होगी, मीमो तन कर बैठ गई। उसके शरीर की हरकतों से काकू की नींद टूट गई। उसने अपनी आँखें खोलीं, औरत की ओर देखा और अपनी बाँह को उसके नीचे से निकाला। फिर पेड़ की शाखा पर सीधा खड़ा हो गया।

"सर्वप्रथम हमें भोजन और शस्त्रों की तलाश करनी होगी," वह बोला। "फिर हम उस धरती पर लौट जायेंगे जहाँ मेरी जाति रहती है। आओ।"

उसकी तीव्र दृष्टि अपने नीचे फैली धरती का गौर से निरीक्षण करने लगी। उसकी नजर में कोई भी शिकारी जानवर नहीं आया। काकू ने सर्व-प्रथम औरत को पेड़ से नीचे उतारा और फिर स्वयं भी उसके निकट धीरे से कूद कर नीचे आ रहा। अत्यधिक मात्रा में लगे हुये फलों ने उनके भूख के भयंकर सन्ताप को शान्त कर दिया। इस प्राप्ति ने काकू को प्रदेश के अन्दर की उठने वाली चढ़ाई पर चढ़ने का साहस प्रदान किया जहां पहुँच कर उसे आशा थी कि भाले का डण्डा बनाने के लिये कोई न कोई उपयुक्त लकड़ी धरती के सीने पर उगी हुई अवश्य मिल जायगी। चकमक पत्थर से आग जला कर वह उस लकड़ी की नोक बना लेगा ताकि आवश्यकता पड़ने पर वह अपनी और अपने सहयात्री की सुरक्षा कर सके।

ऊपर की ओर दोनों खोजी आगे बढ़ते गये। यद्यपि वे नीचे की धरती को छोड़ ऊँची बेहूदी पहाड़ियों पर चढ़ चुके थे जो किनारे के समानान्तर थीं तो भी अभी तक न तो वे सीधे उस जंगल तक पहुँच सके जिसकी काकू को तलाश थी और न ही उन्हें किसी बहुमूल्य धातु का ही कोई चिह्न मिल सका जिससे वह भाले की नोक, कुल्हाड़ा, अथवा चाकू बना सके।

पहाड़ी के दूसरी ओर ढलान पर उन्होंने उतराई शुरू की। कभी-कभी उन्हें दर्रे के खुले भाग से नीचे की ओर घाटी में काफी दूर पर स्थित एक घने जंगल की झलक मिल जाती थी। काकू ने अपने चरण उसी ओर मोड़ दिये। शायद वहाँ उसको मनोवांछित लकड़ी उसे मिल जाये। अन्त में वे पहाड़ी के अन्तिम ढलान पर पहुँचे जो दो सौ फीट की कठिन उतराई के उपरान्त

धरती की ओर बहुत हल्का ढलवाँ था। नीचे करीब-करीब चट्टान के आधार से मिला, जंगल फैला हुआ था।

एक क्षण वे दोनों उस अपरिचित दृश्य को खड़े देखते रहे— एक घना जंगल जो पठार के कंधे की झालर मालूम पड़ता था। दूर तक दृष्टि फेंकने पर एक मील या उससे कुछ अधिक दूरी तक फैली अदृश्य घाटी के अन्दर उन्होंने अपने को खड़े हुए पाया, जिसके ऊपर हल्का कोहरा छाया हुआ था। इस सब के पीछे सुदूर स्थित पहाड़ियों की धुंधली छवि दृष्टिगोचर हो रही थी। उनकी नुकीली चोटियां उस कोहरे में तैरती हुई प्रतीत हो रही थी, जिसने उनके आधारों को अपने आवरण में ढका हुआ था।

"हमें नीचे उतरना चाहिये," काकू ने कहा, और अपने कदम उठाता हुआ जंगल के छोर की ओर बढ़ चला।

भय के कुछ भावों से गीगा ने उसको पीछे की ओर खींचा।

"तुम नीचे गिर पड़ोगे," वह चिल्लाई। "हमें कोई सुगम सा मार्ग तलाश कर लेना चाहिये।"

काकू ने उसकी ओर देखा और हँस पड़ा।

'इससे अधिक सुगम और क्या हो सकता है?" उसने पूछा।

गीगा ने छोर के ऊपर झांका। उसने पथरीली दीवार देखी, जो स्थान-स्थान पर लुढ़कने वाले पत्थरों से भंग हो गई थी। जगह-जगह पर पत्थर पड़े हुए थे, जो पैर की ठोकर लगते ही नीचे लुढ़कने के लिये तैयार थे। कोई भी असावधान कदम उन्हे लिये-दिये पत्थरो के साथ लुढ़कता हुआ मौत की विभीषिका का दिग्दर्शन करा देगा— जंगल तक पहुँचने का ऐसा दुर्गम मार्ग तो केवल कोई मूर्ख ही चुन सकता है। काकू ने देखा कि गीगा अपने इस निरीक्षण पर, कठिनाई से सुरक्षा के लिये आश्वस्त की जा सकती है।

"आओ मेरे साथ," वह बोला, "कोई खतरा नहीं है।"

गीगा ने उसकी ओर उसकी हिम्मत एवं शूरता के प्रति प्रशंसा के भाव से

देखा— अपने शत्रु की एक ऐसी प्रशंसा जिसके विषय में उसे सोचना भी नहीं चाहिये था। वह अपनी टांगों को नीचे के गहरे गड्ढे में लटका कर चट्टान के किनारे पर बैठ गई। काकू ऊपर पहुँचा और उसकी बाँह को पकड़ लिया। फिर उसे खींचकर अपने समीप ले आया। वह वहाँ कैसे खड़ा हुआ था, गीगा इसका तनिक भी अनुमान नहीं लगा सकी। किन्तु फिर भी जब काकू ने उसे नीचे उतरने में सहारा दिया तो उसके हाथों की मज़बूत पकड़ तथा रास्ते के वे पत्थर जिनके सहारे नीचे उतरा जा रहा था उसे सुगमता का एक चमत्कार दिखाई दिये। नीचे तलहटी में पहुँचने से पूर्व ही गीगा का भय खत्म हो चुका था और वह स्वयं भी अब उभरे हुये पत्थरों एवं सहारों को तलाश करने लगी थी जिससे नीचे उतरने में दोनों का मार्ग अत्यन्त सुगम बन चला था। जब वे दोनों तलहटी में उगे गहन जंगल के बीच में सुरक्षित जा खड़े हुए तो गीगा ने अपने शत्रु पर अपनी आंखों में छिपे भावों से प्रशंसात्मक दृष्टिपात किया। दिल ही दिल में उसने उसकी तुलना नौका-निर्माताओं की जाति के युवकों घूर और सीसू आदि से की। उस सुन्दर नर की तुलना में कोई भी उसके आगे नहीं ठहर सका।

"जो हमारा पीछा कर रहे थे वे यहाँ आकर रुक जायेंगे", वह बोली। "जहाँ तक मेरी नजर जाती है चट्टान से उतरने का कोई भी सुगम मार्ग मुझे नजर नहीं आ रहा है।" और फिर उसने चट्टानी प्रदेश के दायें-बायें देखा।

"अरे मैं तो भूल ही गया था कि कोई हमारा पीछा भी कर रहा है," काकू ने कहा। "ज़रा मुझे यहाँ एक भाला और कुल्हाड़ा बनाने के योग्य सामग्री मिल जाय तब उन्हें आने दो। नानू का बेटा काकू उनका स्वागत करेगा।"

चट्टान की तलहटी में पड़े पत्थर के टुकड़ों को पार कर वे घास से भरे खुले मैदान में पहुँच गये जो जंगल के छोर पर पहुँच कर समाप्त हो जाता था। जब वे जंगल को पार करते हुये उसके मध्य में पहुँचे तो उन्हें किसी बड़े एवं विशाल शरीर के घर्षण की आवाज़ अपने से कुछ दूर से आती हुई सुनाई पड़ी। जैसे ही वे रुके उन्हें सामने के पेड़ों के बीच से झाँकता हुआ एक जंगली

साँड का खूंखार सिर दिखाई दिया। इसके पश्चात् अनेक सिर भांकते हुए दिखाई पड़ते गये। जैसे ही उन जानवरों ने मानव-युगल को देखा, वे रुक गये। बैलों ने डकराना शुरू कर दिया, गायें अपने नरो के पीछे खड़ी हो अपनी मोटी मोटी आँखों से झाँकती रहीं।

सामने गोश्त था और नारी के केवल एक चाकू से उसे मारना पड़ेगा। *काकू ने गीगा का चाकू निकाल लिया।*

"चट्टान पर वापिस चली जाओ," वह बोला, "इससे पहले कि वे आक्रमण *करें। मैं एक छोटी सी बछिया मार कर लाता हूँ।"*

काकू की आज्ञा के अनुसार जैसे ही गीगा पीछे घूमने वाली थी और काकू उन जानवरों को दाईं ओर से घेरने वाला था, उसी समय सांडो की दूसरी ओर से निकलते हुए अनेक मनुष्य दिखाई पड़े। वे उन्ही जानवरों की खाल पहने हुए थे, जो उनके निकट खड़े थे और भाले कुल्हाडो आदि से भली प्रकार सुसज्जित थे। काकू और गीगा को देखते ही वे जोर से चिल्लाये और झपट कर उन दोनों की ओर बढ़े। निहत्था काकू इस समय ईंट का जवाब पत्थर से देने की निरर्थकता समझता था। लड़ाई की उपेक्षा कर उसने गीगा का हाथ पकड लिया और उसे अपने साथ खीचता हुआ तेजी से चट्टान की ओर उल्टा लौट पड़ा। उनके अत्यन्त निकट पीछे पीछे आक्रमणकारी प्रसन्नता के अट्टहास एव विजय की अमानुषिक हुंकार भरते हुए भागे चले आ रहे थे। उन्हे तो केवल अपने आखेट से काम था। चट्टान उन दोनो के मार्ग में बाधा बन खड़ी हो जायगी। और फिर दीवार की ओर पीठ किये हुए पुरुष का तत्काल खून कर दिया जायगा और स्त्री को बन्दी बना लिया जायगा।

किन्तु ये लोग चट्टानों के निवासी नही थे। वे काकू की अभ्यस्तता से किंचित् भी परिचित नही थे। अन्यथा उनकी गति में शिथिलता नही आने पाती और न ही वे दायें अथवा बायें अजनबियों को बन्दी बनाने के लिये फैलते। काकू और गीगा चट्टान की तलहटी की उवड-खावड़ धरती पर दौड़ते हुए चट्टान के ठीक नीचे पहुँच गये जहा उन आक्रमणकारियों की धारणा के अनु-

सार उन्हें रुक जाना चाहिये था। काकू पत्थरों की ऊंची दीवार को एकदम फाँद गया और गीगा को भी अपने साथ पकड़ कर खींच लिया। उसी समय ग्वाले क्रोध और पराजय से एकदम ज़ोर का चीत्कार कर उठे। किसी ने ऐसी चीज़ कब देखी थी। यह असम्भव था। तो भी वे अपनी ही आँखों के सम्मुख एक मनुष्य देख रहे थे जो औरत को अपने कंधों पर लादे दुर्गम एवं अविजित चढ़ाई पर चढ़े चला जा रहा था।

पुनः स्फूर्ति के साथ ग्वाले सीधे चट्टान के आधार की ओर लपके किन्तु उनके वहां पहुँचने तक काकू और गीगा उनके हाथों की पहुँच से बहुत दूर निकल चुके थे। एक क्षण के लिये घूम कर काकू ने देखा कि वे अभी तक शस्त्रों की पहुंच के बाहर नहीं हो पाये हैं। उसने अपना दायाँ हाथ आगे बढ़ा कर पत्थर का एक छोटा टुकड़ा उठा लिया और ताक कर सब से निकटवर्ती भालेवाले के दे मारा। पत्थर का टुकड़ा अपने लक्ष्य के मस्तक पर पूरी शक्ति से जाकर लगा और उसका सिर फट गया। वह गतिहीन हो एक ओर लुढ़क गया।

तब काकू पुनः ऊपर की ओर चढ़ने लगा और इससे पहले कि ग्वाले अपना होश संभाल पाते काकू ने गीगा को खींचकर भालों की पहुँच से भी बाहर कर लिया। स्त्री को अपने निकट एक छोटे से मज़बूत पत्थर पर बिठाकर वह शेष पीछा करने वालों को पत्थर मार मार कर रोकने लगा। उसके ठीक समय पर भली भांति लक्ष्य बाँध कर फेंके गये पत्थरों ने उन ग्वालों की प्रगति को रोक दिया और उन्हें पीछे की ओर सुरक्षित स्थान में लौटने के लिये मजबूर कर दिया।

शत्रु ने तत्पश्चात् निकल भागने वालों का फिर पीछा करने का प्रयत्न नहीं किया। यह इस बात का प्रमाण था कि गीगा के भांति वे भी पर्वतारोही नहीं थे। काकू ने उन्हें आश्चर्य-सागर में गोते लगाते हुए छोड़ दिया। यदि उसके पास एक कुल्हाड़ा होता, तो वह नीचे उतर कर निश्चय ही उन लोगों के दांत खट्टे कर देता।

काकू के अत्यन्त निकट बैठी हुई गीगा इस वीरता पर आश्चर्य-स्तब्ध थी। और उसे अधिक आश्चर्य तो इस बात पर हो रहा था कि उसके इस शत्रु ने उसे बचाने के लिये अत्यधिक जोखम उठाई थी, क्योंकि चट्टान की तली में उन क्षणों में काकू स्पष्टतः यह भूल गया था कि औरत उसकी अपनी जाति की नहीं है और उसके समान चढ़ाई करने की अभ्यस्त नहीं है। इस बात का पता लगाने के पूर्व कि ऊपर चढ़ने के लिये गीगा नीचे उपयुक्त सहारा तलाश कर रही है वह नीचे उतरा और उसे अपने साथ ऊपर चढ़ा कर ले गया।

औरत आँख की कनखियों से चोरी-चोरी दैत्य के सुदृढ़ एवं सुगठित शरीर को घूरे चली जा रही थी। उसे आभास हुआ कि उसके विचार एक अजीब परेशानी से भरते चले जा रहे हैं। काकू अब उसके लिये शत्रु नहीं रह गया था। वह उसका बचाव कर रहा था और अब वह अपनी सुरक्षा का विश्वास काकू पर उससे कहीं अधिक करने लगी थी जिसके लिये वह सदैव धूर से आशा किया करती थी। वह जानती थी कि काकू उसके लिये सब कुछ करेगा—वह अब भोजन के साथ-साथ सुरक्षा के लिये भी उसी पर निर्भर थी, जिसके लिये एक स्त्री को अपने सहवासी पर निर्भर रहना चाहिये। उसका सहवासी—उसने पुनः लज्जित हो चोरी से काकू की ओर हसरत भरी नज़र से दृष्टिपात किया। काश वह उसका सहवासी बन सकता! और क्यों नहीं? वे इस संसार में अब अकेले थे और निस्सन्देह हमेशा के लिये अपनी जाति के लोगों से बिछड़ गये थे। अकस्मात् ही गीगा यह अनुमान कर बैठी। उसे आशा बंध गई कि अब उन्हें हमेशा ही ऐसे रहना पड़ेगा। वह सोचने लगी कि इस समय काकू के मस्तिष्क में क्या हलचल मची हुई होगी।

प्रत्यक्ष रूप से पुरुष सम्पूर्णतः अपने नीचे खड़े हुये जर्मनियों की पराजय की खुशी में मग्न था, किन्तु तो भी उसका सचेत मस्तिष्क भाग निकलने की योजना बनाने में रत था। और क्यों? क्या केवल इसी लिये कि वह अपनी मातृभूमि और अपनी जाति के लोगों के दर्शन करना चाहता था? इसके विपरीत, काकू इस किनारे पर हमेशा के लिये अधिक प्रसन्न होकर रह सकता था,

सार उन्हें रुक जाना चाहिये था। काकू पत्थरों की ऊंची दीवार को एकदम फाँद गया और गीगा को भी अपने साथ पकड़ कर खींच लिया। उसी समय ग्वाले क्रोध और पराजय से एकदम ज़ोर का चीत्कार कर उठे। किसी ने ऐसी चीज़ कब देखी थी। यह असम्भव था। तो भी वे अपनी ही आँखों के सम्मुख एक मनुष्य देख रहे थे जो औरत को अपने कंधों पर लादे दुर्गम एवं अविजित चढ़ाई पर चढ़े चला जा रहा था।

पुनः स्फूर्ति के साथ ग्वाले सीधे चट्टान के आधार की ओर लपके किन्तु उनके वहां पहुँचने तक काकू और गीगा उनके हाथों की पहुँच से बहुत दूर निकल चुके थे। एक क्षण के लिये घूम कर काकू ने देखा कि वे अभी तक शस्त्रों की पहुंच के बाहर नहीं हो पाये हैं। उसने अपना दायाँ हाथ आगे बढ़ा कर पत्थर का एक छोटा टुकड़ा उठा लिया और ताक कर सब से निकटवर्ती भालेवाले के दे मारा। पत्थर का टुकड़ा अपने लक्ष्य के मस्तक पर पूरी शक्ति से जाकर लगा और उसका सिर फट गया। वह गतिहीन हो एक ओर लुढ़क गया।

तब काकू पुनः ऊपर की ओर चढ़ने लगा और इससे पहले कि ग्वाले अपना होश संभाल पाते काकू ने गीगा को खींचकर भालों की पहुँच से भी बाहर कर लिया। स्त्री को अपने निकट एक छोटे से मज़बूत पत्थर पर बिठाकर वह शेष पीछा करने वालों को पत्थर मार मार कर रोकने लगा। उसके ठीक समय पर भली भांति लक्ष्य बाँध कर फेंके गये पत्थरों ने उन ग्वालों की प्रगति को रोक दिया और उन्हें पीछे की ओर सुरक्षित स्थान में लौटने के लिये मजबूर कर दिया।

शत्रु ने तत्पश्चात् निकल भागने वालों का फिर पीछा करने का प्रयत्न नहीं किया। यह इस बात का प्रमाण था कि गीगा के भांति वे भी पर्वतारोही नहीं थे। काकू ने उन्हें आश्चर्य-सागर में गोते लगाते हुए छोड़ दिया। यदि उसके पास एक कुल्हाड़ा होता, तो वह नीचे उतर कर निश्चय ही उन लोगों के दांत खट्टे कर देता।

काकू के अत्यन्त निकट बैठी हुई गीगा इस वीरता पर आश्चर्य-स्तब्ध थी। और उसे अधिक आश्चर्य तो इस बात पर हो रहा था कि उसके इस शत्रु ने उसे बचाने के लिये अत्यधिक जोखम उठाई थी, क्योंकि चट्टान की तली में उन क्षणों में काकू स्पष्टतः यह भूल गया था कि औरत उसकी अपनी जाति की नहीं है और उसके समान चढ़ाई करने की अभ्यस्त नहीं है। इस बात का पता लगाने के पूर्व कि ऊपर चढ़ने के लिये गीगा नीचे उपयुक्त सहारा तलाश कर रही है वह नीचे उतरा और उसे अपने साथ ऊपर चढ़ा कर ले गया।

औरत आँख की कनखियों से चोरी-चोरी दैत्य के सुदृढ़ एवं सुगठित शरीर को घूरे चली जा रही थी। उसे आभास हुआ कि उसके विचार एक अजीब परेशानी से भरते चले जा रहे हैं। काकू अब उसके लिये शत्रु नहीं रह गया था। वह उसका बचाव कर रहा था और अब वह अपनी सुरक्षा का विश्वास काकू पर उससे कहीं अधिक करने लगी थी जिसके लिये वह सदैव धूर से आशा किया करती थी। वह जानती थी कि काकू उसके लिये सब कुछ करेगा—वह अब भोजन के साथ-साथ सुरक्षा के लिये भी उसी पर निर्भर थी, जिसके लिये एक स्त्री को अपने सहवासी पर निर्भर रहना चाहिये। उसका सहवासी—उसने पुनः लज्जित हो चोरी से काकू की ओर हसरत भरी नज़र से दृष्टिपात किया। काश वह उसका सहवासी बन सकता! और क्यों नहीं? वे इस ससार में अब अकेले थे और निस्सन्देह हमेशा के लिये अपनी जाति के लोगो से बिछड़ गये थे। अकस्मात् ही गीगा यह अनुमान कर बैठी। उसे आशा बंध गई कि अब उन्हें हमेशा ही ऐसे रहना पड़ेगा। वह सोचने लगी कि इस समय काकू के मस्तिष्क में क्या हलचल मची हुई होगी।

प्रत्यक्ष रूप से पुरुष सम्पूर्णतः अपने नीचे खड़े हुये जंगलियों की पराजय की खुशी में मग्न था, किन्तु तो भी उसका सचेत मस्तिष्क भाग निकलने की योजना बनाने में रत था। और क्यों? क्या केवल इसी लिये कि वह अपनी मातृभूमि और अपनी जाति के लोगों के दर्शन करना चाहता था? इसके विपरीत, काकू इस किनारे पर हमेशा के लिये अधिक प्रसन्न होकर रह सकता था,

यदि वहाँ मीमा के बजाय कोई अन्य उसके साथ होता। वह केवल मातुल को ही अपना सब कुछ समझता था, कोई अन्य स्त्री उसके विचारों में नहीं उभरी थी, और भाग निकलने की उसकी योजना केवल अपनी धरती पर पहुँच जाने और वहां से पुनः भू की पुत्री की तलाश में निकल पड़ने के लिये थी।

एक घण्टे तक ग्वाले चट्टान की तलहटी से शुरू होने वाले खुले मैदान में खड़े रहे, फिर परिणामहीन प्रतीक्षा से उकता कर अपने मवेशियों को एकत्र कर जंगल के मध्य में पहुँच, उसी दिशा में गायब हो गये, जिस ओर से वे निकल कर आये थे। उनके प्रस्थान के आधे घण्टे पश्चात् काकू उतर कर नीचे आया। चट्टान के मध्य में उसे एक गुहा मिल गई। मीमा को वहां वह यह कह कर छोड़ गया कि वह उसके लिये भोजन तलाश कर लाए, क्योंकि पीछा किये जाने पर वह मीमा के साथ होने की तुलना में अकेला अधिक सुगमता से बच निकल आ सकेगा।

कुछ समय की अनुपस्थिति के पश्चात् वह खाना और जल दोनों ही साथ कर लौटा। वह पानी उस मशक में लाया जो हमेशा उसकी पेटी के साथ लटकी रहती थी। उसकी नजर में कोई ग्वाला नहीं पड़ा और न ही उसे भाला तथा कुल्हाड़ा बनाने के लिये सामान मिल सका जिसकी उसे अत्यन्त आवश्यकता थी।

"मुझे एक सरल रास्ता सुझाई पड़ रहा है," जब वे दोनों गुहा में बैठ कर भोजन करने लगे, तब काकू ने मीमा से कहा। "गाय और सांड पालने वाले ग्वालों के पास भाले, कुल्हाड़े और चाकू थे। उनका पीछा करना अत्यन्त ही सरल होगा। फिर मैं उनके शस्त्रों को छीन कर अपना बना लूंगा। मीमा, तुम यहीं ठहरो, यहाँ तुम सुरक्षित हो। और काकू उन अजनबियों का पीछा करेगा। वह शीघ्र ही शस्त्रों को साथ लेकर लौटेगा और साथ में मोटी बछिया का नर्म नर्म मांस भी लेकर आयेगा। तब हम फिर शत्रुओं से निडर हो किनारे की ओर वापिस लौट जायेंगे तथा नाव को तलाश कर और उस पर सवार हो कर काकू के देश को चले जायेंगे। वहां तुम्हारा हार्दिक स्वागत होगा क्योंकि नानू मेरा

पिता सरदार है और जब वह यह सुनेगा कि तुमने मेरी जान बचाई थी, तब वह तुम्हें अत्यधिक सम्मान देगा।"

ऐसा कह काकू शीघ्रतापूर्वक चट्टान से नीचे उतर आया, और खुले घास से भरे मैदान को पार कर, अगले क्षण गीगा की आंखों के सामने से, जंगल के अंधकार में विलीन हो गया।

कुछ समय तक वह ग्वालों के पदचिन्हों का कोई भी संकेत नहीं पा सका, किन्तु अन्त में उसे वह स्थान मिल ही गया जहां से ग्वालों ने अपने ढोरों को एकत्र किया था और उन्हें जंगल की दूसरी दिशा में ले चले थे। काकू सचेत हो उन के पीछे बढ़ता गया। वह जंगली जन्तुओं और आदमी के आकस्मिक आक्रमण के प्रति अपनी प्रत्येक चेतना को जागरूक किये हुए था। प्रत्येक जीवित वस्तु उसके लिये शत्रु के अतिरिक्त कुछ नहीं थी। वह बीच-बीच में कुछ सुनने और हवा सूंघने के लिये रुक जाता था। दो बार रक्त के प्यासे शिकारी जानवरों के आगमन से विवश हो उसे पेड़ों पर चढ़ना पड़ा; किन्तु जब वे गुजर गये तो काकू नीचे उतर आया और पुनः पदचिन्हों का पीछा करने लगा।

पैरों की ठोकरों से बनी हुई बटिया उसे जंगल के सुदूरवर्ती छोर की ओर ले गई, और वहां काकू ने अपने नीचे इतना मनोरम एवं सुन्दर दृश्य देखा, जैसा उसे कभी स्वप्न में भी दृष्टिगोचर नहीं हुआ था। अस्ताचल की ओर बढ़ता हुआ सूर्य एक विस्तृत घाटी के अत्यधिक नीचे उतर आया था, उस घाटी में जो उसके पांव के नीचे फैली हुई थी, क्योंकि जंगल एक सुगम ढलान पर आकर समाप्त हो गया था, और वह ढलान धीरे धीरे नीचे उतर कर एक नीली झील की ओर चला गया था जो कुछ दूरी पर हरे चरागाहों में नीलम के समान चमक रही थी।

झील की सतह पर तैरती हुई भी कुछ झोपड़ियां दिखाई पड़ रही थीं। काकू को यह निश्चय था कि वह मनुष्य द्वारा ही बनाई हुई हैं यद्यपि उसने उन जैसी वस्तुओं को कभी देखा भी नहीं था और न स्वप्न में उनका विचार किया था। अपने बहलावे के लिये उसने उन्हें "झूठा" [illegible]

यदि वहाँ गीगा के बजाय कोई अन्य उसके साथ होता। वह केवल मातुल को ही अपना सब कुछ समझता था, कोई अन्य स्त्री उसके विचारों में नहीं उभरी थी, और भाग निकलने की उसकी योजना केवल अपनी धरती पर पहुँच जाने और वहां से पुनः भू की पुत्री की तलाश में निकल पड़ने के लिये थी।

एक घण्टे तक ग्वाले चट्टान की तलहटी से शुरू होने वाले खुले मैदान में खड़े रहे, फिर परिणामहीन प्रतीक्षा से उकता कर अपने मवेशियों को एकत्र कर जंगल के मध्य में पहुँच, उसी दिशा में ग़ायब हो गये, जिस ओर से वे निकल कर आये थे। उनके प्रस्थान के आधे घण्टे पश्चात् काकू उतर कर नीचे आया। चट्टान के मध्य में उसे एक गुहा मिल गई। गीगा को वहां वह यह कह कर छोड़ गया कि वह उसके लिये भोजन तलाश कर लाए, क्योंकि पीछा किये जाने पर वह गीगा के साथ होने की तुलना में अकेला अधिक सुगमता से बच निकल आ सकेगा।

कुछ समय की अनुपस्थिति के पश्चात् वह खाना और जल दोनों ही साथ लेकर लौटा। वह पानी उस मशक में लाया जो हमेशा उसकी पेटी के साथ लटकी रहती थी। उसकी नज़र में कोई ग्वाला नहीं पड़ा और न ही उसे भाला तथा कुल्हाड़ा बनाने के लिये सामान मिल सका जिसकी उसे अत्यन्त आवश्यकता थी।

"मुझे एक सरल रास्ता सुझाई पड़ रहा है," जब वे दोनों गुहा में बैठ कर भोजन करने लगे, तब काकू ने गीगा से कहा। "गाय और सांड पालने वाले ग्वालों के पास भाले, कुल्हाड़े और चाकू थे। उनका पीछा करना अत्यन्त ही सरल होगा। फिर मैं उनके शस्त्रों को छीन कर अपना बना लूंगा। गीगा, तुम यहीं ठहरो, यहां तुम सुरक्षित हो। और काकू उन अजनबियों का पीछा करेगा। वह शीघ्र ही शस्त्रों को साथ लेकर लौटेगा और साथ में मोटी बछिया का नर्म नर्म मांस भी लेकर आयेगा। तब हम फिर शत्रुओं से निडर हो किनारे की ओर वापिस लौट जायेंगे तथा नाव को तलाश कर और उस पर सवार हो कर काकू के देश को चले जायेंगे। वहां तुम्हारा हार्दिक स्वागत होगा क्योंकि नानू मेरा

पिता सरदार है और जब वह यह सुनेगा कि तुमने मेरी जान बचाई थी, तब वह तुम्हें अत्यधिक सम्मान देगा।"

ऐसा कह काकू शीघ्रतापूर्वक चट्टान से नीचे उतर आया, और खुले घास से भरे मैदान को पार कर, अगले क्षण गीगा की आंखों के सामने से, जंगल के अंधकार में विलीन हो गया।

कुछ समय तक वह ग्वालों के पदचिन्हों का कोई भी संकेत नहीं पा सका, किन्तु अन्त में उसे वह स्थान मिल ही गया जहां से ग्वालों ने अपने ढोरों को एकत्र किया था और उन्हें जंगल की दूसरी दिशा में ले चले थे। काकू सचेत हो उन के पीछे बढ़ता गया। वह जंगली जन्तुओं और आदमी के आकस्मिक आक्रमण के प्रति अपनी प्रत्येक चेतना को जागरूक किये हुए था। प्रत्येक जीवित वस्तु उसके लिये शत्रु के अतिरिक्त कुछ नहीं थी। वह बीच-बीच में कुछ सुनने और हवा सूंघने के लिये रुक जाता था। दो बार रक्त के प्यासे शिकारी जानवरों के आगमन से विवश हो उसे पेड़ों पर चढ़ना पड़ा; किन्तु जब वे गुज़र गये तो काकू नीचे उतर आया और पुनः पदचिन्हों का पीछा करने लगा।

पैरों की ठोकरों से बनी हुई पटिया उसे जंगल के सुदूरवर्ती छोर की ओर ले गई, और वहां काकू ने अपने नीचे इतना मनोरम एवं सुन्दर दृश्य देखा, जैसा उसे कभी स्वप्न में भी दृष्टिगोचर नहीं हुआ था। अस्ताचल की ओर बढ़ता हुआ सूर्य एक विस्तृत घाटी के अत्यधिक नीचे उतर आया था, उस घाटी में जो उसके पांव के नीचे फैली हुई थी, क्योंकि जंगल एक सुगम ढलान पर आकर समाप्त हो गया था, और वह ढलान धीरे धीरे नीचे उतर कर एक नीली झील की ओर चला गया था जो कुछ दूरी पर हरे चरागाहों में नीलम के समान चमक रही थी।

झील की सतह पर तैरती हुई सी कुछ आकृतियां दिखाई पड़ रही थी। काकू को यह निश्चय था कि वह मनुष्य द्वारा ही बनाई हुई हैं यद्यपि उसने उन जैसी वस्तुओं को कभी देखा भी नहीं था और न स्वप्न में उनका विचार किया था। अपने बहलावे के लिये उसने उन्हें "गुहाएं" समझा जैसा कि उसके

मस्तिष्क ने नौका-निर्माताओं की झोंपड़ियों को भी यही नाम दिया था क्योंकि काकू के लिये कोई भी मानवीय आबादी केवल "गुहा" में ही रहती थी। यह मनुष्यों के निवासस्थान ही हैं इसमें उसे कोई सन्देह नहीं रह गया जब उसने मानव आकृतियों को उन पथों पर से गुजरते देखा जो झील के तट को उन चीज़ों से मिला रहे थे। उन लम्बे पुलों पर वे अपने ढोरों को खदेड़ रहे थे। स्पष्टतः उन्हें रात भर के लिये रात्रि के जंगल और मैदान के हिंसक पशुओं का शिकार बनने से सुरक्षित रख रहे थे।

रात्रि का अंधकार व्याप्त होने तक काकू तैरने वाले गांव की हलचलों को बड़े मनोयोग से देखता रहा। फिर अंधकार की सुरक्षा में वह धीरे धीरे झील के किनारे की ओर बढ़ चला। उसने अपने और शत्रु के बीच में पड़ने वाले प्रत्येक पेड़ और झाड़ी एवं प्रत्येक चट्टान और खोखले का, अपने को छिपाने एवं अपनी प्रगति को गुप्त रखने के लिये, पूरा-पूरा लाभ उठाया। अन्त में वह झील के किनारे पर पहुँच नरकुल की गहन झाड़ियों में छिपकर लेट गया। अपनी आंखों के आगे से उन्हें हटा कर वह गांव की दशा का प्रत्येक दृष्टिकोण से, अपने आप को छिपाये हुए, भली भाँति निरीक्षण कर सकता था। चन्द्रमा विमल व्योम पर हँस उठा था तथा अपनी चमकीली किरणों को पानी पर प्रतिबिम्बित कर वैसा ही अनोखा एवं असाधारण मनोरम दृश्य उपस्थित कर रहा था जिसे काकू सन्ध्या में अस्त होते सूर्य द्वारा उत्पन्न किया देख चुका था। काकू ने देखा कि घर वास्तव में झील की सतह पर तैर नहीं रहे हैं। उसकी जागरूक दृष्टि ने शीघ्र ही पता लगा लिया कि लट्ठों के सिर पानी की सतह के अन्दर जाकर गायब हो गये हैं। समस्त आबादी उन्हीं लट्ठों पर बसी हुई है।

उसने पुरुषों, स्त्रियों और छोटे बच्चों को देखा जो खुले प्लेटफार्मों पर एकत्रित हो खेल कूद एवं मनोरंजन कर रहे थे। ऐसे प्लेटफार्म प्रायः प्रत्येक घर के आगे निकले हुए थे। इसके साथ साथ ही कुछ पुरुष उन पुलों पर खड़े हुये मनोरंजन कर रहे थे, जो घरों से किनारे तक के पानी को बांधे हुए थे। बहुत से घरों के आगे मिट्टी से बने छोटे छोटे चूल्हों में आग जल रही

थीं, जो आग को नीचे के फर्श की लकड़ी को जलाने से रोके हुए थे। काकू की नाक में मछली भुनने की स्वादिष्ट सुगन्ध प्रविष्ट हो रही थी, और उसके मुंह में पानी भर आया जब उसने देखा कि कुछ झील निवासी गायों की मांसल हड्डियों से गोश्त काट रहे हैं और हड्डियां चूस रहे हैं तथा अन्य मछलियों का गोश्त खाने में मलग्न हैं। वे अपने मुंह से हड्डियां निकाल नीचे झील के पानी में फेंकते जा रहे थे।

यद्यपि वह गोश्त के लिये भूखा था, तो भी उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति उस बालों वाले दैत्य के लम्बे भाले, भारी कुल्हाड़े और तेज चाकू पर गड़ी हुई थी जो निकटवर्ती पुल पर खड़ा हुआ पहरा दे रहा था। बार बार काकू की नजर उस पर जा जमती थी। उसने देखा कि झील निवासियों का सन्ध्या का भोजन निबट चुका है। चूसी हुई हड्डियाँ घरों के नीचे स्थित जलराशि में फेंकी जा चुकी हैं। गांव के निवासी अपने अपने घरों के आगे जलती हुई आगों के इर्द-गिर्द शोर मचाते हुये घेरा डाल बैठ चुके हैं। बच्चे प्लेटफार्मों के निकट पहले की भांति, पुनः किलकारियां भरने एवं कलाबाजियां लगाने में व्यस्त हो चुके थे। युवक एवं युवतियां गांव के अंधेरे कोनों में इधर-उधर घूम रहे थे, और कुछ धीरे-धीरे फुसफुसाते हुए पानी के ऊपर बने हुये छोटे छोटे रेलिंगों पर झुके हुए थे। ऊंची आवाज वाले बहादुर अपने बीते हुए वीरतापूर्ण कारनामों को हजारवीं बार व्याख्या सहित वर्णन कर रहे थे। युवा मातायें छोटे-छोटे घेरों में बैठी हुई थी और बार-बार सिर हिला कर गप्पें लड़ा रही थीं, जब कि छोटे बच्चे उनकी गोदों में पड़े दूध चूसने में मग्न थे। दन्त-हीन एवं श्वेत केशों वाली बुढ़ियाएँ किन्तु अभी तक हृष्ट-पुष्ट एवं स्फूर्तिवान (जो उस प्रारम्भिक काल में जीवन यापन के लिये एक आवश्यक एवं अनिवार्य नियम था, क्योंकि उन दिनों प्रकृति से पग-पग पर जूझना एवं प्रति क्षण सचेत रहना पड़ता था), बड़े बच्चों की देख भाल करने और घर की व्यवस्था को सुचारु बनाने में संलग्न थीं, जिसका भार उन्हीं के कन्धों पर था।

सन्ध्या का झुटपुटा अंधकार की काली चादर में समाता गया। बच्चे घास और खाल के बने अपने-अपने झोंपड़ों में चले गए। अगले आधे घण्टे तक

बड़े लोग आग के इर्द-गिर्द बैठे रहे, फिर दो-दो तीन-तीन कर वे लोग भी अपनी झोंपड़ियों के अन्दर प्रविष्ट हो निद्रा की सौम्यता के आनन्द में लीन हो गए। गाँव ने स्तब्धता की चादर ओढ़ ली। काकू अभी तक झील के किनारे नरकुल की झाड़ियों में छिपा हुआ, अपने निकट वाले पहरेदार को घूर रहा था। जब-तब पहरेदार अपना स्थान छोड़ कर आग की उन लपटों को अक्षुण्ण रखने के लिए आगे बढ़ आता था, जो पुल के मुहाने के निकट झील के किनारे पर प्रज्वलित हो रही थीं। उसे पार करने का साहस कोई भी हिंसक पशु नहीं कर सकता था, और न ही कोई नजरों से आये बिना उस पर से गुजर सकता था, क्योंकि लपटों की रोशनी से संकरे पुल का सिरा प्रभासित हो रहा था।

काकू इसी सोच में डूबा हुआ था कि संतरी की नजर से छिप कर वह किस प्रकार वहाँ पहुँच सकता है। आग को कूद कर पार करने से लपटें धधक उठेंगी, और लपटों की विकृति देखकर पहरेदार को चेतावनी मिल जाएगी। उसे चेतावनी मिलने का अर्थ है, सारे गाँव का जाग जाना। इस प्रकार काकू के उसके निकट पहुँचने तक गाँव की सम्पूर्ण आबादी जाग चुकी होगी।

पानी की सहायता से भी वहाँ पहुँचा जा सकता था। किन्तु वहाँ भी नजरों से छिप कर निकल जाने का कोई सुनहरा अवसर नहीं था, क्योंकि चन्द्रमा की रोशनी में शीशे के समान चमकती हुई झील की सतह पर तैर कर जाने वाले को गाँव से स्पष्ट रूप से देखा जा सकता था। पुल के साथ, एक ओर परछाईं अवश्य पड़ रही थी। वह वहाँ पहुँच कर, परछाईं के साथ-साथ आगे बढ़े, और फिर निकटवर्ती घर के आगे निकले प्लेटफार्म पर सन्तरी को आभास होने से पूर्व ही कि शत्रु उसके सिर पर आ चुका है, चढ़ जाए— यह एक राह हो सकती थी। लेकिन इसकी सम्भावना सौ में से एक थी। सो काकू कुछ भाग्यशाली परिस्थितियों के निर्माण की आशा में प्रतीक्षा करने लगा, जो उसकी समस्या को किसी हल की ओर पहुँचा सकें।

असल में वह विचित्र जलराशि में निहित असंख्य एवं अपरिचित खतरों

से मदमत्त या जो पानी में घात लगाये छिपे अनेक हिंस्र जन्तुओं से उत्पन्न हो रहा था। किन्तु पास में उत्पन्न हुए खतरे ने मनुष्यों के पूर्वज को किसी निश्चय पर पहुँचने के लिये बाध्य कर दिया— दो राहों में से चुनना एक निश्चित मृत्यु को लिये, दूसरी भी भयानक संकटपूर्ण नाग वाली।

उसके पीछे नरकुल में उठने वाली दबी टूटें पदचापों को सुनने वाले बाहू के समस्त कान थे। हवा उसके ऊपर से गुज़र रही थी, जहाँ वह उसकी उपस्थिति की सुगन्ध, इस भाग में घूमने वाले जीवों के लिये, अपने साथ ले जाकर अवश्य फैला रही होगी। अब विशाल हिंस्र पशु की घास पर पड़ने वाली पदचापें एकदम निःशब्द हो गई थीं और उसके पाँव अपने शिकार को निकट जान अत्यधिक सचेत हो चुके थे। किसी अनजान आज के मनुष्य के लिये जंगल के असंख्य स्वरों में— उ, शेर की भयंकर गरज, हाथियों के रंभाने, शिकार हो जाने वाले जन्तु की तीव्र चीखभरी पुकार, अनेक प्रकार की हुंकार, कीटों की टिटकारी, रेंगने वालों की फुंकार, हवा की लम्बी घास या पेड़ों में सिसकारी— हल्के पदचाप को पहचानना असम्भव था। पर बाहू के कान हमारे जैसे नहीं थे। उन्होंने कई आवाज पत्तों की ध्वनि में से एक को सचेत पदचापों में बदलते पकड़ लिया था। वह जान गया था कि जन्तु ने उसकी सुगन्ध पकड़ ली है, और वह अत्यधिक सचेत हो धीरे-धीरे सीधा किनारे पर बैठे मनुष्य की ओर बढ़ रहा है।

बाहू को अपने मस्तिष्क में उस हिंस्रक की आकृति का चित्र बनाने में आँखों की आवश्यकता नहीं पड़ी, इस कार्य के लिये उसके सचेत कान ही पर्याप्त थे। वह उस जन्तु के भारी, किन्तु निःशब्द कदमों को देख रहा था, नीचे झुका हुआ चौड़ा, विकराल मुँह, आगे निकले हुये कान, ऊपर की ओर उठी और मुड़ी हुई पूँछ। वह यह भी जानता था कि इन सबका उसके लिये क्या अर्थ है। दायें और बायें चलने के लिये कोई मार्ग नहीं था, और उसके सामने अपरिचित नीचे का पानी फैला हुआ था। वह एकदम निहत्था था, और उसकी ओर बढ़ने वाली विशाल बिल्ली एकदम उस पर झपट्टा मारने वाली थी।

काफ़ू ने सन्तरी की ओर देखा। वह अभी-अभी आग की लपटों को ऊँचा कर पुनः लौट अपने स्थान पर आकर खड़ा हुआ था। वह रेलिंग के ऊपर झुका हुआ नीचे फैली जलराशि में झांक रहा था। वह क्या चीज़ है? काफ़ू की आँखें अंधकार को चीरती हुई उस जंगले पर गड़ गई, जहाँ वह बहादुर खड़ा हुआ था। उसके ठीक पीछे एक दूसरी आकृति थी। ओह! एक स्त्री की आकृति!

पीछे की ओर मुड़-मुड़ कर देखती हुई, वह चोरी-चोरी सन्तरी की ओर बढ़ रही थी। तब ही हल्की ध्वनि हुई। सन्तरी घूमा; उस छाया को अपने इतने समीप आया देख, उसने अपनी बाँहें फैला दीं और नारी को कस कर उनके बन्धन में जकड़ लिया।

उसका चेहरा चौकीदार के कन्धों में छिप गया। चौकीदार का मुँह काफ़ू की ओर से घूम गया, और उसकी आँखें लाल भूरे बालों में छिप गई जो बन्धन से मुक्त हो, लगभग औरत की कमर तक, लटक रहे थे।

और तब विशाल हिंसक काफ़ू की पीठ पर झपटा।

१५

जिस क्षण वह ख़ूंख़्वार जन्तु काकू पर झपटा, उसी क्षण वह उछल कर झील में गोता लगा गया। पानी उथला था, दो या तीन फीट से अधिक गहरा नहीं था। फिर भी गुहा-निवासी पानी की सतह से लगा हुआ अन्दर ही अन्दर बाईं ओर रास्ता बनाता हुआ पुल की परछाईं की तरफ बढ़ चला। वह जानता था कि बड़ी बिल्ली झील में उतर कर उसका पीछा नहीं करेगी। अब उसके लिये सबसे भयानक ख़तरा झील के पानी की अपरिचित गहराई में निहित था। यद्यपि प्रति क्षण वह तेज़ दाँतों या चिकने शरीर के स्पर्श की आशा करता रहा, फिर भी उस पर कोई आक्रमण नहीं हुआ।

अन्त में, उसका सांस घुटने लगा। वह उलट गया और अपनी पीठ के सहारे उस समय तक तैरता रहा जब तक कि उसकी नाक और मुँह पानी की सतह से ऊपर नहीं निकल आये। पुनः एक लम्बे सास से अपने फेफड़ों को भर, उसने पानी में डुबकी लगाई और अपने लक्ष्य लट्ठे की दिशा में आगे बढ़ चला। अन्त में उसके हाथों की मज़बूत पकड़ में लट्ठे की खुरदरी सतह आ ही गई। फौरन ही वह लट्ठे पर चढ़ गया और जब उसने यह देखा कि वह पुल के नीचे पहरेदार एवं उसकी साथिन की नज़रों से एकदम सुरक्षित है, तो उसका हृदय खुशी से नाच उठा।

अपने पीछे किनारे पर वह छकाये गये पशु की क्रोध भरी शिकायतें सुन रहा था। उसे यह डर खाये जा रहा था कि यदि झील के पानी में कूदने की आवाज़ ने सन्तरी को सचेत कर कड़ी निगरानी पर तैयार कर दिया तो क्या होगा। कुछ समय तक वह सास रोके, ऊपर से आने वाली आवाज़ को सुनने लगा। अन्त में, उसके सशक्त कानों ने धीरे स्वरों में मुखरित होने वाली बातचीत को पकड़ लिया। बहुत अच्छा! वे अभी तक प्रेम-प्रदर्शन में व्यस्त

थे। उन्हें स्वप्न में भी इस बात का गुमान नहीं था कि उनका शत्रु इतनी निकट पहुँच चुका है।

काकू ने उनकी बातचीत में खलल नहीं डालना चाहा। औरत के होते हुए वह ऊपर चढ़ने की हिम्मत नहीं कर सका। एक घण्टे तक, कमर तक गहरे पानी में डूबे हुए वह प्रतीक्षा करता रहा। आखिर उसके कानों ने औरत के लौटते हुए कदमों की धीमी आवाज़ सुनी। वह उसकी घर पहुँचने तक प्रतीक्षा करता रहा, और फिर बिल्ली की भांति झपट कर सीधे खड़े हुए फिसलने लट्ठे पर ऊपर की ओर चढ़ने लगा जब तक की उसकी अंगुलियों ने पुल के फर्श के किनारे को कस कर नहीं पकड़ लिया। सावधानी के साथ उसने अपने को कुछ ऊपर उठाया ताकि उसकी आँखें पुल की ऊपरी सतह को भली भाँति देख सकें।

उससे बारह क़दम की दूरी पर सन्तरी धीरे-धीरे किनारे पर जलती हुई आग की ओर बढ़ रहा था। सन्तरी की पीठ काकू की ओर थी और अब तक वह किनारे और काकू के मध्य में पहुँच चुका था। इससे अधिक उपयुक्त अवसर और क्या हो सकता था?

गुहा-निवासी एकदम झपट कर प्लेटफार्म पर चढ़ गया, और अपने निःशब्द कदमों से सन्तरी पर आक्रमण करने उसकी ओर दौड़ा। सन्तरी लड़की के उस लट्ठे को हाथ में पकड़े हुए था, जिससे वह आग को प्रज्वलित रखने में सहायता देता था, और उस समय लकड़ी झोंकने के लिए झुका हुआ था, जब काकू ने उस पर यकायक ही आक्रमण किया। सताये हुए शेर की गति एवं शक्ति से काकू अपने शिकार की पीठ पर टूट पड़ा। उसके दोनों हाथों ने सहायता की पुकार मचाने के पूर्व ही सन्तरी के गले को कस कर भींच लिया, और पैने दांतों को उसने गले के पीछे की हड्डी के मांस में गड़ा दिया ताकि वह आसानी से उसकी इस पकड़ से निकल न सकें।

पीछे से हुए इस आक्रमण से घबराये सन्तरी ने अपने शत्रु की ओर रुख पलटने के लिये अनेक हाथ-पांव मारे। उसने अपने गले के इर्द-गिर्द कसी हुई

प्रगुतियों को ढीला करने के कई प्रयत्न किये, क्योंकि एक क्षण के लिये ही पकड़ ढीली हो जाने पर उसे सहायता के लिये चिल्लाने भर का समय मिल सकता था, किन्तु शिकञ्जे की भाँति हाथों की पकड़ ढीली नहीं पड़ सकी। तब शिकार ने अपना दायां हाथ चाकू निकालने के लिये बढ़ाया। काकू इसी की आशा कर रहा था, और इसी क्षण की प्रतीक्षा में था। उसी क्षण उस ने अपना दायां हाथ सन्तरी के गले से हटा लिया, और बिजली की तेजी के साथ उस हाथ का पीछा किया जो चाकू की मूठ को पकड़ने के लिये आगे बढ़ चुका था। इस प्रकार जब सन्तरी की अंगुलियों ने चाकू की मूठ को पकड़ा, उसी क्षण काकू की अंगुलियाँ भी सन्तरी की अगुलियों पर कस गईं।

चाकू दो हाथों की अतुल शक्ति के झटके के साथ फौरन पेटी से बाहर निकल आया। और तब शक्ति का परीक्षण आरम्भ हो गया, जो मुठभेड़ के परिणाम को निर्णीत करने वाला था। झील निवासी ने चाकू को पीछे की ओर अपने पीठ पर सवार मनुष्य के शरीर में भोंकना चाहा। काकू ने चाकू वाले हाथ को ऊपर और बाहर की ओर धकेलने का प्रयत्न किया। चाकू पीछे की ओर घूम गया। काकू ने इस रुख को बदलने का प्रयत्न नहीं किया— यह उसी दशा में था, जैसा कि उसका चाकू होना चाहिये था। धीरे-धीरे उसकी शक्तिशाली बाँहों ने अपने शत्रु की शक्ति पर विजय पा ली। अभी तक उसका दूसरा हाथ दूसरे मनुष्य की आवाज को घोटे हुए था। धीरे-धीरे, किन्तु निश्चितरूप से, काकू अपने शत्रु के चाकू वाले हाथ को ऊपर की ओर ले चला। अब वह छाती की ऊँचाई पर था, अब दूसरे के कंधों की ऊँचाई पर था, और हर समय बालों वाला दैत्य उसे गुहा-निवासी के शरीर में भोंक देने का प्रयत्न करता रहा।

जब चाकू सन्तरी के कंधे के समान्तर पहुँचा काकू धीरे-धीरे हाथ को बाईं ओर उस समय तक दबाता गया, जब तक कि उसका धारदार फल सीधा अपने मालिक के ही दिल के ऊपर नहीं हो गया। और तब, पूर्णतः आकस्मिक रूप से, काकू ने अपने प्रयत्नों को एकदम उलटा कर दिया और दो मनुष्यों

थे। उन्हें स्वप्न में भी इस बात का गुमान नहीं था कि उनका शत्रु इतनी निकट पहुँच चुका है।

काकू ने उनकी बातचीत में खलल नहीं डालना चाहा। औरत के होते हुए वह ऊपर चढ़ने की हिम्मत नहीं कर सका। एक घण्टे तक, कमर तक गहरे पानी में डूबे हुए वह प्रतीक्षा करता रहा। आखिर उसके कानों ने औरत के लौटते हुए कदमों की धीमी आवाज़ सुनी। वह उसकी घर पहुँचने तक प्रतीक्षा करता रहा, और फिर बिल्ली की भांति झपट कर सीधे खड़े हुए फिसलने लट्ठे पर ऊपर की ओर चढ़ने लगा जब तक की उसकी अंगुलियों ने पुल के फर्श के किनारे को कस कर नहीं पकड़ लिया। सावधानी के साथ उसने अपने को कुछ ऊपर उठाया ताकि उसकी आँखें पुल की ऊपरी सतह को भली भांति देख सकें।

उससे बारह क़दम की दूरी पर सन्तरी धीरे-धीरे किनारे पर जलती हुई आग की ओर बढ़ रहा था। सन्तरी की पीठ काकू की ओर थी और अब तक वह किनारे और काकू के मध्य में पहुँच चुका था। इससे अधिक उपयुक्त अवसर और क्या हो सकता था?

गुहा-निवासी एकदम झपट कर प्लेटफार्म पर चढ़ गया, और अपने निःशब्द कदमों से सन्तरी पर आक्रमण करने उसकी ओर दौड़ा। सन्तरी लड़की के उस लट्ठे को हाथ में पकड़े हुए था, जिससे वह आग को प्रज्वलित रखने में सहायता देता था, और उस समय लकड़ी झोंकने के लिए झुका हुआ था, जब काकू ने उस पर यकायक ही आक्रमण किया। सताये हुए शेर की गति एवं शक्ति से काकू अपने शिकार की पीठ पर टूट पड़ा। उसके दोनों हाथों ने सहायता की पुकार मचाने के पूर्व ही सन्तरी के गले को कस कर भींच लिया, और पैने दांतों को उसने गले के पीछे की हड्डी के मांस में गड़ा दिया ताकि वह आसानी से उसकी इस पकड़ से निकल न सकें।

पीछे से हुए इस आक्रमण से घबराये सन्तरी ने अपने शत्रु की ओर रुख पलटने के लिये अनेक हाथ-पांव मारे। उसने अपने गले के इर्द-गिर्द कसी हुई

अंगुलियों को ढीला करने के कई प्रयत्न किये, क्योंकि एक क्षण के लिये ही पकड़ ढीली हो जाने पर उसे सहायता के लिये चिल्लाने भर का समय मिल सकता था, किन्तु शिकञ्जे की भाँति हाथों की पकड़ ढीली नहीं पड़ सकी। तब शिकार ने अपना दायां हाथ चाकू निकालने के लिये बढ़ाया। काकू इसी की आशा कर रहा था, और इसी क्षण की प्रतीक्षा में था। उसी क्षण उस ने अपना दाया हाथ सन्तरी के गले से हटा लिया, और बिजली की तेजी के साथ उस हाथ का पीछा किया जो चाकू की मूठ को पकड़ने के लिये आगे बढ़ चुका था। इस प्रकार जब सन्तरी की अंगुलियों ने चाकू की मूठ को पकड़ा, उसी क्षण काकू की अंगुलियाँ भी सन्तरी की अंगुलियों पर कस गईं।

चाकू दो हाथों की अतुल शक्ति के झटके के साथ फौरन पेटी से बाहर निकल आया। और तब शक्ति का परीक्षण आरम्भ हो गया, जो मुठभेड़ के परिणाम को निर्णीत करने वाला था। झील निवासी ने चाकू को पीछे की ओर अपने पीठ पर सवार मनुष्य के शरीर में भोंकना चाहा। काकू ने चाकू वाले हाथ को ऊपर और बाहर की ओर धकेलने का प्रयत्न किया। चाकू पीछे की ओर घूम गया। काकू ने इस रुख को बदलने का प्रयत्न नहीं किया— वह उसी दशा में था, जैसा कि उसका चाकू होना चाहिये था। धीरे-धीरे उसकी शक्तिशाली बाँहों ने अपने शत्रु की शक्ति पर विजय पा ली। अभी तक उसका दूसरा हाथ दूसरे मनुष्य की आवाज को घोटे हुए था। धीरे-धीरे, किन्तु निश्चित रूप से, काकू अपने शत्रु के चाकू वाले हाथ को ऊपर की ओर ले चला। अब वह छाती की ऊँचाई पर था, अब दूसरे के कंधों की ऊँचाई पर था, और हर समय बालों वाला दैत्य उसे गुहा-निवासी के शरीर में भोंक देने का प्रयत्न करता रहा।

जब चाकू सन्तरी के कंधे के समान्तर पहुँचा काकू धीरे-धीरे हाथ को बाईं ओर उस समय तक दबाता गया, जब तक कि उसका धारदार फल सीधा अपने मालिक के ही दिल के ऊपर नहीं हो गया। और तब, पूर्णतः आकस्मिक रूप से, काकू ने अपने प्रयत्नों को एकदम उलटा कर दिया और दो मनुष्यों की

सम्मिलित शक्ति एवं काकू की पथ-दिग्दर्शिता के साथ, बिजली की गति से चाकू झील-निवासी के हृदय को फोड़ता हुआ निकल गया।

मनुष्य चुपचाप काकू के शरीर का समस्त भार लिये नीचे फर्श पर गिर गया। वहाँ उसने अन्तिम प्रयास किया और फिर हमेशा के लिये शान्त हो गया। काकू ने अधिक समय प्रतीक्षा में व्यर्थ ही गंवाना ठीक नहीं समझा। उसने झट उन शस्त्रों को अपने शरीर में लटका लिया, जो उसके शत्रु के शव के साथ लटके हुए थे, और फिर, तूफान की खामोशी एवं तीव्रता के साथ जंगल की ओर अंधकार में विलीन हो गया।

१६

गीगा अकेली ही गुहा में बैठी विचारों में डूबी हुई थी। कभी-कभी उस का मन अपने मृत शिशु को याद आने पर घृणा से भर उठता था, और फिर उसी क्षण उसका क्रोध धूर के अन्याय एवं अत्याचार का ख्याल कर एकदम पूर्णरूपेण भड़क उठता था। उसकी अंगुलियाँ बार-बार उस अन्यायी के गले के इर्द-गिर्द कसने के लिये मचल उठती थी। वह बार-बार उसकी तुलना काशू से कर रही थी और तुलना में प्रत्येक बार वह अजनबी के प्रति उदित हुए अपने नवीन भावों की तीव्रता का अनुभव कर उठती थी। वह इस अजातीय बहादुर को बुरी तरह प्यार करने लगी थी। वह बार-बार उन अनेक घटनाओं को अपनी याद में सजो रही थी, जिनमें उसने उसके प्रति दयालुता दिखाई थी और उन परिस्थितियों में साहस बँधाया था जिनकी वह अभ्यस्त नहीं थी। उसकी जाति के लोगों के मध्य पुरुष के लिये ऐसी बातें करना उसकी कमज़ोरी का परिचायक समझा जाता था। किन्तु गीगा जान चुकी थी कि इस शुभ एवं परोपकारी कार्य के पीछे कमज़ोरी का कोई कलंक निहित नहीं था। रात्रि के अंधकार में बहुत देर तक वह अपनी आँखें और कानों को गड़ाये बैठी रही। अन्त में जब वह लौट कर नहीं आया तो बुरे विचारों ने उसे घेरना शुरू कर दिया। वह जंगलियों के देश में निहत्था ही अपने शत्रुओं से हथियार छीन कर लाने के लिये गया है। हो सकता है कि वह मार डाला गया हो। यद्यपि गीगा को इस बात का विश्वास नहीं हो पा रहा था कि उस सशक्त एवं सुदृढ़ शरीर को कोई इतनी आसानी से मिटा सकता है।

सुबह होने पर वह बिलकुल निराश हो उठी। प्रतीक्षा में गुहा-

सम्मिलित शक्ति एवं काकू की पथ-दिग्दर्शिता के साथ, बिजली की गति से चाकू झील-निवासी के हृदय को फोड़ता हुआ निकल गया।

मनुष्य चुपचाप काकू के शरीर का समस्त भार लिये नीचे फर्श पर गिर गया। वहां उसने अन्तिम प्रयास किया और फिर हमेशा के लिये शान्त हो गया। काकू ने अधिक समय प्रतीक्षा में व्यर्थ ही गंवाना ठीक नहीं समझा। उसने झट उन शस्त्रों को अपने शरीर में लटका लिया, जो उसके शत्रु के शव के साथ लटके हुए थे, और फिर, तूफान की खामोशी एवं तीव्रता के साथ, जंगल की ओर अंधकार में विलीन हो गया।

हूँ, क्योंकि मैं अत्यधिक क्लान्त हो चुका हूँ। जब तक मैं सोता रहूँ, तुम देख-भाल रखना।"

गुहा के अन्दर पहुँच कर गौरा फिर अपने नवोदित प्रेम में बह गई और हाव भाव से उसे प्रकट करने लगी। लेकिन उसकी बाँहें गले में पड़ी होने पर भी काक्रू केवल मातुल का सुन्दर मुखड़ा अपने सामने देख रहा था। वह कहाँ है?

चक्कर लगाते-लगाते निढाल हो वह घास पर, जिसे काकू उसके लिये एकत्रित कर गया था, गिर पड़ी और शीघ्र ही स्वप्नचरी बन गई। पौ फटने के कई घण्टे पश्चात् उसकी नींद एक आवाज़ से टूटी— यह आवाज़ चट्टान के साथ भाले की रगड़ से उत्पन्न हो रही थी जो ऊपर चढ़ने वाले आदमी के आगमन की पूर्व सूचना दे रही थी।

जैसे ही गीगा ने देखा कि वह कौन है, वैसे ही उसके मुँह से धीमी किन्तु प्रसन्नता भरी चीख निकल पड़ी, जो शायद बहादुर के जीत कर आने की बधाई स्वरूप थी। काकू ने मुस्कराते हुए ऊपर देखा और अपने साथ लाये हुये शस्त्रों को प्रदर्शित किया। उसने औरत के चेहरे के बदले हुए भावों को देखा— एक मुस्कराहट जो उसकी भावनाओं को दीप्तिमान कर रही थी। इसके पूर्व उसने गीगा की आकृति को परखने में कभी समय नहीं लगाया था। अब यह उसके लिये बड़ा आश्चर्य लगा— आश्चर्य क्या एक झटका— कि उसके साथ की नारी युवा एवं देखने-सुनने में सुन्दर है। किन्तु यह आश्चर्य उसकी तुलना में कुछ भी नहीं था, जो उसके एकदम बाद हुआ। जैसे ही गीगा उसके निकट पहुँची, उसने अपनी बाहें काकू के गले में डाल दीं, और इससे पूर्व की वह उसकी भावना को समझ पाता, उसने अपने जलते हुए गर्म होंठ उसके होंठों पर रख दिये।

काकू ने हंसते हुये अपने आप को उसके बन्धन से मुक्त किया। वह गीगा से प्रेम नहीं करता था— उसका हृदय पूर्णतः मातुल का था। और उसका मस्तिष्क अपने देश लौट चलने के लिये योजना बनाने में पूर्णतः व्यस्त था, जहाँ पहुँच कर वह उस मातुल की तलाश को जारी रखेगा जो उसकी सहवासिनी बनने वाली थी। हँसते हुये अपनी बांह से गीगा को ढलवां चट्टान के उपर सहारा देते हुए उसने अपने कदम गुहा की ओर मोड़ दिये।

"मैं कुछ भोजन लेकर आया हूँ" वह बोला, "और जब मैं सो चुकूँगा, तब हम लोग समुद्र की ओर लौट चलेंगे। रास्ते में मैं शिकार कर लूँगा, क्योंकि अब मेरे पास हथियार हैं। किन्तु इस बीच में मैं सो लेना अवश्य चाहता

हूँ, क्योंकि मैं अत्यधिक क्लान्त हो चुका हूँ। जब तक मैं सोता रहूँ, तुम देख-भाल रखना।"

गुहा के अन्दर पहुँच कर गीगा फिर अपने नवोदित प्रेम में बह गई और हाव भाव से उसे प्रकट करने लगी। लेकिन उसकी बाँहें गले में पड़ी होने पर भी काकू केवल मानुल का सुन्दर मुखड़ा अपने सामने देख रहा था। वह कहाँ है ?

१७

जब मातुल और सरदार नानू को इस बात का पता लगा कि नानू का पुत्र काकू नौका-निर्माताओं के गाँव में आग से घिरे लट्ठे के बीच बन्दी नहीं है, तो वे घूम कर विस्फारित नेत्रों से एक-दूसरे के चेहरों को देखने लगे। सरदार ने लट्ठे का निरीक्षण बड़े गौर से किया।

"यह जला हुआ नहीं है," वह बोला। "इसका मतलब है काकू जलकर राख नहीं हुआ है। और यहाँ," उसने लट्ठे के इर्द-गिर्द की धरती की ओर संकेत किया, "देखो। यहाँ वह रस्सियाँ पड़ी हैं, जो उसे बांधे हुए थीं।"

उसने उनमें से एक को निरीक्षण के लिये उठाया।

"इन्हें काटा गया है। हमारे आने के पूर्व कोई यहाँ पहुँच कर नानू के पुत्र काकू को स्वतन्त्र कर चुका था।"

"ऐसा करने वाला कौन हो सकता है? और वे लोग किस ओर चले गये हैं?" मातुल ने प्रश्न किया।

नानू ने अपना सिर हिला दिया। "मुझे नहीं मालूम, और अब मैं यह जानने के लिये ठहर भी नहीं सकता हूँ, क्योंकि मेरे बहादुर अजनबियों को पीछे खदेड़ रहे हैं, और मेरा उनके साथ होना आवश्यक है।" सरदार बुझती आग के घेरे से बाहर निकल आया और उस ओर बढ़ चला, जहाँ उसके जाँबाज़ों ने शत्रु को समुद्र की ओर खदेड़ दिया था।

किन्तु मातुल ने नानू के पुत्र काकू की तलाश करने में कोई कसर न छोड़ने का निश्चय किया। जैसे ही उस बहादुर का पिता उसे छोड़ कर गया, वैसे ही वह आग के घेरे से बाहर निकल कर वापिस झोंपड़ियों की ओर बढ़ गई। सर्वप्रथम वह गाँव को छान डालेगी, और यदि वह उसे वहाँ नहीं मिला, तो उसकी तलाश में जंगल के अन्दर किनारे के साथ-साथ आगे

बढ़ेगी— वह अधिक दूर नहीं जा पाता होगा।

जब मानुष नौका-निर्माताओं की झोंपड़ियों को टटोल कर रही थी, तब एक आकृति उनमें से एक झोंपड़ी में टंगी खालों के बीच में छिपी हुई बैठी थी, और एक कान को बाहर निकाल कर, उत्कंठित हो कुछ सुनने का प्रयत्न कर रही थी। नगाड़ों की आवाजें समाप्त हो चुकी थीं। और अब ठण्डा हुआ प्रतीत हो रहा था। खाल की चादर के पीछे से एक हाथ निकला, और उसके साथ-साथ एक आदमी रेंग कर पीछे से बाहर निकल आया। यह गुर था। गुफा-निवासियों के आक्रमणों के द्वारा निरन्तर खदेड़े एवं घेरे जाने पर गुर एक झोंपड़ी में प्रविष्ट हो गया था, और उसने भार की खालों के पीछे छिपा कर बैठ गया था।

उसने यह सोचा था कि जब मनुष्य उसकी जाति के लोगों का पीछा कर रहे हैं तो भागने का यह अत्यन्त उपयुक्त अवसर है। वह झोंपड़ी के प्रवेश द्वार पर पहुँचा और बाहर झांकने लगा। पर शीघ्र ही वह पीछे हो गया— उसने बराबर वाली झोंपड़ी से एक मानव आकृति को बाहर निकलते हुए देखा था। वह कोई औरत थी, और उसी झोंपड़ी की ओर आ रही थी, जिसमें उसने अपने आपको छिपाये हुआ था। अग्नि-गुफा पंक्ति की चमक आगन्तुक पर पड़ रही थी। गुर ने चकित हो प्रसन्नतापूर्वक एक गहरी सांस छोड़ी। यह वही औरत थी जिसे उसने अपना बन्दी बनाया था और जो उससे बच कर निकल भागी थी।

मानुष जल्दी-जल्दी झोंपड़ियों को देख रही थी। वह वास्तव में इन सब को निर्जन समझ रही थी। जैसे ही वह इस झोंपड़ी में प्रविष्ट हुई वैसे ही उसे एक धुंधली मनुष्य-आकृति अन्दर के अंधकार से उभरती हुई दिखाई दी। उसने सोचा कि यह हमारी ही जाति का कोई आदमी होगा, जो लूट मचा रहा है। लूट मार करने की लोलुपता के सामने प्रायः वे कभी कभी मनु की पूर्ण विध्वंस करने की प्रतीक्षा भी नहीं करते हैं।

“तुम कौन हो?” उसने प्रश्न किया। फिर उत्तर पाने

विना ही आगे कह उठी, "मैं नानू के पुत्र को खोज रही हूँ।"

शूर ने अवसर पहचान लिया।

"मुझे मालूम है, वह कहाँ है," वह बोला। "मैं सीसू की जाति का हूँ। किन्तु मैं तुम्हें इस शर्त पर ही नानू के पुत्र काकू से मिला सकता हूं, यदि तुम वादा करो कि हमारे लौट कर आने पर तुम अपने वहादुरों से मेरी रक्षा करोगी। मेरी जाति भाग खड़ी हुई है, और मुझे उस समय तक उन से जा मिलने की कोई आशा नहीं है जब तक कि मुझे तुम से सहायता पाने का वचन न मिल जाय।"

मातुल ने इसे स्वाभाविक एवं निष्कपट प्रस्ताव समझा और शीघ्र ही उसे मान लेना श्रेयस्कर समझा।

"तव आओ," शूर चिल्लाया। "व्यर्थ ही समय नष्ट करने से कोई लाभ नहीं। यहाँ से दक्षिण की ओर किनारे के समीप एक खाड़ी में वह आदमी क़ैद है। उसे मज़बूती से बांधा हुआ है पर उसकी रक्षा करने के लिये कोई नहीं है। यदि हमने शीघ्रता की तो सीसू की जाति के लोगों के पहुँचने के पूर्व ही हम वहां पहुँच सकते हैं। यदि हम तुम्हारे वहादुरों की नज़र से छिप कर निकल जायं, तो मुझे छुड़ाने में जो देरी होगी उससे हम आसानी से वच सकते हैं, और वहाँ समय से पूर्व ही पहुँच सकते हैं।'

शूर तेज़ी से झोंपड़ी के वाहर निकल आया। मातुल उसके पीछे-पीछे थी। आदमी सुरक्षा के लिये प्रज्वलित की गई अग्नि के प्रकाश से अपने चेहरे को अतीव सावधानी से छिपाता हुआ आगे बढ़ रहा था। इस प्रकार वह अपने षड्यंत्र के जाल को, उसके विश्वास को जीतकर जो वह उस पर अपने सहवासी के तलाश करने के लिये कर चुकी थी, सावधानी से इधर-उधर तानता गया। उसने नानू के पुत्र काकू की तलाश करने के लिये मातुल की उत्तेजना का अनुमान ठीक ही लगाया था। मातुल तेज़ी से शूर के पद-चिह्नों का अनुसरण, उजड़े हुये गांव के मध्य से जहां से अभी तक युद्ध की आवाजें उठ रही थीं, किनारे की ओर वढ़ते हुए कर रही थी।

शूर युद्धरत मनुष्यों के उत्तर से गुज़र कर, किनारे की उस ओर बढ़ा, जहाँ उसने अपनी नाव छोड़ी थी। नाव तलाश करने में उसे परेशानी नहीं उठानी पड़ी। उसने नाव को पानी में धकेल दिया और मातुल को उसमें सवार कर दिया; फिर लहरों को चीरता हुआ नाव को आगे बढ़ा ले चला। इस काम को पूरा करने में शूर को एक क्षण से अधिक नहीं लगा। वह उत्तुंग लहरों का उतना ही अभ्यस्त था, जितना कि धरती का।

नाव के पिछले भाग में उसकी ओर मुँह किये हुए मातुल बैठी थी। वह नाव को अपनी सम्पूर्ण शक्ति से लहरों की पहुँच से निकालने का प्रयत्न कर रहा था। मातुल ने अपने पैरों के निकट दूसरे चप्पू को पड़े देखा। वह भी बेहूदे ढंग से चप्पू को पानी में मारने लगी। नाव के खाड़ी में पहुँचने तक के समय की वह कठिनाई से प्रतीक्षा कर पा रही थी, और इसलिये अपनी प्रत्येक चेष्टा से नाव को गतिवान बनाने का पूरा प्रयत्न कर रही थी।

शूर ने नाव को नदी के खुले वक्ष की ओर बढ़ने दिया। उसकी योजना थी कि जब वह किनारे से काफी दूर हो जायगा तो वह दक्षिण की ओर मुड़ेगा, रात्रि के दौरान में धीरे-धीरे नाव को खेता रहेगा, और पौ फटने की प्रतीक्षा करेगा ताकि वह अपने साथियों की स्थिति को जान सके। उसे पूरा विश्वास था कि वे लोग भी दक्षिण की ओर ही धीरे-धीरे नाव खेते हुए आगे बढ़ रहे होंगे।

उसी समय अपने सामने आगे बढ़ती हुई एक नाव की आकृति उसे नज़र आई। सम्भवतः उसके आगे दूसरे लोग भी होंगे। वह भाग्यशाली ही था कि उसे अपने भागते हुये कबीले की अन्तिम नाव मिल गई थी।

फिर भी वह दो कारणों से उनसे जाकर नहीं मिल सकता था। प्रथम कारण तो यह था कि वह लड़की पर स्पष्ट नहीं होने देना चाहता था कि वह उसे दक्षिण स्थित खाड़ी— उसके सहवासी के कैद होने की काल्पनिक जगह— की ओर नहीं ले जा रहा है, और दूसरा था शत्रु का ध्यान आकर्षित होने का खतरा, क्योंकि शत्रुओं ने *कुछ नावें अवश्य ही हथियाली होंगी*, और नदी पर वे

बिना ही आगे कह उठी, "मैं नानू के पुत्र को खोज रही हूँ।"

शूर ने अवसर पहचान लिया।

"मुझे मालूम है, वह कहाँ है," वह बोला। "मैं सीसू की जाति का हूँ। किन्तु मैं तुम्हें इस शर्त पर ही नानू के पुत्र काकू से मिला सकता हूं, यदि तुम वादा करो कि हमारे लौट कर आने पर तुम अपने बहादुरों से मेरी रक्षा करोगी। मेरी जाति भाग खड़ी हुई है, और मुझे उस समय तक उन से जा मिलने की कोई आशा नहीं है जब तक कि मुझे तुम से सहायता पाने का वचन न मिल जाय।"

मातुल ने इसे स्वाभाविक एवं निष्कपट प्रस्ताव समझा और शीघ्र ही उसे मान लेना श्रेयस्कर समझा।

"तब आओ," शूर चिल्लाया। "व्यर्थ ही समय नष्ट करने से कोई लाभ नहीं। यहां से दक्षिण की ओर किनारे के समीप एक खाड़ी में वह आदमी क़ैद है। उसे मज़बूती से बांधा हुआ है पर उसकी रक्षा करने के लिये कोई नहीं है। यदि हमने शीघ्रता की तो सीसू की जाति के लोगों के पहुँचने के पूर्व ही हम वहां पहुँच सकते हैं। यदि हम तुम्हारे बहादुरों की नज़र से छिप कर निकल जायं, तो मुझे छुड़ाने में जो देरी होगी उससे हम आसानी से बच सकते हैं, और वहां समय से पूर्व ही पहुँच सकते हैं।'

शूर तेज़ी से झोंपड़ी के बाहर निकल आया। मातुल उसके पीछे-पीछे थी। आदमी सुरक्षा के लिये प्रज्वलित की गई अग्नि के प्रकाश से अपने चेहरे को अतीव सावधानी से छिपाता हुआ आगे बढ़ रहा था। इस प्रकार वह अपने षड्‌यंत्र के जाल को, उसके विश्वास को जीतकर जो वह उस पर अपने सहवासी के तलाश करने के लिये कर चुकी थी, सावधानी से इधर-उधर तानता गया। उसने नानू के पुत्र काकू की तलाश करने के लिये मातुल की उत्तेजना का अनुमान ठीक ही लगाया था। मातुल तेज़ी से शूर के पद-चिह्नों का अनुसरण, उजड़े हुये गांव के मध्य से जहां से अभी तक युद्ध की आवाज़ें उठ रही थीं, किनारे की ओर बढ़ते हुए कर रही थी।

शूर पुद्धरत मनुष्यों के उत्तर से गुज़र कर, किनारे की उस ओर बढ़ा, जहाँ उसने अपनी नाव छोड़ी थी। नाव तलाश करने में उसे परेशानी नहीं उठानी पड़ी। उसने नाव को पानी में धकेल दिया और मातुन को उसमें सवार कर दिया; फिर लहरों को चीरता हुआ नाव को आगे बढ़ा ले चला। इस काम को पूरा करने में शूर को एक क्षण से अधिक नहीं लगा। वह उत्तुंग लहरों का उतना ही अभ्यस्त था, जितना कि धरती का।

नाव के पिछले भाग में उसकी ओर मुँह किये हुए मातुन बैठी थी। वह नाव को अपनी सम्पूर्ण शक्ति से लहरों की पहुँच से निकालने का प्रयत्न कर रहा था। मातुन ने अपने पैरों के निकट दूसरे चप्पू को पड़े देखा। वह भी बेहूदे ढंग से चप्पू को पानी में मारने लगी। नाव के खाड़ी में पहुँचने तक के समय की वह कठिनाई से प्रतीक्षा कर पा रही थी, और इसलिये अपनी प्रत्येक चेष्टा से नाव को गतिवान बनाने का पूरा प्रयत्न कर रही थी।

शूर ने नाव को नदी के खुले वक्ष की ओर बढ़ने दिया। उसकी योजना थी कि जब वह किनारे से काफी दूर हो जायगा तो वह दक्षिण की ओर मुड़ेगा, रात्रि के दौरान में धीरे-धीरे नाव को खेता रहेगा, और पौ फटने की प्रतीक्षा करेगा ताकि वह अपने साथियों की स्थिति को जान सके। उसे पूरा विश्वास था कि वे लोग भी दक्षिण की ओर ही धीरे-धीरे नाव खेते हुए आगे बढ़ रहे होंगे।

उसी समय अपने सामने आगे बढ़ती हुई एक नाव की आकृति उसे नज़र आई। सम्भवतः उसके आगे दूसरे लोग भी होंगे। वह भाग्यशाली ही था कि उसे अपने भागते हुये कबीले की अन्तिम नाव मिल गई थी।

फिर भी वह दो कारणों से उनसे जाकर नहीं मिल सकता था। प्रथम कारण तो यह था कि वह लड़की पर स्पष्ट नहीं होने देना चाहता था कि वह उसे दक्षिण स्थित खाड़ी— उसके सहवासी के कैद होने की काल्पनिक जगह— की ओर नहीं ले जा रहा है, और दूसरा था शत्रु का ध्यान आकर्षित होने का खतरा, क्योंकि शत्रुओं ने कुछ नावें अवश्य ही हथियाली होंगी, और नदी पर वे

उन लोगों का पीछा कर रहे होंगे ।

उसी समय एक तीसरी सम्भावना ने भी उसे चुप रहने के लिये मजबूर कर दिया— आगे जाने वाली नाव में शत्रु के बहादुर भी हो सकते हैं, जो शायद भगोड़ों को तलाश कर रहे हों ।

शूर को इस बात का किंचित् भी ज्ञान नहीं था कि काकू की जाति जल-यात्रा से एकदम अनभिज्ञ है, कि उन्होंने इसके पूर्व नाव नाम की कोई वस्तु कभी स्वप्न में भी नहीं देखी थी ।

इसलिये शूर चुपचाप आगे वाली नाव का पीछा करता रहा । मातुल को यह प्रतीत हो रहा था कि खाड़ी वहाँ से काफी दूर पर स्थित होगी । अंधकार में वह इस बात को नहीं जान सकी कि वे किनारे से दूर ठीक सीधी दिशा में ही जलयात्रा कर रहे हैं । लम्बे समय के पश्चात् उसने नाव की बाईं ओर लहर को किनारे से टकराने की आवाज़ सुनी । वह चौंक उठी, साथ-साथ व्याकुल भी हो उठी । दक्षिण की ओर यात्रा करते हुए, जैसा उसका अनुमान था कि वे उसी ओर बढ़ रहे हैं, लहरों को नाव की दाईं ओर किनारे से टकराना चाहिये था ।

"हम कहाँ पहुँच गये हैं ?" उसने प्रश्न किया । "धरती बाईं ओर कैसे आ गई जबकि दाईं ओर आनी चाहिये थी ?"

शूर हँसा ।

"शायद हम भटक गये हैं," उसने कहा । किन्तु मातुल समझ चुकी थी कि उसे धोखा दिया जा रहा है । अपने सहयात्री की आवाज़ उसकी परिचित है, तत्क्षण यह विचार उसके मस्तिष्क में बिजली की भाँति कौंध गया । उसने उसे पहले कहाँ सुना था ? उसने अंधकार की उस चादर में नज़रें गड़ा कर देखा जो उसके सामने नाव के दूसरे सिरे पर बैठे हुए मानव की मुखाकृति को अपने में छिपाये हुए थी ।

"तुम कौन हो ?" उसने फिर पूछा । "तुम मुझे कहाँ ले जा रहे हो ?'

मातुल किनारे पर उतर आई। उसके हाथ अभी तक मज़बूती से चप्पू क पकड़े हुए थे। शूर उसकी ओर बढ़ा। और इतना निकट आ गया कि रा के गहन अंधकार में भी उसने उसकी आकृति को देख एवं पहचान लिया। व अपनी बाहें फैला उसे आलिंगन में कसने के लिये आगे बढ़ता गया।

"आओ," वह बोला "अपने सहवासी के साथ आओ।"

बिजली की तीव्रता से खुरदुरा भारी चप्पू मातुल के कंधे के पीछे की ओ गया, फिर ऊपर की तरफ हवा को दबाता हुआ आदमी के सिर को लक्ष्य क बढ़ा। शूर अपने ऊपर आये खतरे को जान पीछे को लपका, किन्तु तब ह चप्पू का अगला भाग उसके माथे पर घाव बनाता हुआ निकल गया। ए सेकिंड तक मनुष्य शराबी की भाँति डगमगाया, आगे की ओर लड़खड़ाया औ फिर रेत पर अपने मुंह के बल चारों खाने चित जा पड़ा। जिस क्षण चप्पू उसके त्रासदाता को छुआ, मातुल ने चप्पू छोड़ दिया। आदमी को धोखा पीछे छोड़, डरी हुई हरिणी की भाँति चौकड़ी भरती हुई वह किनारे के ऊप अवस्थित जंगल की गहन कालिमा की ओर दौड़ पड़ी।

अगली विशाल लहर पुनः किनारे से आ टकराई, और साथ ही सा का जल गतिहीन शूर के शरीर को पार कर आगे निकल गया। जैसे ह लहर पुनः नदी में वापिस लौटने लगी, शूर का शरीर भी उसके साथ नदी व ओर बढ़ने लगा। किन्तु पानी ने उसकी चेतना को सजग कर दिया और वह खांसता हुआ, अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ सुरक्षा के लिये हाथ-पाँव मारने लगा। वह उस समय तक लहर के साथ भयंकर संग्राम में लगा रहा जब तक कि नदी के जल में जाकर वह पुनः विलीन नहीं हो गई और उसे सुरक्षित नहीं छोड़ गई। धीरे-धीरे वह अपने पैरों के सहारे खड़ा हो गया और किनारे के ऊपर की ओर अपना मार्ग बनाता हुआ लोलुप लहरों की पहुँच से बाहर होने के लिये आगे बढ़ चला।

उसके सिर में गहन पीड़ा का साम्राज्य छा रहा था। रक्त बह कर उसके कपोलों को रंगता हुआ बालों से भरे सीने को तर कर रहा था। वह क्रोध

से अर्द्ध-विक्षिप्त हो उठा और बदले की तीव्र लालसा को हृदय में संजोने लगा। यदि मातुल उस समय उसके पन्जे में होती, तो वह अपनी फौलादी अंगुलियों से उसका टेंटुवा दबा देता। किन्तु अब वह उस पर अपने हाथ नहीं रख सकता था, क्योंकि मातुल जंगल के गहन अंधकार में सिर ऊँचा किये खड़े एक पेड़ के कोटर में सुरक्षित जा छिपी थी। दिन निकलने तक वह वहाँ उतनी सुरक्षित थी मानो उसके और शूर के बीच हजार मील की दूरी आ पड़ी हो। आधा घन्टा पहले काकू और गीगा वहाँ से एक मील दूर स्थित अन्य पेड़ पर चढ़ रहे थे। आह! यदि मातुल यह जान जाती, तो निस्सन्देह दुःख एवं पीड़ा से उसके हृदय में द्वन्द्व मच जाता।

शूर किनारे से उस दिशा की ओर दौड़ा जिधर उसने सोचा कि उसने भागती हुई मातुल के पदचाप सुने हैं। हाँ, वह रही। शूर ने अपनी रफ्तार दुगुनी कर दी। उसका शिकार, जंगल के छोर पर, एक बड़े पेड़ की विशाल छाया के नीचे था। प्रमातुदिक सन्तुष्टि की भावनायें जो उसके होंठों पर ही मुरझा गयीं थीं, व्यक्त करता हुआ शूर आगे की ओर झपटा। तभी उसका समस्त शरीर सिंह गर्जना से जम गया। शूर एकदम घूमा और उलटा दौड़ पड़ा। जिस वस्तु को उसने मातुल समझ लिया था, वह एक विशाल गुहा-सिंह निकला जो उस समय अपने शिकार के शव के समीप खड़ा हुआ विजय-घोष कर रहा था। यह शूर का सौभाग्य था कि वह हिंस्र जन्तु अपना रात्रि का भोजन पहले ही प्राप्त कर चुका था। अतः उसने भयभीत मनुष्य का पीछा नहीं किया। और इस प्रकार शूर एक निकटवर्ती पेड़ के समीप जा पहुँचने में सफल हुआ जहाँ उसकी सुरक्षा में रात्रि के शेष पहरों को उसने हिलते एवं काँपते हुए व्यतीत किया। शूर नौका-निर्माता और मछेरा था— वह काकू की भाँति दिलेर नहीं था।

१८

जब मातुल की निद्रा टूटी, सूर्य सिर पर चढ़ चुका था। उसने जंगल की प्रत्येक दिशा में अपनी नजर दौड़ाई, किन्तु शूर का कोई चिह्न भी दृष्टिगत नहीं हो सका। सावधानी के साथ वह धरती पर उतर आई। कुछ अधिक दूर न जाने पर ही उसे किनारे से लगी हुई दो नावें नजर आईं। दूसरी नाव किसकी हो सकती है? स्वाभाविक है किसी दूसरे नौका-निर्माता की होगी। तब इस किनारे पर शूर के अतिरिक्त अन्य शत्रु भी उपस्थित हैं। उसने किनारे पर ऊपर नीचे इधर उधर गौर से देखा। किन्तु आदमी या जानवर नाम की किसी वस्तु का कोई भी चिह्न उसे नहीं मिला। यदि वह नावों के निकट पहुँच सके तो वह उन दोनों को लहरों पर उतार देगी और किसी प्रकार एक को खींचते हुये, दूसरी को चप्पू से चलाते हुये, उन्हें इस किनारे से दूर ले जायगी। इस प्रकार उसके पीछे आने के लिये शूर के पास कोई साधन शेष नहीं रह जायगा। उसकी वंश परम्परा एवं परिस्थितियों ने उसे इतना आत्म-निर्भर एवं आत्म-विश्वासी बना दिया था, कि उसे इसमें किंचित् भी सन्देह नहीं था कि वह अपनी मातृभूमि पर अकेली ही अवश्य पहुँच जायगी।

उसने पुनः किनारे के ऊपर-नीचे नजर दौड़ाई। फिर वह तेजी से निकट-वर्ती नाव की ओर दौड़ी। वह उस भारी वस्तु को धक्का देकर घसीटने लगी। कुछ मिनट पश्चात् उसके श्रमरत उत्कंठित मस्तिष्क को इस बात का आभास हुआ कि नाव रेत की पकड़ से ढीली पड़ फिसलती जा रही है। धीरे-धीरे, इंच-इंच कर, वह उसे उस ओर धकेल रही थी जहाँ लहरें उस तक पहुँच सकें और उसे अपने साथ तैरा कर ले जायें। इस प्रथम नाव को पानी में उतारने में लगभग वह सफल हो ही चली थी जब किसी वस्तु ने उसे ऊपर देखने के लिये विवश कर दिया। उसी क्षण बच कर निकल भागने का उसका स्वप्न मिट

गया— किनारे के ऊपरी भाग से अपनी ओर तेजी से दौड़कर आते हुए धूर को उसने देख लिया था। यदि किसी प्रकार वह नाव को पानी पर तैराने मे सफल रही और उस पर सवार हो गई, तो भी दूसरी नाव के सहारे धूर उस को रोक सकने में समर्थ हो सकता है। धूर पानी का अभ्यस्त है— जब कि धरती, गुहाओं, जंगलो की वह अभ्यस्त है।

नाव के साथ अपने प्रयत्नों को वहीं अधूरा छोड, वह एकदम घूमी और जगल की ओर वापिस दौड़ पड़ी। धूर उससे लगभग सौ कदम पीछे दौड़ता चला आ रहा था। किन्तु मातुल जानती थी कि यदि एक बार वह जंगल की उलझी हुई भूल-भुलैयों में पहुँच गई, तो धूर जैसा व्यक्ति कभी भी उसे नही पकड़ सकेगा। वह सीधी जंगल की गहन उलझन में प्रविष्ट हो गई। कभी वह जमीन पर दौडती रही और कभी पेड़ो की नीचे लटकी शाखाओं के सहारे आगे बढती रही।

सम्पूर्ण दिन वह दौड़ती रही। कठिनाई से एक-दो बार खाने या पीने के लिये वह रुकी होगी। कई बार छोटी छोटी पहाड़ियों पर चढकर, जिन्हे जंगल छोडने के पश्चात् वह पार कर रही थी, उसने देखा कि मनुष्य उसके पद चिह्नो का अनुसरण करता हुआ चला आ रहा है। जब वह अन्त में तेजी से दौड़ती हुई एक खड्ड के निकट पहुँच कर रुकी, उस समय अंधेरा हो चला था। गहराई का अनुमान लगाने के लिये वह उसमें झाँकने लगी। उसकी आँखें जहाँ तक पहुँच पा रही थीं, उसे गहन अंधकार के अतिरिक्त कुछ और नजर नही आ रहा था। उसके इर्द-गिर्द शिकार की तलाश में हिंसक जन्तु बेचैनी से घूम रहे थे। उसकी नाक में उनकी दुर्गन्ध आ रही थी और उसके कानो में उनकी उदासीन कराहटें या उनके गले से निकली अमानुषिक गुर्राहटें पड़ रही थी।

जिस चट्टान की चोटी पर वह अनिश्चित गहराई में गिरने से बचने के लिये ठीक समय पर रुकी थी, उसे अपने निकट पहुँचनेवाली पशुओं की आवाज़ों से इस बात का विश्वास हो गया था कि वह पर्याप्त ऊँची थी, क्योंकि वे आवाजें उसे दूर से आती हुई प्रतीत हो रही थीं। अब वह क्य

करे ? पहाड़ की चोटी दूर दूर तक पेड़ों से रिक्त थी। अंधकार में इस बात का अनुमान उसे भली भांति लग गया था।

खुले मैदान में सोना खतरनाक था, अवश्यम्भावी मृत्यु का वाहक। अनिश्चित ऊँचाई से रात के समय उतरना भी उसी के समान एकदम दुर्भाग्य-पूर्ण हो सकता था। अगला कदम उठाने की कठिनाई का अनुभव कर मातुल खड्ड के किनारे पर बैठ गई। वह अकेली थी, नारी थी, और फिर एक विचित्र एवं खूंखार देश में एकदम निहत्थी थी। अपने देश लौट कर अपने लोगों से मिलने की आशा उसे दिये की कांपती हुई लौ लगने लगी थी। किस प्रकार वह इस दिये को प्रदीप्त रख सकती थी जबकि शत्रु उसके पीछे लगे हुये थे और वह चारों ओर से अपरिचित खतरों से घिरी हुई थी।

वह अत्यधिक भूखी थी और प्यासी थी, फिर ऊपर से नींद भी उसे सता रही थी। अपनी इस विपद् में सहायता एवं सुरक्षा की आशा का लगभग परित्याग कर वह लेट कर सोने के लिये उद्यत हो गई। अपनी असभ्य पोशाक को अपने चारों ओर लपेट, मातुल खाई की ऊपर वाली चट्टान की कठोर धरती पर पैर फैला कर लेट गई। उसने अपनी आंखें बन्द कर लीं। उसी क्षण नींद उसे शान्ति पहुँचाने जा रही थी कि सहसा उसने अपने पीछे लगभग बारह गज की दूरी से आते हुए निःशब्द पदचापों को सुना, जिससे वह फौरन विस्मययुक्त चेतना प्राप्त कर बैठी। कोई चीज़ उसकी ओर रेंग कर बढ़ रही थी— निश्चय ही किसी न किसी रूप में मृत्यु। अब तो उसके कानों में किसी बड़े जन्तु के सांस लेने की आवाज़ भी पड़ने लगी थी, और यद्यपि उन दोनों के बीच हवा बह रही थी, तो भी उसकी नाक में भयानक चीते की दुर्गन्ध समाने लगी थी।

वहां रहकर चीते के वीभत्स दांतों एवं पञ्जों के आगे आत्म-समर्पण करने के अतिरिक्त केवल एक ही उपाय शेष था— मातुल ने उसे अपनाने में कोई देर नहीं की। तीर की तेज़ी से उसने अपने आप को खाई के अन्दर चट्टान के किनारे को पकड़ कर लटका दिया। उसके पांव हवा में अधर टंग रहे थे।

शीघ्र ही निर्भयता से वह अपने पांव नीचे की कठोर चट्टानी दीवार पर टिकाने के लिये कोई उभरा हुआ स्थान टटोलने लगी।

कोई सहारा नहीं मिल सका। पहाड़ की उस ढलान पर कोई ऊँच नीच भी नहीं थी जिसके सहारे वह नीचे उतर अपने आपको जन्तु की पकड़ से सुरक्षित रखने का अवसर प्राप्त कर सके; वह जानती थी कि पशु सावधानी के साथ ऊपर उसकी ओर बढ़ रहा होगा। अकस्मात् ही उसके सम्पूर्ण शरीर में भय की लहर दौड़ गई, जैसे ही उसने गर्म साँसों और राल की बूंदों का अपने हाथों पर अनुभव किया, जो ऊपर खाई के किनारे को पकड़े हुए थे।

ऊपर से एक हलकी गुर्राहट आई। यह इस बात का प्रमाण था कि पशु शिकार की विचित्र स्थिति से परेशान हो उठा था, किन्तु अगले ही क्षण वह उसकी कलाइयों को पकड़ लेगा या फिर वह खाई में गिर कर अपनी हड्डी पसलियों का चूरा कर लेगी। और उसी क्षण उसकी अंगुलियों की पकड़ ढीली पड़ गई और मातुल गहन अंधकार में नीचे चल दी।

भयभीत मातुल हाथ की पकड़ ढीली पड़ने के पश्चात् खाई में दो तीन फीट ही नीचे गिरी होगी जब उसके पैर एक उभरे हुए कोने से जा टकराये। अधिक चोट न लगने से उसे कुछ सान्त्वना मिली, किन्तु अगले ही क्षण सन्तुष्टि की भावना पुन. भय की लहर से दब गई। उसके पैरों के नीचे संकरी खाई थी जिसकी गहराई का कोई अनुमान नहीं था। हृदय में यह भय जाग्रत था कि हिंसक जन्तु वहाँ भी पहुँच सकता है। खाई में नीचे आने का कोई न कोई मार्ग अवश्य होगा। वह यही होगा। किन्तु हो सकता है कि न भी हो। अब उसके लिये एक ही मार्ग था कि वह वहीं रुकी रहे और इसी में उसे अपनी भलाई की आशा भी थी। इसलिये वह अपनी सम्पूर्ण चेतना को सजो कर वहीं रुक गई, मानो वह प्रतीक्षा कर रही हो कि उसका तात्कालिक भविष्य उसके लिये क्या लेकर आने वाला है। उसने चीते की क्रोध-भरी शिकायतें सुनीं जो उसके सिर के ऊपर खड़ा नीचे खाई में झाँक रहा था। वह बीच-बीच में गर्जना बन्द कर देता था और अपनी थूथनी नीचे कर समय-समय पर उसकी खुशबू सूंघ लेता था। फिर अपने एक पंजे को नीचे

की ओर लटका देता था ताकि उसके सशक्त चंगुल में अबोध लड़की आ जाय और वह उसके मधुर रक्त से अपनी पिपासा शान्त कर सके। किन्तु पंजा लड़की के सर से कुछ ऊँचा ही रह जाता था।

एक घण्टे तक यह क्रम चलता रहा। अन्त में, चीता थक कर परेशान हो जंगल में दूसरे शिकार की खोज में चला गया किन्तु उसके गले से निकलने वाली क्रोध-भरी शिकायतें अब तक सुनाई पड़ रही थीं।

मातुल ने अपनी अंगुलियों से चट्टान के दायें और बायें टटोला। चट्टान का धरातल ऋतुओं के प्रभाव से ऊबड़ खाबड़ था, किन्तु पांव द्वारा बनाये गये मार्ग के समान उसमें कोई समतलता नहीं थी। वह कोई मार्ग नहीं था यह जान कर लड़की को कुछ आराम अनुभव हुआ— आखिरकार वह ऐसी जगह नहीं थी, जो जंगली एवं हिंसक पशुओं के आने-जाने का मार्ग रहा हो, जो नीचे की घाटी को चट्टान की घाटी से सम्बन्धित करता हो।

धीरे-धीरे एवं सावधानी के साथ वह उस पत्थर पर रेंग कर, अधिक चौड़े एवं आरामदायक स्थान की तलाश करने लगी। किन्तु जैसे-जैसे वह अपनी खोज पर आगे बढ़ती गई, वैसे-वैसे ही वह टुकड़ा अधिक संकरा होता गया। इस बात का पता लगाने पर भी, लड़की ने अपनी खोज को उस समय तक चालू रखने का निश्चय किया जब तक कि एक स्थान नहीं मिल जाय जहां वह अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षा एवं आराम से रात गुजार सके। क्योंकि चट्टान के उस धरातल पर जिस पर वह उस समय थी ऐसा कोई सोने का स्थान नहीं था, इसलिये उसने नीचे उतरने का निश्चय किया। उसने अपने पांवों को चट्टान से नीचे लटका दिया, और सैन्डल से ढके हुए अपने तलवों से अंधकार में अपने नीचे के ऊबड़-खाबड़ धरातल को टटोलने लगी। अन्त में उसे एक सुरक्षित स्थान मिल ही गया, जिस पर वह उतर गई। पहाड़ के उस टुकड़े पर मातुल आध घण्टे तक खोज करती रही, जबकि चट्टान के ऊपर अंधकार का दैत्य मुंह बाये खड़ा रहा। अचानक उसके टोह लेते हुये पांव एक गुहा के प्रवेश द्वार तक पहुंचे जो उस अंधकारमयी चट्टान पर एक गहरे काले धब्बे के समान था। कुछ क्षणों तक वह गुहा के अन्तर में अपने कान लगा

कर सावधानी से टोह लेती रही। उसके सतर्क एवं जागरूक कानों ने अन्दर सांस लेने जैसी कोई आवाज नहीं सुनी। गुफा एकदम खाली है, इस बात से सन्तुष्ट हो मातुल साहस कर अन्दर की ओर रेंग गई और सोने के लिये लेट गई— दिन भर के निरन्तर परिश्रम ने उसे एकदम क्लान्त बना दिया था।

सहसा चट्टान के ऊपर घिसने की आवाज ने मातुल को सचेत कर दिया। अपनी कोहनियों के सहारे वह ध्यान से सुनने लगी। ऐसी क्या चीज हो सकती है, जो इस विशेष आवाज को उत्पन्न कर रही है। इस बात को जानने के लिये उसे एक पल से अधिक समय की आवश्यकता नहीं पड़ी— वह गुफा-निवासी के लिये बचपन से ही जानी पहचानी आवाज थी— वह पत्थर के साथ भाले की रगड़ लगने से उत्पन्न होने वाली आवाज थी, जो ऊपर चढ़ते हुये मनुष्य की पीठ से बंधा होने के कारण चट्टान से रगड़ खाता था। कभी वह पहले की अपेक्षा अधिक चिकनी सतह से रगड़ खा रहा था, और कभी गुफा के आगे निकले पत्थरों से टकरा रहा था। कौन सा नया खतरा अब उसे घेरने वाला है?

मातुल सावधानी के साथ गुफा के प्रवेश द्वार की ओर बढ़ आई। वह यहां रुक कर चट्टान के दाईं ओर के नजारे को देख सकती थी, किन्तु ऊपर चढ़ने वाला उसे नहीं देख सकता था, क्योंकि वह उसकी गुफा के उस पत्थर के नीचे था, जो आगे निकल कर एक प्राकृतिक छाया बना रहा था। जैसे ही वह देखने लगी, मातुल ने अपने से कुछ ऊँची दूसरी गुफा में से एक स्त्री को निकलते हुये देखा, जो शायद उसके दाईं ओर पचास फुट की ऊँचाई पर थी। यह देखते ही देखे जाने के भय से मातुल एकदम गुफा में प्रविष्ट हो गई। उसने उस अपरिचिता की हर्षध्वनि को सुना जो ऊपर चढ़ने वाले को देखकर वह कर उठी थी। उसने देखा कि ऊपर चढ़ी हुई औरत नवागन्तुक से मिलने के लिये नीचे उतर रही है। एक क्षण पश्चात् उस ने उस मनुष्य को देख लिया जो अब चढ़ कर गुफा के आगे निकले पत्थर के बराबर आ गया था।

मातुल का हृदय प्रसन्नता की तेजी से धड़क उठा, उसके होठों पर उसका नाम आ गया। किन्तु उसकी प्रसन्नता तत्काल दु:ख में बदल गई, उसके ...

आया नाम अनुच्चारित ही रह गया। आगन्तुक नानू का पुत्र काकू था और वह औरत जो उसके गले में बांहें डाल कर मिली थी और जिसने अपने होठों के मधुर चुम्बनों से आदमी को थका दिया था गीगा थी। मातुल अब उसे पहचान चुकी थी। उससे वह दृश्य आगे नहीं देखा गया। उसने हाथों से अपनी आंखों को ढक लिया, तथा उसकी आँखों से गर्म आँसू उसकी ताम्रवर्ण अंगुलियों को तर करते हुये वह निकले। उसने काकू की साधारण एवं विचित्र हँसी को नहीं देखा जो उसने गर्दन से गीगा की बांहों को छुटाते हुये हँसी थी। तकदीर वायें थी तभी उसने मातुल को यह दृश्य नहीं दिखाया। मातुल ने आँखों के सामने से उंगली तब हटाई जब वह भ्रमाकुला यही देख सकी कि उसका प्रेमी गीगा के कमर में हाथ डाले हुए उसी गुहा में जाकर अन्तर्ध्यान हो गया है।

मातुल चमक कर उठ खड़ी हुई। क्रोध, ईर्ष्या एवं मानसिक क्लेश के आंसुओं ने उसे अंधा बना दिया। उसने अपने चाकू को कस कर पकड़ लिया, जो उसके कटि प्रदेश में लगा हुआ था। जैसे ही उसने पहाड़ के उभरे ये उस भाग पर दृढ़ता से अपने कदम आगे उठाये, उसके जंगली युवा हृदय पर खून का भूत सवार हो चुका था। उसने शीघ्रता से उस गुहा की दिशा में कदम बढ़ाये जिसमें काकू और गीगा गये थे। पर यकायक उसके निकट पहुँच कर वह रुक गई। किसी नये विचार ने उसे रोक लिया। गर्म आँसुओं का एक तूफान पुनः उसकी आंखों में उभर आया— इस बार व्यथा एवं भग्न प्रेम के आंसू झड़ उठे।

उसने गुहा में प्रविष्ट होने के लिये अपने को बहुतेरा विवश किया, किन्तु हर बार उसका गर्व आड़े आ गया। तब असीम वेदना में डूबी वह घूमी और चट्टान की चोटी से नीचे उतरने लगी। जब वह नीचे उतरती जा रही थी उसकी गति अबाध रूप से उस समय तक बढ़ती गई जब तक कि वह धरती के धरातल पर अपने सामने फैले जंगल की सीमा पर नहीं पहुँच गई। और फिर एकाएक वह भयभीत हरिणी की भाँति उस अत्यन्त पीड़ादायक दृश्य से दूर उड़ चली। जंगल के बीच वह उसकी छाया में निहित प्रत्येक भयावह

खतरे को अनदेखा कर दौड़ती रही। जंगल समाप्त करने पर वह एक छोटे मैदान में पहुँच गई जो उसके आगे कुछ दूर जाकर ढलान के किनारे समाप्त होता नजर आ रहा था। ढलान के पीछे, बहुत दूर दिखाई पड़नेवाली पहाड़ियों की उभरी चोटियाँ, उस कोहरे के सागर में तैरती हुई प्रतीत हो रही थीं, जो बीच में पड़नेवाली घाटी को अपने आवरण में ढके हुये था।

वह आगे बढ़ेगी। उसे परवाह नहीं कि आगे क्या है। वह तो चाहती थी कि जो प्रत्येक पग वह रखे, वह उसे विश्वासहन्ता, काकू और घृणित गीगा से अधिक से अधिक दूर ले जाये। बस, उसकी तो केवल यही इच्छा थी कि वह ऐसी जगह पहुँच जाय, जहाँ उसे कभी भी कोई न पा सके—मृत्यु उस का आलिंगन कर ले— जहाँ वह अपने जीवन के अन्त का स्वागत कर सके जिसके लिये उन बीहड़ एवं प्रारम्भिक दिनों में किसी को अधिक तलाश नहीं करनी पड़ती थी।

वह उस समय मैदान के मध्य में पहुँच चुकी थी जब उसके सामने स्थित झाड़ी से निकलते हुए सांड का सिर उसकी नजर पड़ा। जंगली सांड युवती की ओर देखने के लिये रुक गया। उसने अपना सिर नीचा किया और जोर से दहाड़ा। ठीक उसके पीछे दूसरा सिर नजर आया और दूसरे के पीछे तीसरा। साधारणतः सांड हानिदायक जीव नहीं है, वह उस समय ही लड़ने के लिये विवश होता है जब उसकी आत्म-रक्षा का प्रश्न हो— किन्तु उन दिनों अकस्मात् प्रकट हुए इन्सान से उसकी युद्ध प्रवृत्ति प्रबल हो उठती थी और जो मानव के लिये दुःख का कारण बन जाती थी। अतः निहत्थे मनुष्य की वहाँ से भाग जाने में ही बहादुरी थी। मानुल रुक गई, अपने और सांड के बीच का फासला नापने के लिये और अपने और निकटवर्ती पेड़ की दूरी का अनुमान लगाने के लिये।

जब मानुल व्यथा से पीड़ित हो चट्टान से उतर कर भाग रही थी, जिस पर स्थित गुहा में काकू गीगा के साथ था, उस समय वहाँ पुरुष पुनः औरत की अंगुलियों को अपनी गर्दन से अलग कर रहा था।

"गीगा, इस प्रेम-प्रदर्शन को रोक दो," वह बोला। "हमारे बीच कोई प्रेम नहीं हो सकता है। मेरे पिता नानू की जाति में पुरुष केवल एक ही सहवासिनी को चुनता है। मैं भू की पुत्री मातुल को चुन चुका हूँ। तुम शूर को पहले ही अपना सहवासी बना चुकी हो। तुमने मुझे यह बताया था। और मैंने तुम्हें उसके बच्चे को स्तनपान कराते हुए भी देखा था। मैं केवल मातुल से प्यार करता हूँ। तुम्हें केवल शूर से प्रेम करना चाहिये।"

नारी ने क्रोधित हो अपने सैन्डल पहने पांव को ज़ोर से धरती पर पटककर उसकी बात में बाधा डाली।

"मुझे उससे घृणा है," वह चिल्लाई। "मुझे उससे घृणा है। मुझे तो केवल नानू के पुत्र काकू से ही प्रेम है।"

पुरुष ने अपना सिर हिलाया और जब वह बोला तब भी उसकी आवाज़ में विनम्रता झलक रही थी क्योंकि वह इस दुखी स्त्री के प्रति केवल सहानुभूति अनुभव कर रहा था।

"गीगा, इस विषय पर हमारा आगे बात करना," वह बोला, "एकदम व्यर्थ है। हम उस समय तक साथ रहेंगे जब तक कि हम अपने अपने देशों को वापिस नहीं लौट जाते हैं। किन्तु अब कोई प्रेम भरे शब्द नहीं होने चाहियें। समझीं?"

एक क्षण तक रमणी उसकी ओर देखती रही। उसके दिल में जो भाव उठ रहे थे, वे उसके चेहरे पर आये बिना नहीं रह सके। वह एक भग्न-हृदया नारी का क्रोध हो सकता था, या दिल टूट जाने की व्यथा। वह उसकी ओर एक कदम बढ़ी, रुकी, और फिर अपने मुख के आगे हाथ ले जाकर वह घूमी और गुहा के फर्श पर गिर कर फूट-फूट कर रोने लगी।

काकू भी घूमा और गुहा के बाहर उभरे हुये शिला-खंड पर जाकर खड़ा हो गया। उसकी सतर्क दृष्टि ने अपने सामने फैले विस्तृत दृश्य को एक ही नजर में भली भांति परख डाला। उसकी नजर उसी क्षण एक छोटी आकृति पर पड़ी जो जंगल के पार वाले छोटे मैदान में पठार के छोर की ओर दौड़ती

हुई दिखाई पड़ रही थी । वह एक नारी की आकृति थी । वह ढलान की ओर तेज़ी से दौड़ती चली जा रही थी । काकू ने अपनी भौहें चढ़ाई । उसको छोटी आकृति में कोई विशेषता एवं मोहकता नज़र आई— विशेषता एवं मोहकता, जो उसे भली भाँति परिचित लग रही थी । उसके छोटे छोटे पाँव घास से भरे मैदान पर सितारों की भाँति चमकते हुए लग रहे थे । वह क्या चीज़ हो सकती है ? उसकी जाति का कौन सदस्य इस सुदूर किनारे पर आ पहुँचा है ? वास्तव में यह आकस्मिक समानता थी, किन्तु फिर भी उस दूरवर्ती आकृति को देखकर उसका हृदय कितने ज़ोर से धड़क रहा था ? क्या वह हो सकती है ? किसी भी अल्पमात्र सम्भावना से क्या मातुन इस विचित्र देश में आ पहुँची है ?

पीछे की घाटी से पठार के किनारे पर चढ़ते हुए गाय और सांडों के झुण्ड को काकू ने भी देखा । उनके पीछे ग्वाले भी अवश्य होने चाहियें । क्या लड़की उनसे बच निकलने में समर्थ हो सकेगी ? आह, उसने उन जानवरों को देख लिया है । ...... वह रुक गई है, और इधर-उधर पेड़ की तलाश कर रही है । काकू सोच में पड़ गया, क्योंकि प्राय: स्त्रियाँ बालों से भरे उन विकराल सांडों की दैत्य जैसी दावन से डर स्तब्ध रह जाती हैं, बेसुध हो जाती हैं । तब ही गर्व से उसे ध्यान हो आया कि उसकी मातुन इस दुनिया में किसी से नहीं डरती । वैसे वह सतर्क थी । सतर्क न होने पर व्यक्ति उस दुनिया में पन्द्रह दिन भी जीवित न रह सकता था । उसे किंचित् भी भय नहीं था । काकू मुस्कराया । केवल दो ही वस्तुएं ऐसी थीं जो मातुन को भयभीत बना देती थीं— चूहे और भूकम्प ।

अब काकू क्रुद्ध ग्वालों को देख रहा था जो एक ओर से अपने झुण्ड को एकत्र कर रहे थे । अपने भालों को तैयार किये हुए वे तेज़ी से आगे बढ़ रहे थे , ताकि यह जान सकें कि ऐसा कौन सा कारण है जिससे झुण्ड का सरदार एकाएक रुक गया है— किस वजह से बूढ़ा सांड सरदार गर्जना कर रहा है और अपने खुरों से धरती खोद रहा है । क्या लड़की ने उन्हें देख लिया है ? क्या वह उनसे बच निकल भाग सकेगी ? वे अब उसे देख पा रहे थे । औ

उसी क्षण यह भी स्पष्ट हो गया कि ललना ने उन्हें देख लिया है। क्या वह उन्हीं की जाति की है? यदि ऐसा है तो वह उनकी ओर तेज़ी से बढ़ेगी। नहीं! वह लौट पड़ी थी और तेज़ी से पुनः जंगल की ओर वापिस दौड़ रही थी। ग्वाले भी तेज़ी से उसके पीछे लग चुके थे। काकू उत्तेजना से कांप उठा। यदि वह केवल जानता ......? यदि वह केवल जानता?

उसके कंधों के पीछे गीगा खड़ी हुई थी। वह उसकी उपस्थिति के प्रति एकदम असावधान था। रमणी की आँखें भी दूरी के गर्त को चीरती हुई उसी छोटी आकृति पर लगी हुई थीं, जो खुले मैदान में जंगल की ओर दौड़ रही थी। गीगा के हाथ उसके वक्ष-स्थल पर परस्पर कस कर भिचे हुये थे। वह भी उसी आशंका से भयभीत हो उठी थी, जो पहले ही काकू के हृदय पर छा चुकी थी। उसके हृदय में शायद इस विचार का प्रतिदान पुरुष के मस्तिष्क से ही हुआ था।

तब ही दर्शकों ने देखा कि ग्वालों ने भगोड़े को घेर लिया है। फिर वे उसे पकड़ कर घसीटते हुए पुनः वापिस पठार के छोर की ओर ले जाने लगे हैं। गाय और सांडों का झुण्ड भी घूम गया, और कुछ क्षण में वे सब पठार के छोर के पीछे पहुँच कर अन्तर्ध्यान हो गये। काकू विचारों के भँवर में डूबता-उतरता रहा। वह जानता था कि कैदी मातुल नहीं हो सकती, किन्तु फिर भी किसी चीज ने उसे उसकी सहायता करने के लिये प्रेरित किया। वे उसे झील पर बने अपने घरों में ले जा रहे हैं। क्या उसे उनका पीछा करना चाहिये? ऐसा करना मूर्खता ही होगी— पर मान लो, यदि वह मातुल हुई तो! पीछे की ओर देखे बिना ही आदमी ने झट चट्टान से नीचे उतरना शुरू कर दिया। उसके विचारों से भिज्ञ होकर उसके पीछे खड़ी रमणी ने उसके साथ साथ पग उठाया और अपनी बाँहें फैलाकर उसकी ओर बढ़ी।

"काकू!" वह ज़ोर देकर बोली। उसकी आवाज़ धीमी और शिकायत से भरी हुई थी। आदमी ने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। उसके कान वहाँ नहीं थे; उसके विचार भी वहाँ से उड़कर आशा एवं भय में डूबे हुए बन्दी हुई

उस लड़की की लचीली आकृति के पीछे चले गये थे जिसे अभी कुछ क्षणों पूर्व ही भागते छिपी हुई घाटी में झील की ओर ले गये थे।

सहारा पाने के आशय से गीता ने अपनी बाहें उसकी ओर बढ़ाई थी। एक क्षण तक वह निश्चेष्ट हो उसी स्थिति में खड़ी रही। भालू ने चट्टान से नीचे उतरना जारी रखा। वह तलहटी तक पहुँच गया, और फिर तेजी से क़दम फेंकता हुआ जंगल की ओर बढ़ चला। गीता ने अपनी हथेली से अपनी आँखों को सहलाया, और फिर घूम कर गुफा के भीतर के दूसरे भाग की ओर वापिस लौट गई। मन्द स्वरों में विलाप करती हुई वह घुटनों के सहारे बैठ गई और फिर उस अंधेरे एवं तंग स्थान में अर्धसुप्त हो लेट गई।

१६

काकू समय रहते ही पठार के छोर पर पहुँच गया, जहाँ से वह ग्वालों
वन्दी के साथ झील के मकानों में पहुँचते हुए देख पा रहा था। उसने
कंठित जंगलियों के झुंड को देखा, जो उनसे मिलने के लिये आगे बढ़ आया
। उसने देखा कि वे वन्दी को इधर उधर हिला डुला रहे हैं। प्रायः ग्वाले
पने पीठ पीछे के पठार की ओर संकेत कर रहे थे। यह इस वात का
माण था कि गत रात्रि को काकू द्वारा सन्तरी पर किये गये आक्रमण का
दला वन्दी की गई इस अभागी से लिया जायगा। इसके अतिरिक्त कल
चट्टान पर काकू तथा गीगा की आकस्मिक उपस्थिति ने गाँववालों को पूर्व
की ओर से आक्रमण के भय से भर दिया था। ग्वालों का अपनी गायों के
साथ आज जल्दी ही लौट आने का केवल एक यही कारण रहा था।

ढलान पर उगे पेड़ और झाड़ियों का लाभ उठा, छिपता छिपता घाटी
से गुज़र कर, सावधानी के साथ काकू झील की ओर वढ़ता गया। उसने
वन्दी को खोज निकालने का पक्का निश्चय कर लिया था, यद्यपि अभी तक
वह इस पर पूर्णरूपेण विश्वास नहीं कर सका था कि वह मातुल ही है।
झील के किनारे से एक मील दूर रह जाने पर उसे अंधकार हो जाने तक
छिपने के लिये विवश हो जाना पड़ा क्योंकि उससे आगे झाड़ियों की संख्या
घटती चली गई थी। इसके अतिरिक्त वहाँ गाँव के अनेक निवासी इधर
उधर फिर रहे थे और अपनी गाय के झुन्डों को अपने घर के समीपवर्ती जगह
में भर रहे थे।

जव पर्याप्त अंधकार हो गया तव फिर काकू ने वीच की दूरी को पार
करना शुरू कर दिया। पास आकर पुनः वह नरकुल की झाड़ियों में छिप
गया किन्तु इस वार उसने एक पुल के अत्यन्त निकटवर्ती स्थान को चुना था।
वह निश्चित रूप से यह जानना चाहता था कि वन्दी को कौन से घर में क़ै

कर रखा गया है। वह जानता था कि सम्पूर्ण गाँव में खोज लगाना सबसे बड़ी मूर्खता होगी तो भी उसे कोई दूसरा मार्ग नजर नहीं आ रहा था।

आखिरकार उन सन्तरियों को छोड़ सम्पूर्ण गाँव निद्रा के सुनहरे जाल में डूब गया, जो उन संकरे पुलों पर पहरा दे रहे थे, जिनसे घरों का किनारे से सीधा सम्बन्ध था। काकू निःशब्द अपने सबसे निकटवर्ती पुल से नीचे होकर आगे बढ़ा। छिछले पानी में कठिनाई से मार्ग बनाता हुआ वह उस ओर बढ़ रहा था जहाँ वह पहरेदार की नजर से बचा रह सके। फिर वह पुल के नीचे से गुजर कर दूसरी ओर पहुँच गया। वहाँ लगभग गर्दन तक गहरा पानी था। एक लट्ठे के सहारे धीरे धीरे वह ऊपर चढ़ने लगा। बीच बीच में आहट लेने के लिये रुक जाता था। अन्त में वह इतनी ऊँचाई तक पहुँच गया जहाँ एक हाथ से वह फर्श के छोर को पकड़ने में सफल हो गया। तब उसने अपने आप को इतना ऊपर उठाया कि केवल उसकी आँखें ही फर्श से ऊपर निकली रहें। उसके चारों ओर अखंड निस्तब्धता का साम्राज्य व्याप्त था— अखंड मौन एवं गहन अंधकार। रेलिंग को पकड़कर उसने अपने शरीर को उठाना जारी रखा। उसका एक घुटना ऊपर के फर्श पर जा टिका। फिर उसने अपने शरीर के शेष भाग को भी ऊपर चढ़ा लिया और रेंगता हुआ दीवार की छाया में छिप गया।

'यहाँ सावधानी के साथ कुछ मिनटों तक वह आहट लेता रहा। अन्दर से कई सोनेवालों के गहरे साँसों की आवाजें आ रही थीं, उसके सिर के ऊपर कुछ खुला हुआ था— एक खिड़की। काकू अन्दर झाँकने के लिये खिड़की पर चढ़ गया। अन्दर गहन अन्धकार था। मातुल की असफल खोज लगाने के लिये उसने अन्दर की वायु को सूँघा ताकि यदि मातुल अन्दर हो तो उसकी सुपरिचित गन्ध उसकी नाक में घुस सके। किन्तु यदि मातुल अन्दर होती तो उसकी मीठी सुगन्ध पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों की गन्ध एवं अधकमाये चमड़े की दुर्गन्ध को जिस पर वे लोग सोये हुये थे, अपने में डुबो उस तक अवश्य पहुँच जाती।

फिर भी दृढ़ निश्चय कर लेने का एक ही उपाय शेष था— वह झोंपड़ी के अन्दर प्रविष्ट हो जाये। लकड़बग्घे के समान निःशब्द पाँवों से वह खिड़की के द्वारा अन्दर प्रविष्ट हो गया। सोनेवालों से फर्श लगभग पूरा भरा हुआ था। वह प्रत्येक के ऊपर झुक कर अपने शक्तिशाली नथुनों से अंधी खोज करने लगा, जहाँ कि आँखें खोज करने में एकदम असमर्थ थीं। उसने घूम-घूम कर कमरे में खोज की और जब उसे निश्चय हो गया कि मातुल उस कमरे में नहीं है, उसी समय दरवाजे पर एक मानव आकृति प्रकट हुई। वह आकृति सन्तरी की थी। दरवाजे से दो गज के फासले पर ही काकू था, वह एकदम दीवार से सट गया। सन्तरी किस कारण से अन्दर आया है? क्या वह झोंपड़ी में होनेवाली हलचल से सचेत हो गया है? काकू चाकू को हाथ में पकड़े प्रतीक्षा करता रहा। वह मनुष्य दरवाजे में प्रविष्ट होने के पश्चात् रुक गया।

"थाच!" उसने आवाज दी। सोनेवालों में से एक हड़बड़ा कर उठ बैठा।

"एँ", वह बुदबुदाया।

"चलो, पहरा दो। अब तुम्हारी बारी है।" सन्तरी ने उत्तर दिया।

"अच्छा," सोनेवाले ने उत्तर दिया। सन्तरी घूमा और झोंपड़ी से बाहर हो गया।

काकू को उसके उठने एवं शस्त्र संभालने की आवाजें सुनाई पड़ रहीं थीं, जिसे थाच कह कर सम्बोधित किया गया था। उसने पैरों में सैण्डिल पहने; अपना लंगोट ठीक कसा। पहरा देने की अपनी बारी के लिये वह एकदम तैयार हो चुका था। ये आवाजें सुनते हुए काकू के मस्तिष्क में एक खतरनाक योजना का सूत्रपात हुआ। उसने अपने चाकू को और भी अधिक कसकर पकड़ लिया, और दृढ़ता से कमरे में उस ओर बढ़ चला जहाँ थाच खड़ा था।

"शी!" उसने अस्पष्ट शब्दों में कहा। "थाच, आज रात मैं तुम्हारे स्थान पर पहरा दूँगा।'

"क्या ?" नींद में बोझिल व्यक्ति ने प्रश्न किया।

"मैं तुम्हारे स्थान पर पहरा दूंगा," काकू ने दुहराया। "मुझे आज —— से मिलना है," और उसने अस्पष्ट भाषा में कोई भी नाम कह डाला। "वह कह रही थी कि दूसरे पहरे के दौरान में वह मुझ से मिलने आयेगी।"

काकू केवल याव की हँसी सुन सका।

"मुझे अपने कपड़े दे दो," काकू ने कहा, "ताकि सब यही समझें कि पहरे पर तुम ही हो।" उसने बैल के सींगों से सुसज्जित खाल के लिये हाथ आगे बढ़ा दिया।

याव ने उसे अपने कपड़े पकड़ा दिये। वह अत्यन्त प्रसन्न था कि वह पुनः उस मीठी नींद का आनन्द ले सकेगा, जिसे उसके साथी ने भंग कर दिया था। काकू ने बैल के सिर के खोखले को अपने सिर पर चढ़ा लिया। खोल कवच के समान प्रतीत हो रहा था, और उस खोल से सम्बन्धित शेष भाग उसके सम्पूर्ण शरीर को अपनी छाया में छिपाने में सहायक सिद्ध हो रही थी। काकू झोंपड़ी के आगे निकले जंगले पर आ गया। दूसरा सन्तरी अपने सहायक के आने की बड़ी बेचैनी से प्रतीक्षा कर रहा था। उसे देखते ही वह फौरन पुल गया और झील के मध्य में कुछ दूर पर स्थित दूसरी झोंपड़ियों की ओर चल दिया। इस अकेले पुल के द्वारा केवल सात झोंपड़ियाँ ही किनारे से सम्बन्धित थीं। काकू तट से सबसे समीप की झोंपड़ी में प्रविष्ट हुआ।

बँदी कौन सी झोंपड़ी में है ? क्या वह इन्हीं झोंपड़ियों में से किसी एक में है। यह सम्भव है कि उसे गाँव के दूसरी ओर वाली झोंपड़ी में स्थानान्तरित कर दिया गया हो। काकू को इस बात का पूर्ण विश्वास था कि सर्वप्रथम वे इन्हीं झोंपड़ियों की ओर आये थे—उसने उन्हें युवती के साथ इस पुल को पार करते हुए देखा था। उसे यदि वहाँ से बाद में ... जगह पहुँचा दिया गया हो, तो उसे इसका किंचित् भी ज्ञान नहीं ... और होने के पूर्व वह लड़की को तलाश नहीं कर लेता है, तो उस ... निकल भागने के प्रत्येक मार्ग में ताला पड़ जायगा। इसके ...

ही दूसरी खतरनाक योजना का सूत्रपात करना होगा जैसी कि वह थाच के साथ अभी कर चुका है। ज़िन्दगी है भी क्या, छोटी-बड़ी आकस्मिकताओं की एक लड़ी। पहले भी उसे संकटों से लड़ना पड़ा है, एक संकट वह और उठा लेगा।

वह पुनः झोंपड़ी में प्रविष्ट हुआ और ज़ोर ज़ोर से पाँव रखता हुआ थाच की ओर बढ़ा। झुककर, उसने सोते हुए थाच को कंधा हिलाकर जगाया। थाच ने अपनी आँखें खोल दीं।

"क़ैदी कौन सी जगह है ?" काकू ने पूछा। उसके मुख से गुहा निकलने ही को था जब उसे गीगा के मुख से सुना घास फूस और खाल से बने उस झोंपड़े का गुहा के स्थान पर दूसरा नाम याद आ गया। किन्तु उसे उस पर विश्वास नहीं था कि ग्वाले उस शब्द का प्रयोग करते होंगे। इसलिये वह उसका भी प्रयोग करने से हिचक रहा था। अतः उसने ऐसे शब्द का प्रयोग किया, जिसका अर्थ साधारणतः वही था कि क़ैदी किस झोंपड़ी में है।

"आख़िरी वाली में ही तो है," नींद में डूबे थाच ने उत्तर दिया।

काकू अगला प्रश्न पूछने की हिम्मत नहीं कर सका। आख़िरी वाली का मतलब इस ओर की झोंपड़ियों में अन्तिम झोंपड़ी से हो सकता है, तथा गाँव के आखिरी भाग से भी; और काकू यह नहीं जानता था, कि गाँव में आख़िरी वाली झोंपड़ी उस स्थान से, जहाँ वह खड़ा हुआ था, उत्तर या दक्षिण में किस ओर हो सकती है। तब ही उसे मालूम हुआ कि अन्धकार को चीरती हुई उस मनुष्य की आँखें उसे ग़ौर से घूर रही हैं। काकू उठा और दरवाज़े की ओर बढ़ चला। क्या उस आदमी को सन्देह हो चुका है? क्या काकू हद से बहुत बाहर निकल चुका है ?

थाच अपने बिछौने पर एकदम उठकर बैठ गया और उस लौटती हुई आकृति को देखता रहा— उसके मूढ़ मस्तिष्क में प्रश्नों का अन्तर्द्वन्द्व चल रहा था। यह मनुष्य कौन था ? वह उसे जानता अवश्य होगा किन्तु फिर भी किसी प्रकार उसकी आवाज़ को नहीं पहचान सका। उसने यह प्रश्न क्या

किया था कि क़ैदी कहाँ रखा गया है ? गाँव का प्रत्येक व्यक्ति इस बात को भली-भाँति जानता है। याच परेशान हो उठा। उसे किसी चीज पर दिमाग लगाना एकदम बकवास लगता था। उसने खड़ा होना शुरू किया। ओह ! कितनी मीठी नींद आ रही थी ! सन्देह करने से क्या लाभ ? वास्तव में सब कुछ ठीक हो चल रहा है। वह पुन. अपने बैल के खाल के बिछौने पर लेट गया।

बाहर आकर काकू किनारे की ओर बढ़ा और सुरक्षा-अग्नि को तेज किया। फिर वह पुल को पार कर लौट आया। जंगले के साथ साथ तेजी से वह अनेक झोंपड़ियों को पीछे छोड़ता गया और फिर उन सात के समूह में से अन्तिम के सम्मुख आकर ठहर गया। दरवाजे के बाहर खड़े होकर उसने आहट ली और साथ ही चुपचाप अन्दर की वायु को सूंघा। उसकी सुदृढ़ शरीर रचना में एकदम प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। उसका हृदय अत्यन्त तीव्रता से धड़कता हुआ गले तक आगया— मातुल अन्दर थी।

देहरी पार कर वह अन्दर आ गया। झोंपड़ी काफी छोटी थी। मातुल के अतिरिक्त कोई अन्य मानव गन्ध उसके फेफड़ों में प्रविष्ट नहीं हुई। तब तो उसे अकेली ही होना चाहिये। काकू, हाथ और पैरों से टोहता हुआ अंधकार को चीरता आगे बढ़ा। उसके सशक्त नथुनों ने उसका पथ प्रदर्शन किया और अन्त में वह वहाँ पहुँच गया, जहाँ झोंपड़ी के अन्तिम कोने में दृढ़तापूर्वक बन्धी मातुल पड़ी हुई थी।

वह मातुल के ऊपर झुक गया। मातुल निद्रा में मग्न थी। काकू ने अपना एक हाथ उसके कन्धे पर रखा और जैसे ही उसे उसके जागने का अनुभव हुआ उसने अपने दूसरे हाथ की हथेली को उसके मुँह पर रख दिया और फिर झुक कर अपने मुँह को उसके कान के निकट ले जाकर धीरे से कहा कि वह जरा भी शोर न मचाये।

मातुल ने अपनी आँखें खोल दी और कुनमुनाई।

"श श""," काकू ने चुप रहने का संकेत किया। "मैं हूँ, नानू का पुत्र !

काकू ।" यह कहने के साथ काकू ने अपना हाथ उसके मुँह से हटा लिया और उसे सहारा देकर बैठने की स्थिति में ले आया। वह स्वयं उसके समीप घुटनों के बल बैठ गया। उसने अपनी बाँहें उसकी कमर में डाल दीं और उसके होठों पर ढाढस के शब्द उभर आये। किन्तु मातुल ने उसे धक्का देकर दूर हटा दिया।

"तुम यहाँ क्यों आये हो ?" उसने शुष्कता से पूछा।

काकू यह सुन विस्फारित हो मूर्तिवत् बैठा रहा।

"मैं तुम्हें बचाने आया हूँ," उसने बुदबुदाते स्वर में कहा। "तुम्हें वापिस ब्रह्मपुत्र नदी के उस पार उन चट्टानों पर ले जाने के लिये आया हूँ जहाँ हमारी जाति के लोग रहते हैं।"

"चले जाओ," मातुल ने उत्तर दिया। "अपनी औरत के पास वापिस चले जाओ।"

"मातुल !" काकू ने आश्चर्य से कहा। "क्या बात है ? तुम इतनी बदल क्यों गई हो ? क्या तुम्हें विकार उत्पन्न हो गया है— क्योंकि तुम न जाने कैसी बहकी बहकी बातें कर रही हो— ऐसा विकार जो अपने शिकार के मस्तिष्क को बदल कर बनमानुष के मस्तिष्क के समरूप कर देता है ? काकू के दिल में भू की पुत्री मातुल के अतिरिक्त और कोई औरत नहीं है।"

"नहीं, तुम्हारे दिल में गीगा, वह अजनबी औरत, बसी हुई है," फफक फफक कर रोते हुए मातुल बोली। "मैंने उसे तुम्हारी बाँहों में देखा था। मैंने तुम्हारे होठों को उसके होठों से मिलते हुए देखा था। और तब मैं भाग खड़ी हुई थी। उसके पास वापिस लौट जाओ। मैं मरना चाहती हूँ।"

काकू ने मातुल का हाथ कस कर पकड़ लिया।

"तुमने जो कुछ देखा, वह ठीक था, मातुल," वह बोला। "किन्तु तुमने नहीं सुना जब मैंने गीगा से कहा था कि मैं केवल मातुल ही से प्रेम करता हूँ। तुमने मुझे उसकी बाँहों से निकलते हुए नहीं देखा। फिर मैंने तुम्हें दूर से

देखा, और साथ ही ग्वालों द्वारा तुम्हें बन्दी बनाये जाते हुए भी देखा। और तब मैंने उस अजनबी औरत की ओर मुंह कर भी नहीं देखा। तुम्हें पकड़कर ले जाने वालों के पीछे मैं दौड़ पड़ा। मैंने अपने को किनारे पर उस समय तक छिपाये रखा जब तक अंधकार ने अपनी काली चादर में सब कुछ छिपा नहीं लिया। मातुल, यदि तुम्हें मुझ पर सन्देह हो गया है तो यहां मेरी उपस्थिति ही मेरे प्रेम की सत्यता को प्रकट कर देगी। आह, मातुल! मातुल! तुम अपने काकू के प्रेम पर सन्देह कैसे कर रही हो?"

युवती ने उसके कथन की यथार्थता का शब्दों के साथ साथ हाव भावों में भी अनुभव किया। यदि वह उसे झुठला भी रहा था तो भी वह विश्वास कर लेती— उसके द्वारा कहे गये उन शब्दों को सुनने की ही उसकी लालसा अत्यन्त तीव्र थी। प्रसन्नता एवं आराम की हलकी सी उच्छ्वास लेकर उसने अपने कपोलों को काकू के हाथों में छिपा दिया और तब ही काकू ने उसे अपने अङ्क में भर लिया। इस भाव-प्रदर्शन के लिये वे केवल एक ही मिनट व्यय कर सके— परिस्थितियों की विषमताओं की पुकार ने उन्हें फौरन एवं शीघ्र ही कदम उठाने के लिये विवश कर दिया। पुकार कितनी महत्वपूर्ण थी काकू तब ही इसका अनुमान लगा सकता था यदि वह उस झोपड़ी में झांक लेता जहां बैल की खाल के बिछौने पर लेटा याच आंखें फाड़े पड़ा हुआ था।

याच का मूढ़ मस्तिष्क बार बार उस व्यक्ति के आगमन पर दुर्विचारों से भर रहा था जो अभी अभी कैदी के विषय में पूछ कर गया था। वह एकदम विचित्र था, और याच अधिक से अधिक सयत हो इस पर जितना भी अधिक सोचता गया उतना ही वह उसे जटिल एवं रहस्यपूर्ण प्रतीत होता गया, क्योंकि उस अजनबी की वह विचित्र प्रार्थना एवं हाव भाव एक विचित्र रहस्यमयी परिस्थिति का सूत्रपात कर रहे थे।

याच उठ बैठा। उसे अकस्मात् अनुभव हुआ कि यदि उसके जरा से आलस्य एवं भूल से उसकी जाति को कहीं कुछ हो गया, तो उसकी क्या दशा होगी— प्रारम्भिक समाज के नियम जितने कठोर एवं वीभत्स होते थे, उनसे

काकू।" यह कहने के साथ काकू ने अपना हाथ उसके मुँह से हटा लिया और उसे सहारा देकर बैठने की स्थिति में ले आया। वह स्वयं उसके समीप घुटनों के बल बैठ गया। उसने अपनी बाँहें उसकी कमर में डाल दीं और उसके होठों पर ढाढस के शब्द उभर आये। किन्तु मातुल ने उसे धक्का देकर दूर हटा दिया।

"तुम यहाँ क्यों आये हो?" उसने शुष्कता से पूछा।

काकू यह सुन विस्फारित हो मूर्तिवत् बैठा रहा।

"मैं तुम्हें बचाने आया हूँ," उसने बुदबुदाते स्वर में कहा। "तुम्हें वापिस ब्रह्मपुत्र नदी के उस पार उन चट्टानों पर ले जाने के लिये आया हूँ जहाँ हमारी जाति के लोग रहते हैं।"

"चले जाओ," मातुल ने उत्तर दिया। "अपनी औरत के पास वापिस चले जाओ।"

"मातुल!" काकू ने आश्चर्य से कहा। "क्या बात है? तुम इतनी बदल क्यों गई हो? क्या तुम्हें विकार उत्पन्न हो गया है– क्योंकि तुम न जाने कैसी बहकी बहकी बातें कर रही हो— ऐसा विकार जो अपने शिकार के मस्तिष्क को बदल कर वनमानुष के मस्तिष्क के समरूप कर देता है? काकू के दिल में भू की पुत्री मातुल के अतिरिक्त और कोई औरत नहीं है।"

"नहीं, तुम्हारे दिल में गीगा, वह अजनबी औरत, बसी हुई है," फफक फफक कर रोते हुए मातुल बोली। "मैंने उसे तुम्हारी बाँहों में देखा था। मैंने तुम्हारे होठों को उसके होठों से मिलते हुए देखा था। और तब मैं भाग खड़ी हुई थी। उसके पास वापिस लौट जाओ। मैं मरना चाहती हूँ।"

काकू ने मातुल का हाथ कस कर पकड़ लिया।

"तुमने जो कुछ देखा, वह ठीक था, मातुल," वह बोला। "किन्तु तुमने नहीं सुना जब मैंने गीगा से कहा था कि मैं केवल मातुल ही से प्रेम करता हूँ। तुमने मुझे उसकी बाँहों से निकलते हुए नहीं देखा। फिर मैंने तुम्हें दूर से

देखा, और साथ ही ग्वालों द्वारा तुम्हें बन्दी बनाये जाते हुए भी देखा। और तब मैंने उस अजनबी औरत की ओर मुड़ कर भी नहीं देखा। तुम्हें पकड़कर ले जाने वालों के पीछे मैं दौड़ पड़ा। मैंने अपने को किनारे पर उस समय तक छिपाये रखा जब तक अंधकार ने अपनी काली चादर में सब कुछ छिपा नहीं लिया। मातुल, यदि तुम्हें मुझ पर सन्देह हो गया है तो यहाँ मेरी उपस्थिति ही मेरे प्रेम की सत्यता को प्रकट कर देगी। आह, मातुल! मातुल! तुम अपने काकू के प्रेम पर सन्देह कैसे कर रही हो?"

युवती ने उसके कथन की यथार्थता का शब्दों के साथ साथ हाव भावों में भी अनुभव किया। यदि वह उसे झुठला भी रहा था तो भी वह विश्वास कर लेती— उसके द्वारा कहे गये उन शब्दों को सुनने की ही उसकी लालसा अत्यन्त तीव्र थी। प्रसन्नता एवं आराम की हलकी सी उच्छ्वास लेकर उसने अपने कपोलों को काकू के हाथों में छिपा दिया और तब ही काकू ने उसे अपने अङ्क में भर लिया। इस भाव-प्रदर्शन के लिये वे केवल एक ही मिनट व्यय कर सके— परिस्थितियों की विषमताओं की पुकार ने उन्हें फौरन एवं शीघ्र ही कदम उठाने के लिये विवश कर दिया। पुकार कितनी महत्वपूर्ण थी काकू तब ही इसका अनुमान लगा सकता था यदि वह उस झोपड़ी में झांक लेता जहाँ बैल की खाल के बिछौने पर लेटा थाच आँखें फाड़े पड़ा हुआ था।

थाच का मूढ़ मस्तिष्क बार बार उस व्यक्ति के आगमन पर दुर्विचारों से भर रहा था जो अभी अभी कैदी के विषय में पूछ कर गया था। वह [illegible] विचित्र था, और थाच अधिक से अधिक संयत हो इस पर जितना ही [illegible] सोचता गया उतना ही वह उसे जटिल एवं रहस्यपूर्ण प्रतीत होता [illegible] क्योंकि उस अजनबी की वह विचित्र प्रार्थना एवं हाव भाव [illegible] रहस्यमयी परिस्थिति का सूत्रपात कर रहे थे।

थाच उठ बैठा। उसे अकस्मात् अनुभव हुआ कि [illegible] आलस्य एवं भूल से उसकी जाति को कहीं कुछ हो गया, [illegible] होगी— प्रारम्भिक समाज के नियम जितने कठोर एवं [illegible]

कहीं अधिक भयंकर एवं भयावह उनके उल्लंघन का परिणाम होता था। इस विचार से सचेत हो, वह एकदम उछलकर खड़ा हो गया। अपने कंधों को ढकने के लिये उसने खाल को तलाश करने की प्रतीक्षा नहीं की। उसने झपट कर अपने शस्त्रों को उठा लिया और दौड़ता हुआ कमरे के बाहर जंगले के फर्श पर आ गया। एक तीव्र दृष्टि ने उसे वास्तविकता समझा दी। वहाँ कोई खड़ा हुआ नहीं था जहाँ कि सन्तरी को खड़ा होना चाहिये था। कैदी के स्थान के विषय में किये गये अजनबी के प्रश्न की याद उसे फिर हो आई, और अपना मुंह उस दिशा की ओर कर दिया।

निःशब्दता एवं शीघ्रता के साथ दौड़ता हुआ वह तेजी से उस झोंपड़ी की ओर झपटा, जिसमें मातुल को कैद किया हुआ था। जैसे ही काकू झोंपड़ी से बाहर निकला, वैसे ही उसे अपने सिर पर आता हुआ एक नंगा बहादुर दिखाई दिया। काकू और उसके पीछे लड़की को देखकर थाच गांव भर को सचेत करने के लिये जोर से चिल्ला उठा। उसका भालेवाला हाथ तेजी से पीछे की ओर गया। किन्तु उसके साथ साथ ही नानू के पुत्र काकू का भी भाले वाला हाथ विद्युत वेग से पीछे की ओर गया। दो शस्त्र एक साथ चले और उसी क्षण मातुल, काकू और थाच भालों के घातक प्रहारों से बचने के लिये फर्श पर लेट गये। दोनों भाले उनके ऊपर से सर्राते हुए निकल गये। तब दोनों कुल्हाड़ों को ऊपर उठाये हुए एक दूसरे की ओर झपट पड़े।

थाच की चीत्कार के प्रत्युत्तर में प्रत्येक दरवाजे से मनुष्य निकलते हुए चले आ रहे थे। काकू अपने विपक्षी के निकट आने की प्रतीक्षा नहीं कर सकता था। एक ही तेज प्रहार से वह अपने कुल्हाड़े के परित्याग के साथ साथ भिड़न्त के भय से मुक्त हो सकता था। उसके कंधे के पीछे उसका कुल्हाड़े वाला हाथ एक क्षण के लिये रुका, फिर आगे की ओर झपटा और उस भारी शस्त्र को एकदम ढीला छोड़ दिया। तोप के गोले की तेजी एवं शक्ति के समान पत्थर का वह बेडौल शस्त्र हवा को चीरता हुआ अपनी पूर्ण शक्ति के साथ थाच के चेहरे को कुचलता एवं रक्तिम बनाता हुआ जा लगा।

जैसे ही झील निवासी शस्त्र की ठोकर से गिरा, वैसे ही उसके प्राण-

रखेंह तन-पिंजरा खाली कर गये। काकू मातुल का हाथ पकड़ कर झोंपड़ियों के उस अंधकारमय कोने की ओर खींच कर ले गया जो शस्त्रों की घनघनाहट एवं चीत्कारों के साथ आगे बढ़ते हुए बहादुरों की नजर से एकदम दूर था। जंगले के अन्त पर पहुँच कर काकू ने मातुल को पकड़ लिया और उसे दोनों हाथों से उठा कर नीचे झील के पानी में उतार दिया, और फिर स्वयं भी झपट कर नीचे उतर आया।

तेज़ी से दो चार हाथ मार कर वे गाँव के नीचे आ गये, और जब वे नीचे ही नीचे किनारे की ओर बढ़े तब उनके कानों में ऊपर तलाश करने वालों के इधर उधर भटकने की आवाज़ पड़ी। अब तक सम्पूर्ण गाँव में जाग हो चुकी थी और कोलाहल में कानों पड़ा कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था। जैसे ही वे दोनों पानी से निकल कर किनारे पर आये उसी क्षण उन लोगों की नज़र उन पर जा पड़ी जो उनके अत्यन्त निकट थे। फौरन ही पुल उन भी बहादुरों के पाँव से कुचले जाने पर चीत्कार कर उठा जो भगोड़ों को पकड़ने के लिये उस पर से गुज़र रहे थे।

उन दोनों के सामने प्रारम्भिक युग की रात्रि के भय थे। और उनके पीछे उन जंगली शत्रुओं के हाथों में पड़ जाने पर उससे कुछ कम भय नहीं था। एक भाकू के अतिरिक्त वे एकदम निहत्थे थे, और उसके बल-बूते पर रुकना एवं लड़ना बिल्कुल निरर्थक था। आगे बढ़ने में ही क्षीण आशा निहित थी। शायद उन्हें जंगल में जीवित पहुँचने एवं पेड़ पर चढ़ने का उससे पूर्व ही अवसर मिल जाये कि कोई मनुष्य या हिंसक पशु पीछे से आकर उन्हें पकड़ सके।

काकू और मातुल दोनों ही हवा की तेजी से भागने वाले थे। उनके सामने झील-निवासी कछुए की चाल के समान थे। पाँच मिनट में ही फासला बहुत हो गया। झील-निवासियों को यह भय खाये जा रहा था कि पीछा करते करते कहीं वे अधिक दूर न जा निकलें जहाँ पहुँच कर वे अपने से अधिक शक्तिशाली शत्रुओं के पंजे में पड़ जायें। अतः पीछा करने का इरादा छोड़ वे पुनः झील की सतह पर स्थित अपने घरों में वापिस लौट आये।

भाग्य काकू और मातुल का साथ दे रहा था जैसा हमेशा ही वह उद्यमी पुरुषों का साथ देता चला आया है। वे पठार के छोर पर स्थित जंगल में किसी भयावह बिल्ली जाति के जीव द्वारा पीछा किये बिना ही पहुँच गये। वहां उन्हें एक पेड़ का खोखला मिल गया, जिसमें बैठ कर वे भोर होने की प्रतीक्षा करने लगे। उषा की लालिमा छा जाने पर उन्होंने पुनः उन चट्टानों की ओर बढ़ना शुरू कर दिया जिन्हें पार कर ही वे नदी के तट पर पहुँच सकते थे। गीगा की समस्या को उन दोनों ने आपस में तय कर लिया था— वे उसे अपनी जाति में चलने के लिये कहेंगे जहां वह स्वेच्छा से जब तक चाहे सुरक्षित रह कर अपना जीवन गुजार सकती है।

जब काकू और मातुल चट्टान की तलहटी में पहुँचे, उस समय दिन का प्रकाश फैल चुका था। चट्टान की चोटी से, दो धूर्त आँखें घास के पर्दे के पीछे से उन्हें देख रही थीं। देखने वाले ने एक पुरुष और एक नारी को देखा और उन दोनों को पहचान गया। वे दोनों मानव आकृतियां ऊपर चढ़ रही थीं— उसे कुछ देर और प्रतीक्षा करनी होगी।

काकू और मातुल आसानी से ऊपर चढ़ते रहे। जब वे धरातल और ... की दूरी के मध्य में पहुँचे, तब मनुष्य ने छिपना छोड़, उन दोनों से मिलने के लिये नीचे उतरना शुरु कर दिया। उसकी अनभ्यस्तता से एक पत्थर लुढ़क पड़ा जिससे नीचे वालों को उसकी उपस्थिति का ज्ञान हो गया। काकू और मातुल ने एकदम ऊपर की ओर देखा।

"शूर!" मातुल ने भयमिश्रित चीत्कार करते हुए कहा।

"शूर!" काकू भी कह उठा, और दुगुनी शक्ति से ऊपर चढ़ने लगा।

"तुम निहत्ये हो," मातुल ने उसे संकेत किया। "और फिर वह तुम से ऊपर भी है। उसे प्रत्येक साधन उपलब्ध है।"

किन्तु गुहा-निवासी अपने उस प्रतिद्वन्द्वी से दो-दो हाथ करने के लिये अतीव आतुर था, क्योंकि मातुल को जिन-जिन परेशानी एवं कठिनाइयों से गुज़रना पड़ा था, उसका उत्तरदायित्व उसी पर था। उसने कमर से अपना

चाकू निकाल लिया और उसे किसी भी क्षण प्रयोग में लाने के लिये मुँह में दबा कर ऊपर चढ़ना जारी रखा। बिल्ली के समान वह सीधी चट्टान पर चढ़ता गया। उसके ठीक पीछे उसकी मधुर एवं जंगली मानुस चली आ रही थी। उसके सफेद मजबूत दाँतों के बीच उसका चाकू दबा हुआ था। धूर अभी-अभी एक गुहा के आगे स्थित उभरे हुये भाग पर आ लगा था। चट्टान के उस भाग पर एक या दो टन वजनी बड़ा पत्थर अधर पड़ा हुआ था, जो अपने साथ बरबादी के देवता को छिपाये हुए था। धूर ने उसे गौर से निहारा। उसके लुढ़कने के मार्ग के ठीक नीचे ही काकू और मानुस ऊपर चढ़ रहे थे। एक क्षण के लिये धूर के हृदय में उन सम्भावनाओं ने घर कर लिया जो उस भारी पत्थर के लुढ़कने पर घटित हो सकती थीं। वह कूद कर उसके पीछे जा खड़ा हुआ, अपने पाँवों को उससे विपरीत दिशा में रख अपनी पीठ के सहारे उसे धक्का लगाने लगा। पत्थर झुका और धीरे-धीरे हिलने लगा। काकू ने ख़तरा समीप समझ बचने के लिये स्थान ढूंढने को अपने दांये बांये देखा, किन्तु भाग्य शत्रु का साथ दे रहा था। उस स्थान के अतिरिक्त जहाँ वे खड़े हुए थे वहाँ निकट ही पैर टेकने के लिए कोई स्थान नहीं था। उन्होंने अपने ऊपर चढ़ने के प्रयत्नों को दुगुना कर दिया जिससे धूर द्वारा पत्थर लुढ़काये जाने के पूर्व ही वे ऊपर पहुंच जायें।

धूर ने दुगुनी शक्ति से पत्थर को उन पर लुढ़काने के लिये प्रयास शुरू कर दिया। उसने अपनी स्थिति बदल दी। अब वह अपने कंधे के सहारे, एक हाथ और दोनों पाँवों को जमीन में गड़ाकर उसे लुढ़काने का प्रयत्न कर रहा था। वह बार-बार उसमें धक्के लगा रहा था। और जैसे ही वह पत्थर किंचित् भी हिलता था, वैसे ही उसके नीचे ऊपर चढ़ने वालों का दिल काँप उठता था। पत्थर किसी भी क्षण वह नीचे लुढ़क सकता था।

उस समय धूर के पीछे गुहा से एक औरत बाहर निकली। धकारण होने वाली आवाजों से उसकी नींद टूट गई थी। आने वाली गोगा थी। एक ही नजर में सारा माजरा उसकी समझ में आ गया। उसने काकू और उसके

भाग्य काकू और मातुल का साथ दे रहा था जैसा हमेशा ही वह उद्यमी पुरुषों का साथ देता चला आया है। वे पठार के छोर पर स्थित जंगल में किसी भयावह बिल्ली जाति के जीव द्वारा पीछा किये बिना ही पहुँच गये। वहां उन्हें एक पेड़ का खोखला मिल गया, जिसमें बैठ कर वे भोर होने की प्रतीक्षा करने लगे। उषा की लालिमा छा जाने पर उन्होंने पुनः उन चट्टानों की ओर बढ़ना शुरू कर दिया जिन्हें पार कर ही वे नदी के तट पर पहुँच सकते थे। गीगा की समस्या को उन दोनों ने आपस में तय कर लिया था— वे उसे अपनी जाति में चलने के लिये कहेंगे जहां वह स्वेच्छा से जब तक चाहे सुरक्षित रह कर अपना जीवन गुज़ार सकती है।

जब काकू और मातुल चट्टान की तलहटी में पहुँचे, उस समय दिन का प्रकाश फैल चुका था। चट्टान की चोटी से, दो धूर्त आँखें घास के पर्दे के पीछे से उन्हें देख रही थीं। देखने वाले ने एक पुरुष और एक नारी को देखा और उन दोनों को पहचान गया। वे दोनों मानव आकृतियां ऊपर चढ़ रही थीं— उसे कुछ देर और प्रतीक्षा करनी होगी।

काकू और मातुल आसानी से ऊपर चढ़ते रहे। जब वे धरातल और चोटी की दूरी के मध्य में पहुँचे, तब मनुष्य ने छिपना छोड़, उन दोनों से मिलने के लिये नीचे उतरना शुरु कर दिया। उसकी अनभ्यस्तता से एक पत्थर लुढ़क पड़ा जिससे नीचे वालों को उसकी उपस्थिति का ज्ञान हो गया। काकू और मातुल ने एकदम ऊपर की ओर देखा।

"शूर!" मातुल ने भयमिश्रित चीत्कार करते हुए कहा।

"शूर!" काकू भी कह उठा, और दुगुनी शक्ति से ऊपर चढ़ने लगा।

"तुम निहत्थे हो," मातुल ने उसे संकेत किया। "और फिर वह तुम से ऊपर भी है। उसे प्रत्येक साधन उपलब्ध है।"

किन्तु गुहा-निवासी अपने उस प्रतिद्वन्द्वी से दो-दो हाथ करने के लिये अतीव आतुर था, क्योंकि मातुल को जिन-जिन परेशानी एवं कठिनाइयों से गुज़रना पड़ा था, उसका उत्तरदायित्व उसी पर था। उसने कमर से अपना

चाकू निकाल लिया और उसे किसी भी क्षण प्रयोग में लाने के लिये मुँह में दबा कर ऊपर चढ़ना जारी रखा। बिल्ली के समान वह सीधी चट्टान पर चढ़ता गया। उसके ठीक पीछे उसकी मधुर एवं जंगली मातुल पत्नी आ रही थी। उसके सफेद मजबूत दाँतों के बीच उसका चाकू दबा हुआ था। घूर अभी-अभी एक गुहा के आगे स्थित उभरे हुये भाग पर आ लगा था। चट्टान के उस भाग पर एक या दो टन वजनी बड़ा पत्थर अधर पड़ा हुआ था, जो अपने साथ बरबादी के देवता को छिपाये हुए था। घूर ने उसे गौर से निहारा। उसके लुढ़कने के मार्ग के ठीक नीचे ही काकू और मातुल ऊपर चढ़ रहे थे। एक क्षण के लिये घूर के हृदय में उन संभावनाओं ने घर कर लिया जो उस भारी पत्थर के लुढ़कने पर घटित हो सकती थीं। वह कूद कर उसके पीछे जा खड़ा हुआ, अपने पाँवों को उससे विपरीत दिशा में रख अपनी पीठ के सहारे उसे धक्का लगाने लगा। पत्थर झुका और धीरे-धीरे हिलने लगा। काकू ने खतरा समीप समझ बचने के लिये स्थान ढूँढने को अपने दांये बांयें देखा, किन्तु भाग्य शत्रु का साथ दे रहा था। उस स्थान के अतिरिक्त जहाँ वे खड़े हुए थे वहाँ निकट ही पैर टेकने के लिए कोई स्थान नहीं था। उन्होंने अपने ऊपर चढ़ने के प्रयत्नों को दुगुना कर दिया जिससे घूर द्वारा पत्थर लुढ़काये जाने के पूर्व ही वे ऊपर पहुँच जायें।

घूर ने दुगुनी शक्ति से पत्थर को उन पर लुढ़काने के लिये प्रयत्न शुरू कर दिया। उसने अपनी स्थिति बदल दी। अब वह अपने कंधे के सहारे, एक हाथ और दोनों पाँवों को जमीन में गड़ाकर उसे लुढ़काने का प्रयत्न कर रहा था। वह बार-बार उसमें धक्के लगा रहा था। और जैसे ही वह पत्थर किंचित् भी हिलता था, वैसे ही उसके नीचे ऊपर चढ़ने वालों का दिल काँप उठता था। अपने किसी भी क्षण वह नीचे लुढ़क सकता था।

उस समय घूर के पीछे गुहा से एक औरत बाहर निकली। अकारण होने वाली आवाजों से उसकी नींद टूट गई थी। आने वाली गोगा थी। एक ही नजर में सारा माजरा उसकी समझ में आ गया। उसने काकू और =

भाग्य काकू और मातुल का साथ दे रहा था जैसा हमेशा ही वह उद्यमी पुरुषों का साथ देता चला आया है। वे पठार के छोर पर स्थित जंगल में किसी भयावह बिल्ली जाति के जीव द्वारा पीछा किये बिना ही पहुँच गये। वहां उन्हें एक पेड़ का खोखला मिल गया, जिसमें बैठ कर वे भोर होने की प्रतीक्षा करने लगे। उषा की लालिमा छा जाने पर उन्होंने पुनः उन चट्टानों की ओर बढ़ना शुरू कर दिया जिन्हें पार कर ही वे नदी के तट पर पहुँच सकते थे। गीगा की समस्या को उन दोनों ने आपस में तय कर लिया था— वे उसे अपनी जाति में चलने के लिये कहेंगे जहां वह स्वेच्छा से जब तक चाहे सुरक्षित रह कर अपना जीवन गुज़ार सकती है।

जब काकू और मातुल चट्टान की तलहटी में पहुँचे, उस समय दिन का प्रकाश फैल चुका था। चट्टान की चोटी से, दो धूर्त आँखें घास के पर्दे के पीछे से उन्हें देख रही थीं। देखने वाले ने एक पुरुष और एक नारी को देखा और उन दोनों को पहचान गया। वे दोनों मानव आकृतियां ऊपर चढ़ रही थीं— उसे कुछ देर और प्रतीक्षा करनी होगी।

काकू और मातुल आसानी से ऊपर चढ़ते रहे। जब वे धरातल और चोटी की दूरी के मध्य में पहुँचे, तब मनुष्य ने छिपना छोड़, उन दोनों से मिलने के लिये नीचे उतरना शुरु कर दिया। उसकी अनभ्यस्तता से एक पत्थर लुढ़क पड़ा जिससे नीचे वालों को उसकी उपस्थिति का ज्ञान हो गया। काकू और मातुल ने एकदम ऊपर की ओर देखा।

"शूर!" मातुल ने भयमिश्रित चीत्कार करते हुए कहा।

"शूर!" काकू भी कह उठा, और दुगुनी शक्ति से ऊपर चढ़ने लगा।

"तुम निहत्थे हो," मातुल ने उसे संकेत किया। "और फिर वह तुम से ऊपर भी है। उसे प्रत्येक साधन उपलब्ध है।"

किन्तु गुहा-निवासी अपने उस प्रतिद्वन्द्वी से दो-दो हाथ करने के लिये अतीव आतुर था, क्योंकि मातुल को जिन-जिन परेशानी एवं कठिनाइयों से गुज़रना पड़ा था, उसका उत्तरदायित्व उसी पर था। उसने कमर से अपना

थ मातुल को देखा। वह मनुष्य जिसे वह प्यार करती थी उस औरत के थ था जो उनके बीच में दीवार बनी हुई थी— जो हमेशा ही उनके बीच दीवार बनी रहेगी क्योंकि वह इस बात को समझ चुकी थी कि काकू कभी भी उसे प्यार नहीं कर सकेगा चाहे मातुल जीवित रहे अथवा मर जाय।

जैसे ही उसने यह देखा कि सफलता शूर का अभिषेक करने वाली है उसके अधरों पर मुस्कान खेल गई। अगले ही क्षण वह मनुष्य जिसने उसके प्रेम को ठुकराया था और वह औरत जिससे वह घृणा करती है उसकी सम्पूर्ण बर्बर ईर्ष्या की शक्ति में डूब गये। उसका अमानुषिक हृदय उनसे बदला ले के लिये मचल उठा। शूर के प्रयत्नों द्वारा चट्टान के नीचे वे लोग पिस क मर जायेंगे। यही उसका बदला होगा।

शूर! अपनी अधखुली पलकों से वह यकायक अपने सहवासी को देख उठी। शूर! उसने उसे यातनायें दी थीं! उसने उसका परित्याग कर दिया था! उसके कपोलों पर स्वप्रपीड़न की कालिमा छा गई। शूर! उसका सहवासी! उसके बच्चे का पिता!

वह विशाल पत्थर अपने स्थान से हिला। काकू और मातुल नीचे से ऊपर चढ़ रहे थे। काकू ने गीगा को देख लिया था। साथ ही उसने उसकी भावनाओं को भी स्पष्ट पढ़ लिया था। उससे सहायता की याचना करना एकदम व्यर्थ होगा। भूत काल का, उसके वास्तविक सहवासी के प्रति उसका सोया, पुरातन प्रेम पुनः जागृत हो उठा। शूर के विजयी होते ही वह उससे इस आशा से क्षमा मांग लेगी कि वह पुनः उसे अपना लेगा। काकू घृणा की उस शक्ति से भी अपरिचित नहीं था, जिसका बीज उसने उस नारी के हृद में उसके प्रेम को ठुकराकर बो दिया था।

अन्त वाले धक्के के समान दूसरा धक्का मृत्यु के समरूप उस विशा पत्थर को उन पर लुढ़का देने के लिये पर्याप्त होगा। गीगा अपने हाथों अपने अनावृत स्तनों में गड़ाये खड़ी रही। उसके नाखून उस मुलायम गो में उस समय तक गड़ते रहे जब तक कि ताम्रवर्ण त्वचा से रक्त धार न

उठी। उसके बच्चे का पिता! उसका बच्चा! ओह, वह कल्याणमयी वस्तु, जिसे वह किनारे पर स्थित झोंपड़ी में अपने हाथों से उजाड़ आई थी! उसका बच्चा– उसका मृत बच्चा! जिसकी मृत्यु का उत्तरदायित्व शूर और शूर की निर्दयता पर ही है!

शूर अन्तिम धक्का लगाने के लिये उद्यत हुआ। विजय की एक मुस्कान उसके होंठों पर फैल गई। उसकी पीठ गीता की ओर थी, अन्यथा वह कभी भी नहीं मुस्करा पाता। चाकू स्वयं भी उस चीज पर कभी नहीं मुस्कराता, जैसी उसने अपने सिर के ऊपर उस समय देखी थी— एक नारी का चेहरा जो क्रोध एवं रक्त-पिपासा से काला पड़ा हुआ था। गीता घातक चाकू को संभाले शूर की ओर झपटी। ऊपर उठा चाकू शूर की पीठ एवं छाती को चीरता हुआ पार निकल गया। वेदना से भयानक चीत्कार करता हुआ वह अपने घातक की ओर घूमा। जैसे ही उसकी आँखें उसके बच्चे की माँ के मुख पर पहुँच कर ठहरीं, वह जोर से चीख उठा और अपने होंठों पर चीख लिये ही वह चट्टान के उस उभरे भाग पर हमेशा के लिये ठंडा हो गया।

तब गीता ने अपना मुँह उन दोनों की ओर किया, जो तेजी से बढ़ते हुए उसके निकट आ रहे थे। काकू के होंठों पर धन्यवाद के शब्द उभर आये थे। किन्तु गीता उनसे मिलने के लिये एकदम चुप खड़ी हुई थी— हाथों में नंगा रक्त से रंगा चाकू लिये हुए। वह क्या करेगी? काकू और मातुन चकित हो रहे थे। किन्तु बचने का कोई उपाय नहीं था। चाकू लिये हुए केवल एक स्त्री उनकी स्वतंत्रता एवं घर लौट जाने के मार्ग में बाधा बन कर खड़ी हुई थी।

काकू लगभग उसके निकट पहुँच चुका था। गीता ने चाकू को अपने सिर के ऊपर हवा में उठाया। काकू अस्त्र पर एक ओर से आघात करने के लिये ऊपर उछला, ताकि निशाना चूक जाय और वह उसके हृदय में प्रविष्ट होने से रह जाय। किन्तु गीता ने उससे भी अधिक स्फूर्ति का परिचय दिया। चाकू का फल शरीर में जा धँसा लेकिन काकू के नहीं। गीता ने उस नुकीले

अपने ही हृदय में खूब गहरा घातक प्रहार किया था। उसी क्षण उछल कर वह काकू और मातुल से दूर नीचे कूद पड़ी। लुढ़कती अपने अस्तित्व को बिखेरती हुई वह चट्टान की तलहटी में जा गिरी।

उन आदि प्रेमियों के लिये मृत्यु की आकस्मिकता एवं भयानकता कोई अपरिचित एवं अद्भुत वस्तु नहीं थी। उन्होंने देखा कि गीगा मर चुकी है और शूर भी। काकू ने शूर के शस्त्रों को संभाला और उन्हें अपने साथ ले दोनों पाँव पर पांव रखते हुए किनारे की खोज में आगे बढ़ चले। कुछ कठिनाई एवं बाधाओं से जूझते हुये जो उनके असभ्य जीवन का एक अनिवार्य अंग थीं वे आखिरकार किनारे पर पहुँच ही गये। उन्हें नाव भी मिल गई, जिसने उन्हें उस पार की अपनी धरती पर पहुँचा दिया, और फिर सुरक्षित चट्टानों के बीच वे अपनी जाति से जा मिले। वहाँ प्रत्येक ने उनका हार्दिक एवं प्रसन्नता भरा स्वागत किया। वे लोग उन दोनों को मरा हुआ समझ चुके थे।

उसी रात को वे हाथ में हाथ डाले, व्योम पर विहँसते शशि की उल्लास-भरी छाया में विशाल ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे टहल रहे थे।

"जल्दी ही", काकू ने कहा, "मातुल नानू के पुत्र काकू की सहवासिनी बन जायगी। मेरे पिता नानू ने यही कहा है और मातुल तुम्हारे पिता भू का भी यही कथन है। नये चन्द्रमा के दिन हम दोनों को एक दूसरे का हमेशा के लिये सहवासी बना दिया जायगा।"

मातुल उससे बिल्कुल सट गई।

"मेरा काकू बड़ा ही प्रतापी है," वह बोली, "और साथ ही एक महान् शिकारी भी। किन्तु वह अभी तक ज़ालिम ऊ का सिर, जो मनुष्यों और अबोध बच्चों का नृशंस हत्यारा है, नहीं लाया है जिसके विषय में उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह उसका सिर मेरे पिता भू की गुहा के सामने लाकर डाल देगा।"

"काकू अगला दिन अनन्त से उभरने पर ऊ के शिकार को निकल पड़ेगा",

काडू ने शान्त भाव से उत्तर दिया। "वह पत्नी होने वाली महत्वाकांक्षिणी को उस समय तक शक्ल नहीं दिखायगा जब तक कि वह मनुष्य और अबोध बच्चों के नृशंस हत्यारे ऊ का सिर नहीं ले आयेगा।"

काडू की भाव भंगिमा देख, मानुष जोर से हँस उठी।

"मानुष तो केवल मजाक कर रही थी", वह बोली। "मेरे सहवासी ने अपने आपको ऊ के शिकारी से भी बड़ा सिद्ध कर दिया है। काडू, अब मुझे इस कटार-दन्ती चीते के सिर की आवश्यकता नहीं है। मुझे केवल तुम्हारी ही इच्छा है। अब तुम उस विकराल जन्तु के पीछे नहीं जाओगे। मैं जानती हूँ कि तुम उसे एक बार मार चुके हो।"

काडू जो इतना गर्वित था, एक युवती से अपने को मूर्ख बनाया गया देख मानुष की विजय पर हँस उठा। ········· ऊपर चन्द्रमा भी लज्जा से लाल धीरे धीरे मुस्करा रहा था।

आज के प्रतापी मनुष्य-सूर्य की वे भोर की किरणें थीं।

